इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

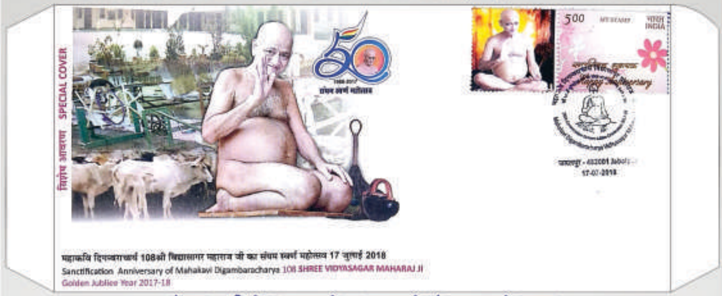

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		नवम्बर 2021	
16	मंगलवार	द्वादशी	रेवती
17	बुधवार	त्रयोदशी	अश्विनी
18	गुरुवार	चतुर्दशी	भरणी
19	शुक्रवार	पूर्णिमा	कृत्तिका
20	शनिवार	प्रतिपदा	रोहिणी दिन/रात
21	रविवार	द्वितीया	रोहिणी
22	सोमवार	तृतीया	मृगशिरा
23	मंगलवार	चतुर्थी	आर्द्रा
24	बुधवार	पंचमी	पुनर्वसु
25	गुरुवार	षष्ठी	पुष्य
26	शुक्रवार	सप्तमी	आश्लेषा
27	शनिवार	अष्टमी	मघा
28	रविवार	नवमी	पूर्वाफाल्गुनी
29	सोमवार	दशमी	उत्तराषाढ
30	मंगलवार	एकादशी	हस्त
		दिसम्बर 2021	
1	बुधवार	द्वादशी	चित्रा
2	गुरुवार	त्रयोदशी	स्वाती
3	शुक्रवार	चतुर्दशी	विशाखा
4	शनिवार	अमावस	अनुराधा
5	रविवार	प्रतिपदा/द्वितीया	ज्येष्ठा-मूल
6	सोमवार	तृतीया	पूर्वाषाढ
7	मंगलवार	चतुर्थी	उत्तराषाढ
8	बुधवार	पंचमी	श्रवण
9	गुरुवार	षष्ठी	धनिष्ठा
10	शुक्रवार	सप्तमी	शतभिषा
11	शनिवार	अष्टमी	पूर्वाभाद्रपद
12	रविवार	नवमी	उत्तराभाद्रपद
13	सोमवार	दशमी	रेवती
14	मंगलवार	एकादशी	अश्विनी
15	बुधवार	द्वादशी	भरणी दिन/रात

तीर्थंकर कल्याणक

16 नवम्बरः भगवान अरनाथ ज्ञान कल्याणक
19 नवम्बरः भगवान संभवनाथ जन्म कल्याणक
29 नवम्बरः भगवान महावीर तप कल्याणक
05 दिसम्बरः भगवान पुष्पदन्त जन्म-तप कल्याणक
13 दिसम्बरः भगवान अरनाथ तप कल्याण
14 दिसम्बरः भगवान मल्लिनाथ जन्म तप कल्याणक
14 दिसम्बरः भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

19 नवम्बरः अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
21 नवम्बरः रोहिणी व्रत
30 नवम्बरः मुक्तावली
06 दिसम्बरः मुक्तावली

सर्वार्थ सिद्धि

16 नवम्बर : 20/15 बजे से 30/45 बजे तक ।
20 नवम्बर : 06/47 बजे से 30/47 बजे तक ।
22 नवम्बर : 06/48 बजे से 10/44 बजे तक ।
25 नवम्बर : 06/50 बजे से 18/50 बजे तक ।
28 नवम्बर : 22/06 बजे से 30/53 बजे तक ।
03 दिसम्बर : 13/45 बजे से 30/56 बजे तक ।
05 दिसम्बर : 07/47 बजे से 28/54 बजे तक ।
12 दिसम्बर : 07/01 बजे से 12/00 बजे तक ।
14 दिसम्बर : 07/03 बजे से 28/40 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः नव.-20,22,25,29 दिसम्बर-1,13
मशीनरी प्रारंभ : नव.-17,24,25, दिस.-2,9,10,13
वाहन खरीदनेः नव.-17,22,24,25 दिस.-2,9,10,13

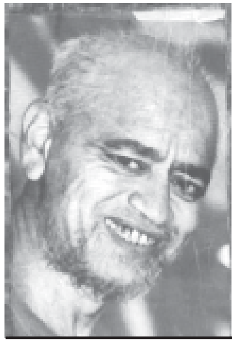

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 272 • नवम्बर 2021
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

• महाकवि आचार्य विद्यासागर महाराज के संस्कृत साहित्य में दार्शनिक मीमांसा 08
• करुणा महल का स्थायी स्तंभः अहिंसा 15
• दीपावली पर्व हमारे अंतस में उम्मीद का दीया जलाता है 17
• प्रशासन एवं प्रबंध में अध्यात्म का अवदान 21
• प्रेम की समाधी 25
• जैन धर्म में दीक्षा डगर कठिन होती है 39
• 24 अक्टूबर 2021को पिच्छि परिवर्तन 41
• वरिष्ठ नागरिकः हर पल की सावधानी 42
• आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्वार 49
• गर्भाशय भ्रंश कारण व नियंत्रण उपाय अपनाकर स्वस्थ्य रहें 56

बाल कहानी

• कालू की सूझ 59

कविता

• हथकरघा से जन्नत 13
• डूबता है आफताब क्या गजल पढ़ूँ 16
• क्या बच पायेंगे 24
• प्यार की मूरत माँ 43
• कुटिया में 48

कहानी

• बदली भाषा 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 19 • आगम दर्शन :24 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28
दुनिया भर की बातें : 29 • इसे भी जानिये: 34 •दिशा बोध : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
वरिष्ठ नागरिक : 42 • हमारे गौरव : 48 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच :63 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 00410501357 5 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, आतंकवाद विरोधी पाठ्यक्रम जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद ने तीन नये पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। जिसका कुछ तबके विरोध कर रहे हैं मेरा सोच यह है कि पाठ्यक्रम तो अन्य विश्वविद्यालय में भी प्रारंभ होना चाहिये क्योंकि इस समय पूरा विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है लोकतांत्रिक देशों को आतंकवाद से संवैधानिक दायरे में निपटने के लिये मशक्कत करनी पड़ रही है आतंक विरोधी पाठ्यक्रम निश्चित तौर पर कुछ न कुछ उपलब्धि देगा यह पाठ्यक्रम स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग के पंचवर्षीय कार्यक्रम के अंतिम वर्ष पांचवे वर्ष में पढ़ाया जायेगा जिससे ऐसे इंजीनियरिंग तैयार होंगे जो आतंकवादी हमलों से निपटने में सक्षम एक आवश्यक पहल का अनावश्यक विरोध हो रहा है।

श्रीमती अर्चना जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, पंजाब के मुख्यमंत्री केप्टन अमरिन्दर सिंह ने मुख्यमंत्री पद से विगत माह स्तीफा दिया क्रिकेट खिलाड़ी नवजीत सिंह सिद्धू के दबाव में आकर आला कमान ने केप्टन अमरिन्दर सिंह को इस्तीफा देने को मजबूर कर दिया जिससे यह सिद्ध हुआ कि काँग्रेस का लोकतंत्र में कोई विश्वास नहीं है। मात्र तुष्टिकरण में विश्वास है। तुष्टीकरण के आधार पर लोकतंत्र की मान्य विवस्थाओं की रक्षा नहीं की जा सकती है तथा पार्टी के अच्छे भले कार्यकर्ता अपमानित अवश्य होगें तुष्टिकरण से सिद्धांतों की राजनीति समाप्त होगी और विकल्पों की राजनीति सिर उठा लेगी जिससे भ्रष्टाचार को खाद पानी मिलेगा और भ्रष्टाचार ही पनपेगा।

अंशुल पारासर, लटेरी

• सम्पादक महोदय, जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर शीर्षक से वरिष्ठ आई.ए.एस अधिकारी सुरेश जैन ने लेख लिखकर पाठकों को चालीस वर्ष पुरानी स्मृतियों से जोड़ दिया तथा आचार्य श्री का नैनागिर में भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण भूमि से आचार्य श्री की साधना का गहरा संबंध रहा है यह तथ्य नई पीढ़ी के लिये जानकारी में लाना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है आचार्य श्री के संस्मरणों की लहर ही दिल दिमाग में आनन्द पैदा कर देती है। आचार्य श्री के ऐसे अनेक संस्मरण यदि संस्कार सागर में प्रकाशित होते हैं तो पाठकों की रुचि अत्याधिक बढ़ जाती है और संस्कार सागर की पहल दृष्टिगोचर हो जाती है।

नवलचंद जैन, मुंबई

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अक्टूबर अंक में मोबाईल से दूर ही रखना संस्कार गीत को पढ़ा गीत पढ़कर एक अलग ही अनुभूति हुई लगा सचमुच में माता पिता के लिये गहरी प्रेरणा दे दी है आज मोबाईल जहां उपयोगी सिद्ध होता है वही मोबाईल खतरनाक सिद्ध हो रहा है। मोबाईल के माध्यम से जहाँ ऑनलाईन शिक्षा चल रही है यह ऑनलाईन शिक्षा बच्चों के लिये स्नवायिक विकार एवं मनोविकार पैदा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऑफलाइन शिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा में अन्तर यह है कि ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी में आत्मीय संबंध जुड़ता है। जबकि ऑनलाइन शिक्षा में आत्मीय संबंध नहीं जुड़ता है। अतः मोबाईल से बच्चों को दूर रखकर उनके लिये मोटापे जैसी बीमारी से बचाया जा सकता है। संस्कार गीत की प्रेरणा गहराई तक अपना प्रभाव छोड़ रही है। यह गीत सामायिक समस्या के लिये पर्याप्त है।

आशीष जैन, भोपाल

भक्ति तरंग

राग-सोरठ

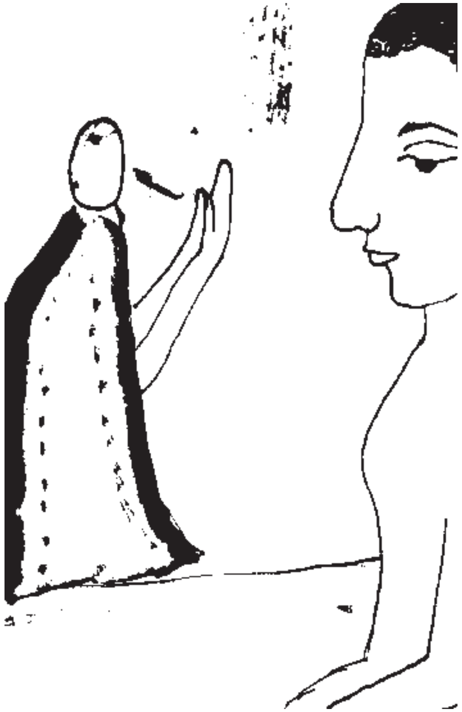

सुनि ठगनी माया,
तैं सब जग ठाया।
तुझ विश्वास किया जिन तेरा,
सो मूरब पिछताया॥
आपा तनक दिखाया बीज ज्यों,
मूढमती ललचाया।
करि मद अंद्य धर्म हर लीनौं,
अन्त नश्क पहुंचाया॥1॥ सुनि॥
केते कंत किये तें कुलटा
तो भी मन न अघाया।
किसहीसौं नहिं प्रीति निबाही,
वह तजि और लुभाया॥2॥ सुनि॥
'भूधर' छलत फिरै यह सबकों,
भौंई करि जग पाया।
जो इस ठगनीकों ठग बैठे,
मैं तिसको सिर नाया॥3॥ सुनि॥

हे मानव, सुनो, यह माया (धन) ठगनी हैं, इसने सारे जगत को ठग लिया है, जिस किसी ने भी इस पर विश्वास किया, वह मूरख बनकर पछताया है। बिजली सी चमक को देखकर जो मूर्ख लालच में आ गया, उसको मदांध कर इसने धर्मच्युत कर दिया और फिर अंत में इसे नरक में पहुँचा दिया। इस माया ने कितने लोगों को अपना स्वामी बनाया किंतु फिर भी इसका मन नहीं भरा। इसने किसी से भी अपनी प्रीति नहीं निभाई, यह सदैव एक को छोड़कर दूसरे को लुभाती रही हैं।

भूधरदास कहते हैं कि माया सबको छलती फिरती हैं, जिसने इस पर विश्वास किया उसी को यह ठगती रही है, सारे जगत को भौंदू बना रही है। जिसने इस ठगिनी माया को जीत लिया हैं मैं उसे नमन करता हूँ।

संस्कार प्रवाह

अर्ध शतक के साधक आचार्य श्री विद्यासागर

तीर्थंकर महावीर की आचार्य परम्परा में अनेक महान सारस्वत श्रुतधर स्थिति पालक और प्रभावक आचार्य हुये हैं किन्तु बीसबी इक्कीसवी सदी के इतिहास में दूर दृष्टा युग प्रवर्तक उदात्य चिंतक आत्मानुशासी साहित्यकार सकारात्मक चिंतन के पुरोधा आचार्य विद्यासागर की तुलना अभी तक संभव नहीं है जिनके पथ पर चलने वाले एक सौ तीस दिगम्बर मुनि 172 आर्यिकायें 57 ऐलक, 99 क्षुल्लक और तीन क्षुल्लिकायें कुल 461 दीक्षायें लेकर मोक्षमार्ग पर अग्रसर हुये हैं। इन चेतन कृतियों के साथ पूज्य श्री ने पूर्व आचार्यों के 25 महान ग्रंथों का पद्यानुवाद करके एक मानदण्ड स्थापित किया है तथा सात संस्कृत शतक और 12 हिन्दी शतकों का सृजन करके सरस्वती माँ की अनूठी सेवा की है एवं चार काव्यों की रचना करके माँ भारती को गद-गद कर दिया है साथ ही पन्द्रह सो के लगभग हाइकू की रचना करके भारतीय संस्कृति का गौरव सवंर्धित किया है। लगभग 50 हजार किलोमीटर की यात्रा से महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश बिहार, बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड और गुजरात दस प्रांतों की यात्रा करके भारत की अखण्डता को प्रतिबिम्बित किया है।

आचार्य श्री ने अपनी ओजस्वी स्याद्वादमय वाणी से भारतीय शिक्षा पद्धति को लागू कराने भारतीय भाषा को व्यवहार में लाने इंडिया नहीं भारत बोलो जैसे आन्दोलन को निर्देशित किया है तथा नौकरी नहीं व्यवसाय करो चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा हो स्वरोजगार संवर्धित हो बैंको के भ्रमजाल को समझो एवं उनसे खुद बचो और ओरो को बचाओं जैसे सूत्र वाक्यों से राष्ट्रीय चेतना का अनूठा स्वर गुंजित किया है खेतीवाड़ी को श्रेष्ठ बताकर हथकरघा के माध्यम से युवा वर्ग को स्वालम्बी बनाते हुये भारतीय प्रतिभाओं को पलायन से रोका है। तथा जीवदया के क्षेत्र में मांस निर्यात को देश पर कलंक बताते हुये गौशाला को प्रोत्साहित करते हुये अपने उपदेश से सहस्त्र गौशालायें संचालित कराई। तथा गोदाम नहीं गौधाम बनवायें एवं लगभग बारह नगरों महानगरों में तथा पांच तीर्थो पर पाषाण युक्त कलापूर्ण मंदिरों का निर्माण कराके तीर्थ संवर्धन और संरक्षण की दिशा में आप सशक्त बने। नारी शिक्षा की दृष्टि से प्रतिभास्थली शिक्षण केन्द्र लगभग पांच नगरों में संचालित है जिनमें हजारों बालिकायें संस्कार पूर्ण शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। जबलपुर, डोंगरगढ़, रामटेक, ललितपुर, इंदौर प्रमुख हैं आयुर्वेद चिकित्सालय एवं (अनुसंधान) विद्यापीठ पूर्णायु जबलपुर भाग्योदय सागर जैसे विशाल चिकित्सा केन्द्र आचार्य श्री की प्रेरणा का परिणाम है। भारत की नीति अहिंसा सत्य पर आधारित बनाने के लिये भ्रष्टाचार मुक्त सुशासन प्रशासन स्थापित करने की दृष्टि से भारत वर्षीय दिगम्बर जैन प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान जबलपुर एवं अनुशासन प्रशासनिक प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल दिल्ली की स्थापना आचार्य श्री के राष्ट्र भक्ति का परिणाम है। मूकमाटी जैसे उत्कृष्ट साहित्यिक महाकाव्य रचकर आचार्य श्री ने हिन्दी जगत की विद्युत मण्डली को चकित कर दिया प्रस्तुत महाकाव्य का अंग्रेजी कन्नड़ गुजराती बंगला, एवं मराठी भाषा में अनुवाद हो चुका है तथा तीन सौ से अधिक देश विदेश के विद्वानों ने समालोचना लिखकर मूकमाटी को उत्कृष्ट महाकाव्य सिद्ध किया है तथा भारतीय ज्ञानपीठ से मूकमाटी मीमांसा तीन भागों में प्रकाशित हो चुका है।

अर्धशतक के दीर्घकाल में सामाजिक आध्यात्मिक राष्ट्रीय प्रभावना करके जिनमापदण्डों को स्थापित किया है। वे अनुकरणीय एवं अविस्मरणीय बन चुके हैं ऐसे आचार्य विद्यासागर जी महाराज का 50वाँ आचार्य पदारोहण दिवस मनाना संपूर्ण श्रमण संस्कृति के लिये एवं भारत देश जनसंत का एक उत्कृष्ट अभिवंदन होगा।

महाकवि आचार्य विद्यासागर महाराज के संस्कृत साहित्य में दार्शनिक मीमांसा

✻ डॉ. ब्र. अनिल कुमार जैन, जयपुर ✻

भारतीय चिन्तन मूलतः आध्यात्मिक रहा है। फलतः भारतीय प्रज्ञा वे काव्य को मात्र आनन्द का साधन न मानकर परम पुरुषार्थ मुक्ति का भीसाधन स्वीकार किया है। भारतीय दृष्टि पाश्चात्य विचारकों के समान काव्य का प्रयोजन लौकिक आनन्द प्रेम ही नहीं अपितु पारमार्थिक आनन्द देव मानता है। जैन धर्म निवृत्ति प्रधान धर्म है। इसमें जो कुछ प्रवृत्ति परक कथन दृष्टिगोचन होता हे, वह भी निवृत्ति का ही सहायक हैं अशुभ से प्रयत्न पूर्वक निवृत्ति तथा शुभ से स्वतः निवृत्ति ही जैन धर्म का लक्ष्य है। पूर्ण निवृत्ति या मुक्ति परम सुख स्वरूप है, अतः जैन धर्म प्राणी मात्र को मुक्ति प्राप्ति का उपदेश देता है।

संस्कृत भाषा जिस भारतीय संस्कृति की संवाहक रही है, भारत की वह संस्कृति अनेक सम्प्रदायों की देन से समृद्ध हुई है। संस्कृत साहित्य का विशाल भण्डार, भारत के तीन प्रमुख दर्शनों जैन, बौद्ध, और वैदिक मनीषियों की सेवा से समृद्ध रहा है। अतः भारतीय संस्कृति के सर्वांगीण ज्ञान के लिये इन तीनों धाराओं के साहित्य का समीचीन मूल्यांकन आवश्यक है। एक विशिष्ट भारतीय दशवें रूप में जैन दर्शन ने संस्कृत की महत्त्वपूर्ण सेवा की है। जैन वाङ्मय में साधुवर्ग का विशेष अवदान रहा है। उनके द्वारा लिखे वाङ्मय का समाज पर प्रभाव भी पड़ा है। प्रस्तुत आलेख में महाकवि आचार्य विद्यासागर महाराज के संस्कृत शतकों में दार्शनिक मीमांसका को रेखांकित करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर वे संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में विशाल साहित्य का सृजन किया है, जिसमें साहित्य की अनेक विधायें उपलब्ध है। पू. आचार्य श्री के साहित्य में दार्शनिक सिद्धांतों की मीमांसा सर्वत्र उपलब्ध होती है। आचार्य श्री ने संस्कृत में शारदास्तुति के अतिरिक्त 1. श्रमणशतक 2. भावनाशतक 3. निरंजनशतक 4. परीषह शतक 5. सुनीति शतक 6. चैतन्यचन्द्रोदय शतक नामक छह संस्कृत शतक काव्यों की रचना की है। प्रत्येक शतक में नाम के अनुसार पर्याप्त विषय सामग्री को उपस्थित किया गया है।

अनेकान्त दृष्टिः- जैनदर्शन का प्राण अनेकान्त है अनेकान्त दृष्टि चिन्तन विषयक समता का ही अपर नाम है। अनेकान्त वस्तु वा **अनन्तधर्मात्मक वस्तु**। वस्तु अनेक धर्मों को लिये हुये है अनेक अन्तधर्माः यस्मिक् तत् अनेकान्तः अर्थात् अनेक धर्म जिसमें समाविष्ट हैं ऐसी अनेकान्तात्मक वस्तु है। उसे जाननें के लिये अनेकान्त समर्थ है। इसलिये उस ज्ञान के प्रत्येक धर्म का आंशिक ज्ञान तो हो सकता है। किन्तु सम्पूर्ण ज्ञान नहीं। वस्तु नित्य है, अनित्य है, ध्रुव हैं, अध्रुव है एक है अनेक है। इस प्रकार एक-एक धर्म की प्ररूपणा करते हैं। भगवान ने केवलज्ञान में जो कुछ जाना देखा है वह सभी प्ररूपित नहीं है वह तो अनन्त है। श्रुत को अनंत नहीं माना, अनन्त का कारण, है अर्थात् अनन्त धर्मात्मकं वस्तु का विवेचन श्रुतज्ञान के माध्यम से किया जाता है।

जितने शब्द भेद है जितने विकल्प हैं उतने ही श्रुत है श्रुत अनन्त नहीं असंख्यात है। यदि हमे श्रुत ज्ञान नहीं होगा तो केवलज्ञान प्राप्त नहीं होगा। इसलिये वाद-विवाद से परे निर्विवाद होने के लिये केवलज्ञान की प्राप्ति के लिये इसका अवलंबन किया जाता है।

वस्तु स्वरूप को अनेकान्त दृष्टि से अवलोकन नहीं करने वाले व्यक्ति स्व-पर के विधायक होते है। आचार्य विद्यासागर जी ने-

सुनीति शतक में कहा है-

ज्ञानेन वृद्धों यदि पक्षपाती, जिनान्पद्यः स द्वयलोकशून्यः।

पयः पवित्रं परमार्थिपेयं लावण्ययोगात् किमु किञ्चिदस्ति।। सुनीतीशतक श्लोक 5

अर्थात् ज्ञान वृद्ध मनुष्य यदि पक्षपाति है-एकान्वादी है तो वह निज पर का घातक है और उभयलोक से भ्रष्ट होता है। पवित्र दूध परमार्थी जनों के द्वारा पीने योग्य होता है पर नमक के मिलने पर कुछ रहता है। अर्थात् नहीं अमेय हो जाता है।

वस्तु विषयक यथार्थ दृष्टिकोण आवश्यक है किसी के लिये निर्मल दृष्टि के आलोक एवं भूमिका में वस्तु अमृत रूप भी हो सकती है तथा दृष्टि की विषमता एवं पात्रता के अभाव में वही वस्तुविष भी हो सकती है। यथा-

अध्यात्मशास्त्रं शमिने सुधास्यात् सङ्गात्मनेऽस्मिन् विषयं विषंता मीनस्य नीरं खलु जीवनं हा, मृत्युः परस्मैविदितं न केन।। सुनीति शतक 15

अर्थात् अध्यात्मक ग्रन्थ मनुष्यों के लिये अमृतरूप होता है किन्तु वह इन परिग्रह सहित गृहस्थों के लिये तीव्र विष रूप हो जाता है। मछली के लिये जल निश्चित ही जीवनदायी होता है किन्तु खेद है कि अन्य जनों को वह नीर मरण के लिये कारण होता है। यह किसके द्वारा जाना नहीं जाता है अर्थात् सभी के द्वारा जाना जाता है।

वस्तु के विषय में सम्यग्दृष्टित्व का भाव आवश्यक है। जैन दर्शन में सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः कहा है अर्थात् सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्र की एकता को मोक्षमार्ग कहा गया है। सम्यकृदर्शन से ही ज्ञान और चारित्र में समीचीनता आती है। आचार्य श्री विद्यासागर जी ने कहा है-

यतो जिनपददर्शनं तदस्तिपह दर्शनयुद्धं दर्शनम्।

दर्शयति सद्दर्शन जगति जयतु जैनं दर्शनम्।।

अर्थात् दर्पण के समान शुद्ध निर्मल सम्यग्दर्शन थे जिसमें तीर्थंकर पद का दर्शन होता है। इस प्रकार जैन दर्शन जैन शास्त्र सम्यग्दर्शन को दिखाता है। जगत् में वह सम्यग्दर्शन जयवन्त रहे।

यद्यपि सम्यग्दर्शन-ज्ञान एवं चारित्र इन तीनों का महत्त्व है तीनों में से किसी एक के अभाव में मोक्ष की प्राप्ति से भव नही है फिर भी यहां पर सम्यग्दर्शन का प्रकरण होने से उसी का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है जैसा की आचार्य उमास्वामी ने तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है **अर्पिता नर्पित सिद्धेः 15/32** अर्थात् वस्तु का कथन मुख्यता और गौणता की अपेक्षा से किया जाता है।

अनेकान्त दृष्टि से ही विश्व में शान्ति का साम्राज्व संभव है श्री श्रेयांसनाथ भगवान के स्तवन में आचार्य श्री विद्यासागर जी कहा है-

अनेकान्त की कान्ति से, दटा तिमिर एकान्त।

नितान्त हर्षित कर दिया, क्लान्त विश्व को शान्त।।

स्याद्वाद- स्याद्वाद भाषा की वह निर्दोष प्रणाली है, जो वस्तु तत्त्व का सम्यक् प्रतिपादन करती है। अनेकान्त दृष्टि ज्ञानरूप है, अतः वचन रूप स्याद्वाद से उसका भेद स्पष्ट है। आचार्य अकलंक देव ने स्याद्वाद को परिभाषित करते हुये कहा है- **अनेकानतात्मकार्थकवाकानं स्याद्वादः।** समणसुत्त में गाथा का हिन्दी पद्यानुवाद करते हुये आचार्य श्री विद्यासागर ने लिखा है -

एकान्त का नियति का करता निषेध, है सिद्ध शाश्वत निपाततया अवेद।

स्यात् शब्द है वह जिनागम में सुहाता, सापेक्ष सिद्ध करता सबको सुहाता।।

संसार में जो विचार वैषम्य है उसका कारण दृष्टि की संकीर्णता है। आचार्य श्री कहते है कि विचारों की विषमता मिटाना चाहते हो तो दृष्टि को व्यापक बनाना होगा। सभी के विचार सुनकर अनेकान्त के आलोक में पदार्थ का कथन करता ही समझदारी है समणसुत्तं के हिन्दी पद्यानुवाद में आचार्य श्री ने लिखा है -

मेटेवाद-विवाद को निर्विवाद स्याद्वाद।

सनवादों को खुश करें पुनि-पुनि कर संवाद।।

अनेकान्त को समझने के लिये नय दृष्टि का ज्ञान आवश्यक है आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने लिखा है-

अनेकान्तो ऽप्यनेकान्तः प्रमाणनयसाधनः।

अनेकान्त प्रमाणात् ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात्।। स्वयंभूस्तोत्र पद्य 103

अर्थात् अनेकान्त भी प्रमाण और नय साधनों की अपेक्षा से अनेकान्त रूप हैं।

नय दृष्टि के महत्व को बताते हुये आचार्य श्री विद्यासागर जी ने कहा है-

नयनयुग्मनिभेन नवद्वयम् समयनिश्चयहेतु न पद्वयम्।

कलसतीति तदाशयवेदका निजमयाम इव व्यपवेदकाः।।

अर्थात् हे जिन! आपके निश्चय नय और व्यवहार नय नेत्रयुगल के समान समय-आगम, पदार्थ व आत्मपदार्थ का निश्चय निर्णय कराने में हेतु रूप को इस तरह प्रकट करते हैं। जिस कारण से हम सब उस अभिभाव के ज्ञाता हुये हैं और नष्ट हुये वेद की तरह आत्मा के अनुभव को प्राप्त हुये हैं। (निरंजनशतक पद्य 6)

द्रव्यार्थिक नय से सभी प्राणी समान हैं। इस बात को परीषह शतकम् में लिखा है-

जगति सत्त्वदामः सवालश्चलः परिमलो विणलः सवालोचलः।

समगुणैर्भरितो मत आर्य ते गुरुरयं सं लघुर्न्ववघार्यते।। परीषह जय शतक पद्य 80

हे आर्य आपको मत में त्रस, स्थावर, सुगन्धित, कलाहीन और कलासहित सभी प्राणी समूह समान गुणों से परिपूर्ण हैं, अतः यह गुरु है और वह लघु है यह कैसे निश्चय किया जाये।

दोनों नयों की उपयोगिता बताते हुये आचार्य श्री ने सुनीति शतक में लिखा है -

जिनागमे ऽन्योन्यविरुद्धधर्मा, नया न मानायत दंशतोऽतः।

परस्परं तत् प्रतिकूलमास्तां कूलद्वयं तै सरितेऽनुकूलम्।। सुनीति शतक 56

अर्थात् जैन सिद्धांत में परस्पर विरूद्ध नय सम्मान के लिये नहीं माने गये हैं, क्योंकि वे वस्तु के एक अंश को ग्रहण करते हैं परन्तु वस्तु का पूर्ण स्वरूप कहने के लिये दोनों आवश्यक हैं जैसे नदी के दो तट परस्पर विरूद्ध रहते हुये भी नदी के लिये अनुकूल होते हैं।

द्रव्य गुण-पर्याय को परस्पर सापेक्ष बताते हुये कहा है कि -

त्रैकालिका द्रव्यगुण विशुद्धाः पर्याय एवाशुचिता गतस्तु।

यददर्शनज्ञानगुणाँ विशुद्धाः वित्थं वदन्तोनयमार्गदूराः।। चैतन्यचन्द्रोदयशतक 5

अर्थात् लोक के समस्त द्रव्य और अनेक गुण तीनों काल में शुद्ध हैं। किन्तु पर्याय में ही अशुचिता होती हैं क्योंकि दर्शन और ज्ञान गुण तो त्रैकालिक शुद्ध हैं। इस प्रकार कहने वाले नयात्रित तत्त्वज्ञान से दूर हैं ऐसा ग्रंथकार का वचन है।

ईश्वर सृष्टिकर्तृत्व का निषेध-

चराचराणां जगतोऽपि कर्त्ता दुर्त्तापि काले प्रतिपालकोऽपि।

स ईश्वरोऽस्तीति वयं तदंशा मति दधत् दुःखि जगत्सदेदम्।। चैतन्यचन्द्रोदयशतक 22

अर्थात्- जो चर- चलनशील द्विइन्द्रियादि त्रस जीवों का अचर अचलनशील पृथ्वी आदि स्थावर जीवों का औरं जगत् का करने वाला हैं तथा जगत का प्रेमपूर्वक पालन करने वाला भी है एवं अन्त समय आने पर उस जगत का नाश करने वाला भी है ऐसा वह ईश्वर है और हम सब उसी ईश्वर के अंश है इस प्रकार की बुद्धि को धारण करता हुआ यह संसार निरन्तर दुःखी है।

इसी प्रकार ईश्वर को सृष्टि का कर्ता मानने पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव हो जायेगा, पुण्य-पाप आदि की कोई भी व्यवस्था नहीं बनेगी।

सर्वज्ञता- जैनदर्शन में वक्तुः प्रामाग्याद्वचनं प्रामाण्यम् अर्थात् वक्ता की प्रामाणिकता से वचनों की प्रामाणिकता मानी गई है। अर्थकर्ता तीर्थंकर होते हैं और गणधर शब्दों में गुम्फित कर आप्त पुरुषों की वाणी को जन-जन तक पहुँचाते हैं। भगवान जिनेन्द्र की स्तुति में आचार्य विद्यासागर महाराज ने लिखा है-

समयते निखिलं व्यवहारतः स्वसमये नियतं भवहारत।

सहजवृत्तिरियं हिसदा सतां, प्रवहतां जगतां न खदासताम्।। निरजंनशतकम् 52

अर्थात्-हे संसार का परित्याग करने वाले भगवन् आप निश्चय नय से निजात्मा में लीन हैं और व्यवहारनय से समस्त लोकालोक को जानते हैं। क्योंकि साधुजनों की स्वाभाविक परिणति सदा ही रहती है, इंद्रियों की दासदा को धारण करने वाले असाधुजनोंकी नहीं।

भगवान् जिनेन्द्र ही आप्त पुरुष हैं, क्योंकि उन्होंने निरावरण ज्ञान को प्रकट कर लिया है। राग, द्वेष, मोह पर विजय प्राप्त कर आत्मजयी बन गये हैं। भावना शतक में लिखा है -

वर्तमान भूत-अतीत और भविष्य सम्बन्धी द्रव्यगत पर्यायें बाधा के बिना जिनकी केवलज्ञान बुद्धि को प्राप्त हुई है।

जिनेश्वर जो निज स्वभाव को प्राप्त कर चुके हैं और गणधर देवों के द्वारा जो स्तुत हैं, वे जिनेन्द्र जयवन्त हो।

स्तुता यतिपतिनागता वस्तुगताश्च दशा गतानागताः ।
निजं जयन्तु ना गता, यद्धियं वा धां विना गताः ।। भावनाशतक 59

दृष्टि की संकीर्णता के कारण मन्दबुद्धि वाले लोग भगवान के केवलज्ञान में संदेह करते हैं। उनके लिये आचार्य श्री ने निरंजनशतक में कहा है-

असि शुचिश्व शशीव सुकेवली गमित इत्यपि नौ कुघिणाबली।
असित एव शशी कुदृशा सितः सवय गथपि यः सुदृशा शितः ।। निरंजनशतक 25

अर्थात् हे कृपालु जिनेन्द्र आप चन्द्रमा के समान उज्जवल और उत्तम केवलज्ञान से युक्त है, तथापि कुबुद्धिजन आपको वैसा नहीं मानते। वह आपको अबली-बलहीन मानते हैं। उचित ही है, क्योंकि विकृत नेत्रवाला-पीलिक रोग वाला मनुष्य चन्द्रमा को असित पीला जानता है, जबकि निर्विकार नेत्र वाला मनुष्य चन्द्रमा को सित-शुक्ल भी जानता है।

भगवान् जिनेन्द्र की वाणी जिनवाणी कहलाती है जो जिनवाणी का अभ्यास करते हैं वह संसार से पार हो जाता है इसी बात को पुष्ट करते हुये आचार्य श्री विद्यासागर ने कहा है।-

आपके प्रभाव से सामान्य मनुष्य जिन हो जाते है भय से मुक्त हो जाते हैं और रागादिक विभाव से छूट जाते है। अतः दुःख का विनाश करने वाले तुझमें लीन होता हूँ। जिनागम को नहीं जानने वाला प्राणी निश्चय से नौ निधियों के रहने पर भी निर्धनता के दुःख का अनुभव करता हुआ निर्मल ज्ञानरूपी धन के सुख को इसी कारण प्राप्त नहीं कर सका है। यदि मनुष्य आदर से जिनागम का आश्रय से साम्यभाव को प्राप्त हो तो वह भय छोड़कर ज्ञान के साथ तीर्थंकर पद को प्राप्त हो सकता है, वह निश्चय है। (भावनाशतक पद्य 80-82)

इस प्रकार जिनके वचन युक्ति-शास्त्र से अविरोधी हैं, जो राग-द्वेष और ज्ञानावरणादि से रहित हैं वह आप्त हैं। और जो राग-द्वेष आदि दोषों से रहित आप्त है वहीं सर्वज्ञ है।

निमित्त उपादान- जो कारण स्वयं कार्यरूप में परिणत हो जाये वह उपादान कारण है, और जो स्वयं कार्यरूप परिणत न हो, पर उस परिणमन में सहायता दे वह निमित्त या सहकारी कारण कहा जाता है घट में मिट्टी उपादान कारण है, क्योंकि वह स्वयं घड़ा बनती हैं कुंभकार निमित्त हैं क्योंकि वह स्वयं घड़ा तो नहीं बनता पर घड़ा बनने में सहायता देता है। प्रत्येक सत् या द्रव्य प्रतिक्षण अपनी पूर्व पर्याय को छोड़कर उत्तर पर्याय को धारण करते है, यह एक निरपवाद नियम है सभी प्रतिक्षण अपनी धारा में परिवर्तित होकर सदृशयाविसदृश अवस्थाओं को प्राप्त होते हैं। उस परिवर्तन धारा में सामग्री उपस्थित होती है या कराई जाती है उसके बलाबल से परिर्वतन में होने वाला प्रभाव तरतमभाव प्राप्त करता है। धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य और शुद्ध जीवद्रव्य के परिणमन सदा एक से होते हैं, उनमें बाहरी प्रभाव नहीं पड़ता, इनमें वैभाविक शक्ति नहीं हैं। शुद्ध जीव में वैभाविक शक्ति का सदा स्वाभाविक परिणमन होता है। इनकी उपादान परम्परा सुनिश्चित है। और इन पर बाह्य निमित्त का कोई प्रभाव नहीं होता। ये सभी द्रव्य

निष्क्रिय हैं । शुद्ध जीव में उत्पाद व्यय ध्रौत्वात्मक निज स्वभाव के कारण अगुरुलघुगुण के सद्भाव से हमेशा समान परिणमन होता रहता है। संसारी जीव और पुद्गल द्रव्य में वैभाविक शक्ति के कारण जिस प्रकार की सामग्री जिस समय उपस्थित होती है, उसकी शक्ति की तारतमता से वैसा-वैसा उपादान बदलता जाता है। यद्यपि निमित्त भूत सामग्री किसी सर्वथा असद्भूत परिणमन को उस द्रव्य में नही लाती किन्तु उस द्रव्य जो शक्यसंभाव्य परिणमन है, उन्हीं में से उस पर्याय से होने वाला अमुक परिणमन उत्पन्न हो जाता है। कोई भी निमित्त साथ में नही रहता। आचार्य श्री ने कहा है-

सिद्धे स्वत्रर्वे सति कारणानि बाहेवतराणीति तृणीभवन्ति।
सोपानमालापि विमोचिता सा, प्रारोहितात्मनोन्नतः सौधकेव ।। सुनीतिशतक 79

अर्थात् अपना कार्य सिद्ध हो जाने पर बाध्य और अंतरंग दोनों प्रकार के कारण तृण के समान तुच्छ हो जाते हैं । जैसे अपने ऊँचे महल पर चढ़ चुकने वाले पुरुष के द्वारा नीड़ियों की पंक्ति छोड़ दी जाती है। आचार्य श्री ने निमित्त-उपादान के विषय में और भी कहा है-

1. वस्तु द्रव्य का समानस्वभाव से अन्य रूप से होना विभाव है। यह विभाव रूप से द्रव्य के परिणमन में निमित्त रूप से पर का प्रभाव कारण है। (चैतन्यचन्द्रोदय 24)

2. नैमित्त- नैमित्तिक सम्बन्ध वृक्ष और बीज के समान प्रवाह धर्म ताका है तभी तो अनादिकाल से योग और मोह के कारण इस चेतन आत्मा का ज्ञानदर्शन स्वभाव भी वैभाविक हुआ है।

कविता

हथकरघा से जन्नत

ऐलक : सिद्धांतसागर जी

तालीम हो कि ऐसी कुछ ज्ञान भी मिले
आजीविका मिले हनुर दाम भी मिले
हथरकरघा एक सच्ची स्वाभिमान की डगर
अपराध मुक्ति साधना की नेक है पहल
बापू का फिर से देश में पैगाम भी मिले
ताने बाने धागे में रहमत छुपी हुई
देशभक्ति भावना इसमें बसी हुई
अपनी कमाई मेहनत पर कुछ नाम भी मिले
विद्यासागर गुरु ने हमें बोध दिया हे
सारे गमों को मेंटने का शोध किया है
हथकरघा से जन्नत मिलें शिव धाम भी मिले

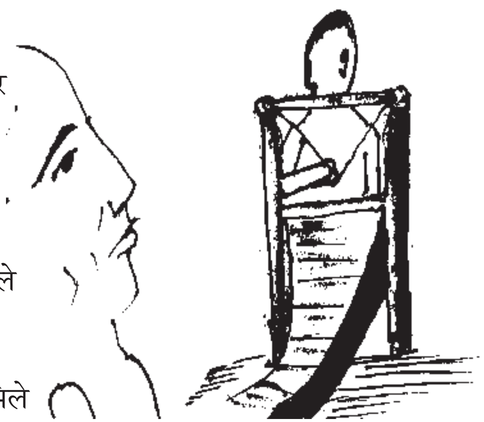

संयम स्वास्थ्य योग

पाचन अंग सुधारक योगासन

सर्वांगासनः पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुये हाथों का सहारा पीठ को देवें। धीरे-धीरे सम्पूर्ण शरीर को सीधा कर दे। ठुड्डी कंठ से लगा दें । यह शीर्सासन का पूरक आसन है।

लाभः विपरीतकरणी के समस्त लाभ इस आसन में प्राप्त होते है। जो शीर्षासन नहीं कर पाते उनके लिये यह आसन श्रेष्ठ है।

एक पाद उत्तानासनः पीठ के बल लेट जायें। दोनों पैरों को पास-पास रखें। श्वांस भरते हुये धीरे-धीरे एक पैर को ऊपर उठा लें, श्वास रोक लें। पैर जमीन से 6-7 इंच ऊपर उठायें। नहीं रूक पाने पर धीरे धीरे पैरों को नीचे ले आयें। इसी तरह दोनों पैरों से द्विपाद उत्तानासन किया जा सकता है।

लाभः इसके अभ्यास से पाचन संस्थान व रीढ़ का अन्तिम भाग स्वस्थ होता है।

रानी आसनः पीठ के बल लेट जायें । दोनों पैरों को घुटने से मोड़ ले व अपने शरीर की क्षमतानुसार पंजों को नितम्ब के पास ले आये। दोनों पैर के पंजे आपस में मिले रहे। दोंनो घुटनों को दायी तरफ मोड़े। सिर को बायी दिशा में रखे। इसी तरह घुटने को बायी तरफ मोड़े, सिर दायी दिशा में रखे। इस प्रकार लगातार इस दिशा में रहेगा। इस स्थिति में श्वांस छोड़ते हुये घुटने नीचे व श्वांस भरते हुये घुटने ऊपर की ओर आयेंगे। इसकी 15-20 आवृत्ति करें।

लाभः इस आसन को करने से पाचन अंगो को शक्ति मिलती हैं कमर दर्द में लाभ होता है। एवं रीढ़ स्वस्थ रहती है।

राजा आसनः पीठ के बल लेट जायें। दोनों पैरों को घुटने से मोड़कर पंजे व घुटने मिलाकर रखें व पंजों को हवा में करीब एक फीट की ऊँचाई तक उठा लें। अब दोनों को दायी तरफ मोड़े, सिर विपरीत दिशा में रखें। इस प्रकार घुटने को बायीं तरफ मोड़े सिर दायी तरफ मोड़े श्वास छोड़ते हुये घुटने जमीन की तरफ मोड़े व श्वास भरते हुये ऊपर की ओर उठायें। इसकी भी 15-20 आवृत्ति करें।

लाभः इस आसन को करने से पाचन अंगों को शक्ति मिलती है। कमर दर्द में लाभ होता है। एवं रीढ़ स्वस्थ रहती है।

करुणा महल का स्थायी स्तंभः अहिंसा

✻ अजित जैन जलज, राष्ट्रीय प्रचारक, करूणा अंतराष्ट्रीय टीकमगढ़ ✻

करुणा भाव के चलते ही क्रूर प्राणी भी अपने बच्चों का पालन पोषण कर पाते हैं, करुणा के ही कारण पशु पक्षियों में प्रेमभाव पनपता है। करुणा की गहनता के चलते ही पशु पक्षु भी मनुष्यों को बचाने में जुट जाते हैं और इसी करूणा की पराकाष्ठा के चलते एक गोमाता अनायास कुचले गये बालक को मौत पर प्रायश्चित कर अपने प्राण त्याग देती है।

यह सब सहज करुणा भाव है लेकिन मानवीय करुणा इसे बढ़कर एक कठिन जीवन साधना है। मानवीय संवदेना करुणा को एक मनोहर महल मानते हुये इसकी रचना को समझने का प्रयास करते हैं।

1. स्वागत द्वार : सत्वेषु मैत्रीः- सब जीवों से दोस्ती भाव मानवीय करूणा महल का पहला स्थायी स्तंभ है। यह एक शुभ शुरुआत है। एक माँसाहारी भी पशु पक्षियों से प्रेम एवं दोस्ती का भाव रख सकता है। लेकिन कोई भी सच्चा दोस्त, अपने मित्रों को खा नहीं सकता है। इसलिये ऐसे सभी लोग बहुत जल्दी शाकाहारी हो ही जाते है।

मोहनदास की भी शुरुआत यहीं से हुई थी। उन्हें माँस से विशेष बुराई नहीं थी परंतु मां के वचनों को निभाने के लिये वह लंदन में शाकाहारी भोजन पाने के लिये भटकते रहे और आखिरकारी कुछ ही समय में स्वयं शाकाहार के प्रमुख प्रचारक बन गये।

इसी प्रकार क्रोंच पक्षी के शिकार होने से आहत प्रेमी युगल की चीख ने महर्षि बाल्मीकी को करुणा का आदि कवि बनाकर रामायण जैसी कालजयी कृति की रचना कराई थी।

दूसरा स्तंभः गुणिषुः प्रमोदं- बहुत से लोग पहले स्तंभ में ही अटक कर रह जाते हैं और मानवीय करुणा के महल को धूल धूसरित कर देते हैं। हिटलर जैसे शाकाहारी तानाशाह ने दुनियां भर में लाखों लोगों को मरवा डाला था अतएव अकेले शाकाहारी होने का गुण मानवीयता नहीं ला सकता है उसके लिये गुणीजनों के प्रति प्रसन्नता, सम्मान का भाव रखना आवश्यक है।

गुण ग्राहकता का भाव ही व्यक्ति को उन्नति के पथ पर पहुँचाता है। माता पिता एवं गुरुजनों के प्रति विनम्रता के भाव से ही व्यक्ति गुणवान एवं सफल बनता है। इसी गुणग्राहकता के चलते ही दुनिया भर के लोग अपने आराध्य देवता/भगवान को पूजते हैं ।

दीनदयाल, कृपालु भज मन- स्वागत द्वार के दो स्तंभों के पार करने पर मानवीय करुणा के राजप्रसाद के दर्शन होते हैं जिसमें स्तम्भ दीन दुखी मनुष्यों के प्रति सहानुभूति का भाव भरा रहता है। सभी महापुरुष इसलिये करूणा निधान कहलाते हैं क्योंकि सबको दीन दुखी मनुष्यों के प्रति विशेष अनुकंपा की भावना रहती है दूसरे शब्दों में मनुष्य मात्र के प्रति करुणा का भाव ही उन्हें भगवान अथवा महापुरुष का स्वरूप प्रदान करता है।

दक्षिण अफ्रीका में वकील मोहनदास ने अपने साथी मनुष्यों का दुख देखा नहीं गया और उनके प्रति सहानुभूति के भाव ने ही सत्याग्रह को विकसित किया।

साधना का शिखरः माध्यस्थ भावः- मानवीय करुणा महल का चौथा एवं सबसे महत्वपूर्ण स्थायी स्तंभ, दुश्मनों के प्रति भी वैरभाव का त्याग है। दुर्जन, दुष्ट, क्रूर, विपरीत बुद्धि वाले व्यक्तियों के प्रति भी हिंसा एवं घृणा का भाव नहीं रखना कठिनतम साधना है। और इसी गुण के चलते ही वकील मोहन अफ्रीका में महात्मा गांधी बन सके थे।

गांधी जी को अंग्रेजों से भी घृणा नहीं थी। ईसाईयों के आदर्श प्रभु ईसामसीह तो स्वयं को सूली पर चढ़ाने वालों के प्रति भी कह ही चुके हैं कि हे प्रभु, इन्हें क्षमा करना, क्योंकि ये नही जानते कि ये क्या कर रहे हैं।

यही भाव धीरे-धीरे महात्मा गांधी में भी भरता गया था। अफ्रीका के सत्याग्रह में गांधी जी पर हमला करने वालों को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया था परंतु महात्मा गांधी जाकर उसे जेल से छुड़ा लाये थे।

ऐसे सैकड़ों प्रसंगों, के चलते ही महात्मा गांधी की आत्मिक शक्तियों बलवती हो सकी थी तथा वह अहिंसा के विश्वव्यापी प्रचारक बन सके थे जिनकी स्मृति में संयुक्त राष्ट्र संघ भी 2 अक्टूबर को अंतराष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाता है।

इस तरह से मानवीय करूणा महल के देखने से हमें भी दिव्यता का अनुभव होता है। आइये इस मानवीय महल को रचने में हम सब भी जुट जायें, यह करूणा सभी धर्मों एवं मानवता की मिली जुली विरासत है, इसे हमें बचाना ही नहीं है, बल्कि आगे भी बढ़ाना है।

कविता

डूबता है आफताब क्या गजल पढ़ूँ

डूबता है आफताब क्या गजल पढ़ूँ
तीरगी का ये शबाब क्या गजल पढ़ूँ
हिंसा ने तान दी हैं दहशत की संगीने
अमन का है दामन खराब क्या गजल पढ़ूँ
प्रेम की दरिया कैसे बहेगी इस जमीं पर
नफरत के हैं कितने कटाव क्या गजल पढ़ूँ
फिरका परस्ती ने गढे मतलओं के ये शिखर
छा गया बिखराव क्या गजल पढ़ूँ
मौका परस्ती छोड़कर एक जुट हावें यहाँ
भूलते नहीं हैं दाव क्या गजल पढ़ूँ

दीपावली पर्व हमारे अंतस में उम्मीद का दीया जलाता है

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

धार्मिक और साथ ही सामाजिक दृष्टि से जैसी महत्ता और व्यापकता दीपावली पर्व की है वैसी और किसी पर्व की नहीं। संभवतः इसीलिये दीपावली को सबसे बड़े उत्सव की संज्ञा दी जाती है। यह एक ऐसा अनूठा पर्व है जो सबको उत्सवधर्मिता से जोड़ता है। हमारी सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा यह पर्व हमारे अंतस में उम्मीद का दीया जलाता है। दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुये मिट्टी दीपक हाथों में रह जायेंगे, आकाशीय अमृत- आलोक खो जायेगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का संबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखरता है और तत्पश्चात अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुये प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखरना। यह घटना असाधारण है। यह भी सच है कि समय के साथ पर्व मनाने के तरीके भी बदले हैं और बाजार की चकाचौंध में उत्सवों की मूल धारणा कहीं पीछे छूटती जा रही है और समृद्धि तथा वैभव के प्रदर्शन ने उसकी जगह ले ली है। दीपों का यह पर्व उन धार्मिक मान्यताओं का भी उत्सव है जो आध्यत्मिकता की ओर ले जाती है और आध्यात्मिकता की ओर जाने की पहली निशानी यही है कि समाज में मैत्री भाव देखने को मिल रही या नहीं। यह दीप पर्व इस वृद्धि को बल प्रदान करे, यह सबको कामना भी होनी चाहिये और कोशिश भी।

यह पर्व हमें एहसास करता है कि आज भी देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें दो वक्त का भोजन भी नही मिलता। उनके घरों तक बेशक कुछ सरकारी सुविधायें अब पहुंच रहीं है, लेकिन उनकी जिंदगी में खुशियों के क्षण कम ही हैं। कोरोना संक्रमण के दौर से हम सभी गुजर रहे हैं, इस दौर में हजारों लोगों की जीविका पर संकट के बादल मडरा रहे हैं। इस वर्ष दीपावली पर्व पर हमें हमारी उदारता का परिचय देते हुये एक दीपक उन बेसहारा लोगों की मदद करके जलाना होगा जो कोविड के कारण संकट से जूझ रहे हैं । दरअसल पर्वों, त्योहारों की अपनी सामाजिकता है, जो हमें थोड़ा और उदार बनाती हे और आपस में जोड़ती है। अपने साथ औरों की और यहां तक कि परिवेश की भी चिंता लोगों को न केवल समरसता और सद्भाव से भरती है, बल्कि एक बेहतर समाज का निर्माण भी करती है। चूंकि हर किसी की यही चाह है कि एक बेहतर समाज का निर्माण हो इसलिये इससे बेहतर और कुछ नहीं कि दीपावली के मूल संदेश को न केवल आत्मसात् किया जायें , बल्कि यथा संभव उसका प्रचार भी किया जायें।

यह पर्व समाज में सद्भाव तथा रोशनी फैलाने का पर्व है। क्यों न हम इस दीपावली प्रेम का एक दीया जलायें और हमारे आसपास के माहोल और पर्यावरण को बेहतर बनाने का संकल्प लें। प्रदूषण हमारी जीवन पद्धति में प्रवेश कर चुका है। उससे मुक्ति के लिये घोर साधना करने की जरूरत है। कोरोना विशेषज्ञों का मानना है कि वातावरण खतरे में पड़ेगा । हवा में फैलने वाले बारूद के विषाक्तगण कोरोना संक्रमण का खतरा बढ़ा सकते हैं। वायु प्रदूषण श्वांस की तकलीफ बढ़ायेगा।

इस बार हमें संकल्प लेना होगा कि आतिशबाजी बिल्कुल नहीं करेंगे जो राशि हम आतिशबाजी में व्यय करते हैं वह राशि हम कोरोना के कारण संकट से जूझ रहे लोगों की मदद में लगायें। दीपावली आज भी स्वच्छता, सौंदर्य, समृद्धि का ही प्रतीक है, किंतु आज वह मलिनता, संकीर्णता और प्रदूषण के खिलाफ शाब्दिक साधना की मांग कर रही है। अपने वास्तविक रूप में मनायें जाने की मांग कर रही है।

दीपावली की अनेक पौराणिक कथायें हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का वध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैन धर्म के अनुसार इस दिन जैन धर्म के वर्तमान शासनायक तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि प्राप्त हुयी थी। इस अवसर पर जैन समुदाय विधि विधान पूर्वक निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्जवलित कर अपनी खुशी का इजहार करता है। यद्यपि दीप पर्व से अनेक मान्यतायें जुड़ी हैं, लेकिन उन सबके मूल में यही भाव हैं कि सभी सुखी एवं समृद्ध हों और अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ें। यह प्रकाश अमावस की रात झिलमिलाती रोशनी भर नहीं, बलिक वैभव के साथ-साथ ज्ञान एवं विवेक के आलोक का पर्याय भी है। ऐसा ही प्रकाश अज्ञानता, असामनता, अभाव, अहंकार, अशांति, अन्याय, आतंक के अंधकार को दूर दूर कर सकता है। यह आसानी से तब दूर होगा जब समाज का नेतृत्व करने वाले पहले खुद को आत्मिक ज्ञान से प्रकाशित करें। ऐसा करने का सीधा अर्थ है अपने अंतस के कलुष को मिटाना। दीपावली पर्व से जुड़ी अनेक पौराणिक कथाओं से हम सभी सुपरिचत हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रकिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समाया है। ऐसा सच में जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल-पल धड़कता है यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती हैं, जो कहता कि तुम स्वयं ज्योतिस्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको। अंतर्यात्रा करो। अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ है। दीपक भी भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किंतु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक जलाने वाली अमृत ज्योति है। हालांकि मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा-ढ़का अपने स्वरूप को भूला बैठा है, वह स्वयं को मात्र मिट्टी की देह समझ बैठा है और मिट्टी की दस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया है कि आत्मज्योति का चिरंतन सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे वह अपनी सच्चाई से वाफिक नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर-दूरतम रहने के कारण इंद्रियों से विनिर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और इस भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगी की घुटन और छटपटाहट फिर से तीन और घनी हो जाती है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जायेगी। दीप जलाये जायेंगे। मिठाइयाँ बांटी जायेंगी। नये-नये अलंकार एवं परिधानों का उपयोग किया जायेगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो समृद्धि का प्रतीक है लेकिन हम आत्म-समृद्धि की ओर भी कदम बढ़ाये तो हमारा अनतवैंभव भी जगमगा उठेगा। कोविड के इस दौर ने हमें बहुत कुछ सिखाया है अब तो एक आत्म-दीप जलाओ।

चलो देखें यात्रा

धर्मस्थल

धर्मस्थल अर्थात् धर्म या पुण्य प्राप्ति का स्थल है। बड़ी संख्या में हिन्दू जैन मुसलमाल और ईसाई इस स्थान पर आते हैं और धर्म लाभ प्राप्त करते है। यहाँ पर मंजुनाथ स्वामी (शिव का एक रूप) का मंदिर है और जैनों का चन्द्रनाथ स्वामी चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर है। बाहूबली स्वामी की 37 फुट। ऊँची कारकल में निर्मित भव्य प्रतिमा बाहूबली पहाड़ी पर प्रतिष्ठित की गई है। इस क्षेत्र का यह वैशिष्ट्य है कि यहाँ जैन धर्मावलम्बी हेगडे परिवार मंजुनाथ स्वामी मंदिर के मुख्य धर्माधिकारी है। वर्तमान धर्माधिकारी पद्मभूषण डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगडे ने सम्पूर्ण अंचल के विकाश में अतुलनीय योगदान दिया है।

समीपवर्ती क्षेत्रः मूडब्रिदी 52 किमी. कारकल-68 किमी. वेणूर- 32 किमी. श्रवणबेलगोला-180 किमी.

प्रबन्ध व्यवस्था- संस्थाः मैनेजिंग ट्रस्ट धर्मस्थल

अध्यक्षः डॉ. डी. वीरेन्द्र हेगड़े फोनः 08256-277160

आवागमन के साधनः रेल्वे स्टेशनः मैंगलोर-75 किमी.

बस स्टैण्डः धर्मस्थल

पहुँचने का मार्गः वेलूर हासन मैंगलोर से बस द्वारा सरलतम मार्ग

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायेंः आवास, कमरे

अटैच बाथरूम - 1000 कमरे, बिना बाथरूम-100

यात्री ठहरने की कुल क्षमता- 30,000

भोजनशाला : है

विद्यालय : है

औषधालय : हैं

पुस्तकालयः हैं

टेलिफोनः 08256-202121, 277121, 277141, 277144

प्रशासन एवं प्रबंध में अध्यात्म का अवदान

❋ सुरेश जैन, (आई.ए.एस), भोपाल ❋

हमारे समाज में बड़ी संख्या में उद्योगपति हैं, व्यवसायी हैं, डॉक्टर हैं, इंजीनियर है एवं वकील हैं। यह आवश्यक है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, प्रादेशिक प्रशासनिक एवं न्यायिक सेवा में भी हमारे नवयुवक अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारी पवित्र वसुंधरा ने बीसवीं सदी में भारतीय संस्कृति के धुरंधर विद्वान प्रदान किये। चारित्रिक जगत के जाज्वल्यमान सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्रों को जन्म दिया। आज आवश्यकता है कि हम कुशल, प्रशासक, प्रबंधक एवं न्यायिक अधिकारी राष्ट्र को सौंपे।

बीसवी शताब्दी के तपोनिधि आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं उनके संघ का चिन्तन सदैव आधुनिकता, वैज्ञानिकता एवं समाज के सर्वतोमुखी विकास से प्रेरित एवं प्रभावी रहा। इसी सोच के फलस्वरूप आज भारतीय संत परम्परा में उनका शीर्षस्थ स्थान है। उन्होंने समाज के सर्वतोमुखी विकास के लिये सामाजिक चेतना को अत्यधिक प्रभावित किया और मानव सेवा के उच्चतम मानदण्ड स्थापित किये। उन्होंने जैन समाज के युवक युवतियों को संस्कारित किया और समाज के प्रतिभाशाली एवं मेघावी छात्र/छात्राओं को आधुनिक प्रतियोगात्मक परीक्षाओं में अग्रसर होने के समुचित अवसर प्रदान करने हेतु जैन समाज को प्रेरित किया है। साधना के अभाव में उपेक्षित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभा सम्पन्न युवक एवं युवतियों को समुचित सहायता एवं प्रशिक्षण प्रदान कर उनको सफलता की मंजिल तक पहुँचाया है।

हम अत्यधिक प्रसन्नता के साथ आपको स्मरण कराना चाहेंगे कि पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद से जबलपुर नगर में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई है। हमें इस संस्थान की परिकल्पना करने, संस्था का संविधान बनाने और इसके संस्थापक संचालक के रूप में अपनी सेवायें प्रदान करने का अवसर मिला है। यह प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान परम्परागत संस्था नहीं है। सामान्य परम्पराओं के आधार पर स्थापित संस्थाओं से इस संस्थान के उद्देश्य-कार्यकलाप भिन्न है। इस संस्थान का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभाशाली एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को केन्द्रीय एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित उच्च प्रशासकीय एवं न्यायिक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये प्रशिक्षण के द्वारा प्रशिक्षित करना एवं राष्ट्र और समाज के लिये कर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और चरित्रनिष्ठ अधिकारी तैयार करना है। इस संस्थान का उद्देश्य ऐसे दूरगामी परिणामयुक्त कार्य करना है जो कार्य सामान्य कल्याणकारी संस्थाओं की क्षमता के बाहर हो। इस संस्था को प्रभावी स्वरूप देने के पावन उद्देश्य से आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने प्रशासन एवं न्याय के क्षेत्रों तथा सामाजिक संदर्भों में सच्चरित्र नागरिक की भूमिका पर आधारित सारगर्भित प्रवचन दिये और सतत रूप से अपना वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद एवं ओजपूर्ण प्रेरणा संस्थान एवं प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान की है।

प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना एक अभिनव प्रयोग था। अब यह संस्थान अपनी शैशव अवस्था से प्रगति करते हुये यौवन की देहरी पर स्थापित हो गया है। इस संस्थान द्वारा प्रशिक्षित प्रत्याशी मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर शासन की सेवा कर रहे है।

यह निर्विवाद तथ्य है और आप भी सोच सकते हैं कि हमारी सांस्कृतिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान केवल इतने से नवयुवक/छात्र नहीं कर पायेंगे किन्तु यह एक लाभप्रद एवं प्रभावी जनोपयोगी शुरुआत है। यह संस्था अल्पकाय है किन्तु इसे महान व्यक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त है। अतः यह संस्थान आपके जीवन का महत्वपूर्ण अंग बने यही हमारी हार्दिक कामना हे। हम सभी का महत्वपूर्ण कर्तव्य है कि इस संस्थान के चतुर्मुखी विकास हेतु विशिष्ट सहयोग प्रदान करें।

आचार्य श्री सदैव आत्मकल्याण के साथ समाज कल्याण एवं राष्ट्र के अभ्युत्थान में सहभागी होने की मंगल प्रेरणा प्रदान करते हैं। भारतीय लोक प्रशासन में कर्तव्य परायण, चारित्रनिष्ठ, ईमानदार एवं भारतीय संस्कृति के संस्कारों से सम्पन्न कुशल-प्रशासनिक अधिकारी हो, इस लोक मंगलकारिणी-भावना से गुरुवर आचार्य विद्यासागर महाराज के मंगल शुभाशीष एवं सद्प्रेरणा प्राप्त कर इस संस्थान द्वारा प्रशिक्षित अधिकारी प्रशासन के विविध क्षेत्रों में चतुर्मुखी सफलतायें प्राप्त कर प्रशासन के स्वस्थ मानदण्ड स्थापित कर रहे है।

आचार्य विद्यासागर जी के आशीर्वाद एवं उनके परम शिष्य मुनि श्री क्षमासागर जी, मुनि श्री समतासागर जी तथा मुनि श्री प्रमाणसागर एवं एलक निश्चय सागर जी की पावन प्रेरणा से एवं उनके सान्निध्य में भोपाल नगर में उत्कृष्ट ए वं आधुनिकतम शैक्षणिक एवं सेवा संस्थान आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान की स्थापना की गई है। वर्तमान में इस संस्थान द्वारा विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, ज्ञानोदय विद्यापीठ एवं ज्ञानोदय लिम्ब्स संचालित किये जा रहे है।

आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान द्वारा सुविकसित 20 एकड़ के विशाल माणिक-शकुन परिसर में रूपये 50 लाख की लागत से विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेनट के विशाल भवन एवं रूपये 45 लाख की लागत से त्रिशला कन्या छात्रावास का निर्माण किया जा चुका है। रूपये एक करोड़ की लागत से बालक छात्रावास के भवन एवं इस वर्ष रूपये 70 लाख की लागत से नवीन महिला छात्रावास के भवन निर्माण किया जा चुका है। परिसर में जैन मंदिर की स्थापना भी हो चुकी है। हमें इस संस्थान के आकल्पन, संस्थापन और 25 वर्षों तक सफल संचालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम नवीन जैन, यू.एस.ए जैसे बड़े दानदाताओं के आभारी है जिन्होंने हमारी बेटी विद्युत-नितिन जैन की प्रेरणा से छात्रावास निर्माण के लिये हमें एक करोड़ से अधिक धनराशि प्रदान की। मुनिवर प्रमाणसागर जी बड़ी लंबी अवधि के बाद फरवरी 2020 को विद्यासागर इंस्टीट्यूट में पधारें। उन्होंने अपनी आँखों से संख्यान की प्रगति का अवलोकन किया और संस्थान के प्रबंध

संचालक श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) की संस्थान के सफल संस्थापन और संचालन के लिये भरपूर सराहना की।

ज्ञानोदय विद्यापीठ की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य यह है कि प्रतिभा सम्पन्न छात्रों को उत्कृष्ट शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिये आवश्यक सभी सुविधायें उपलब्ध कराई जावे, जिससे उनकी प्रतिभाओं को निखारा एवं संवारा जा सके और वे अखिल भारतीय एवं राज्य सेवाओं, उद्योग, व्यवसाय, राजनीति, सेवा एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में शीर्षस्थ स्थानों पर पहुँचकर अपने दायित्वों को सार्थकता, सफलता एवं समर्पण पूर्वक निर्वाह कर सकें।

ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रत्येक छात्र की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों को विकसित कर रही है। प्रत्येक छात्र में मानवीय गुणों का विकास कर रही है। जिससे कि वह भविष्य में जन जन का हितैषी बन सके। प्रत्येक छात्र को श्रेष्ठ एवं शाश्वत् जीवन मूल्यों शांति, नैतिकता एवं प्रकृति प्रेम की शिक्षा दी जा रही है। ज्ञानोदय विद्यापीठ में प्राथमिक शिक्षा से लेकर महाविद्यालयीन शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों के लिये निकट भविष्य में विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जावेगी। विद्यापीठ में सभी सुविधाओं से सम्पन्न विशाल पुस्तकालय एवं आवासीय परिसर का विकास किया जा चुका है। भोपाल स्थिति अन्य संस्थाओं के छात्रों द्वारा भी इन सुविधाओं का लाभ लिया जा रहा है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर किन्तु प्रतिभावान छात्रों को न्यूनतम शुल्क पर अथवा निःशुल्क सुविधायें प्रदान की जा रही है।

विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट से 25 वर्षों में 1500 से अधिक युवक और युवतियाँ एम.बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर हमारे प्रदेश, राष्ट्र एवं विश्व के विभिन्न औद्योगिक संस्थानों में सेवा कार्य कर अपना प्रभावी योगदान प्रदान कर रहे है।

ज्ञानोदय लिम्ब्स द्वारा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिये एक वृहद कल्याणकारी योजना का क्रियान्वयन किया गया है। इस योजना के अंतर्गत विकलांग व्यक्तियों के लिये कृत्रिम अंगों का निर्माण, प्रत्यारोपण एवं विकलांग व्यक्तियों का पुनर्वास एवं सर्वातोमुखी विकास किया गया है। हमें विश्वास है कि नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजेश जैन, आई.ए.एस के सक्षम एवं कुशल नेतृत्व में यह संस्थान चतुर्मुखी विकास के पथ पर आगे बढ़ेगा और पूरे विश्व में जैन संस्कृति के विविध आयामों को विस्तृत करेगा।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक उत्थान की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हम अपने प्रतिभाशाली होनहार युवको को इतना समर्थ बनाये कि वे राष्ट्र तथा समाज की प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। वर्तमान तथा भविष्य की राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का आकलन/मूल्यांकन करते हुये दूरदृष्टि पूर्वक हम ऐसे वट वृक्षों का बीजारोपण करें जो भावी पीढ़ियों के लिये वरदान सिद्ध हो सकें। यह आवश्यक है कि हम दीर्घकालीन एवं अन्ततः

फलदायी योजनाये बनायें और दृढ़तापूर्वक उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करें। आज अपने नवयुवकों की राजनैतिक, प्रशासनिक प्रबंधन एवं न्यायिक क्षमता का सदुपयोग करना अत्यधिक आवश्यक है। हमारे नवयुवकों सम्पूर्ण परिश्रम एवं दक्षता के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठे, उत्तीर्ण हो, समाज सेवा के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आगे बढ़े और घृणा को प्यार से तथा पशुबल को आत्मबल से जीत कर उत्कृष्ट सांस्कृतिक परंपराओं को पुनः प्रतिष्ठित करें।

वर्तमान में चारित्रिक पतन और सतत पाश्चात्य अनुगमन युवाओं में द्वन्द उत्पन्न कर रहा है। शाश्वत जीवन मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। सात्विक जीवन के प्रति तटस्थता बढ़ रही है। वरिष्ठों के प्रति अपमान में वृद्धि हो रही है। तनाव, भय एवं असुरक्षा की भावनाओं में वृद्धि हो रही है। भौतिकता के प्रति आकर्षण में सतत संबर्द्धन हो रहा है और उपभोक्तावाद प्रतिष्ठित हो रहा है। आचार्य विद्यासागर जी एवं उनके संघस्थ मुनिवर प्रमाणसागर जी प्रभृति साधुओं ने ऐसे दूषित सामाजिक परिवेश में युवाओं को सांस्कृतिक मूल्यों की गरिमा एवं पवित्रता के साथ विकास करने की प्रेरणा दी है और उन्हें रचनात्मक नेतृत्व एवं नायकत्व प्रदान किया है। उन्होंने युवाओं की निपुणता एवं कौशल में वृद्धि के लिये ठोस मार्गदर्शन दिया है। उन्होंने स्वयं सदैव जागरुक रहकर उन्हें स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर रखने के लिये प्रोत्साहित किया है। परिणामतः युवा शक्ति में नये विश्वास एवं नई प्रेरणा की लहरों का संचार हुआ है। उन्होंने युवाओं को सुभाषचन्द्र बोस की चेतावनी जिस देश की तरूणाई सो जायेगी उस देश का भाग्य सो जायेगा को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करने का मूल्य मंत्र दिया है। आचार्य विद्यासागर जी जन-जन के परमेष्ठी तो है किन्तु अनुशासन, समय, शिष्टाचार, सरोकार, पारस्परिक विश्वास एवं साहचर्य की जीवंत प्रतिमूर्ति है। स्वभाव से स्वतः प्रस्फुटित होने वाले इन गुणों के कारण उनके शिष्य एवं श्रोतागण उनके प्रति सहज ही सम्पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते है।

यह आवश्यक है कि आचार्य विद्यासागर जी के आध्यात्मिक नेतृत्व में हम आदर्श जीवन शैली अपना कर मानव मूल्यों, आध्यात्मिक आस्थाओं, अनुशासन और सामाजिक सुधार के प्रति दृढ़ता पूर्वक संकल्पित हो। यह भी आवश्यक है कि श्रमण संस्कृति के शाश्वत सिद्धांतों को सुरक्षित रखते हुये हम अपनी जीवन शैली में आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा सुस्थापित सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं को समुचित स्थान दें। सम्पूर्ण विश्व में उत्कृष्ट जीवन मूल्यों पर आधारित हमारी पहचान बनी हुई है। अपनी इस पहचान को हम अपनी विशिष्ट एवं वैज्ञानिक जीवन शैली तथा जीवन मूल्यों के द्वारा सुदृढ़ता एवं ठोस धरातम प्रदान करें। श्रमण संस्कृति के मूल सिद्धांतों का पूर्ण समादर करते हुये हम अपने अध्यात्म का वैज्ञानीकरण करें। मन, वचन एवं कर्म की एक रूपता स्थापित कर सुस्पष्ट सामाजिक छवि का निर्माण करें। हम सामाजिक शुद्धिकरण करते हुये ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्रों में नैतिकता की संस्थापना करें।

आगम दर्शन

सर्वलोक प्रिय पुराण आदिपुराण

महापुराण का आद्य भाग आदिपुराण है तथा उसका उत्तर भाग उत्तर पुराण है इस पुराण में 47 पर्व है प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता आचार्य जिनसेन जी है आचार्य जिनसेन उद्‌भट विद्वानों में से एक रहे हैं आपके द्वारा जैन धर्म के शंकट काल में भी आपके द्वारा समाज को कुशल मार्गदर्शन दिया गया आपके द्वारा आदिपुराण के सिवाय पार्श्वाभ्युदय वर्धमान पुराण और जय धवला टीका के चालीस हजार श्लोक लिखे गये आदिपुराण में 47 सर्गों के माध्यम से आदिनाथ भगवान का अद्वितीय वर्णन किया गया है यह पुराण जितना धर्म कथा के रूप में है उससे अधिक काव्य के रूप में है।

उस रचना से लाभ ही क्या जिससे प्राणी का अन्तस्तल विशुद्ध न हो सकें। उन्होंने पीठिका में आदिपुराण को धर्मानुबंधनी कथा कहा है। और बड़ी दृढ़ता के साथ प्रकट किया है कि जो पुरुष यशरूपी धन का संचय और पुण्यरूपी पव्य का व्यवहार-लेन देन करना चाहते हैं उनके लिये धर्मक थाका का निरूपण करने वाला यह काव्य मूलधन के समान माना गया है। वास्तव में आदिपुराण संस्कृत साहित्य का एक अनुपम रत्न है। ऐसा कोई विषय नहीं है जिसका इसमें प्रतिपादन न हो। यह पुराण है, महाकाव्य है, धर्मकथा धर्मशास्त्र हैं, राजनीति शास्त्र है आचार-शास्त्र है और युग की आद्यव्यवस्थ को बतलाने वाला महान इतिहास है। आदिपुराण में कुलकरों का वर्णन विशेष रूप से किया गया है तथा सहस्रनाम स्त्रोत का पूरा पाठ इस ग्रंथ में मिलता है भरत चक्रवर्ती की दिग्विजय यात्रा राजनीतिक सूत्र तथा नीतिदर्शन, समाज दर्शन मनोविज्ञान एवं भारत का सांस्कृतिक स्वरूप अद्‌भुत रूप में मिलता है।

कविता

क्या बच पायेंगे

हम किसी के साथ में, आये नहीं न जायेंगे
अपनी नदी अपना गगन, तैरेंगे हम उड़ जायेंगे
रिमझिम गिरि फुहा र में, गीले हुये थे पर कभी
धूप निकली प्रातः, सूखेंगे पंछी पर सभी
पंख फड़ा फड़ा रहे, प्राण पंछी जायेंगे
हरे भरे झाड़ के साये से धूप आई गई
आहट आई कुछ पास में करीब मौत आ गई
अब मसीहा पास के, क्या बचा पायेंगे

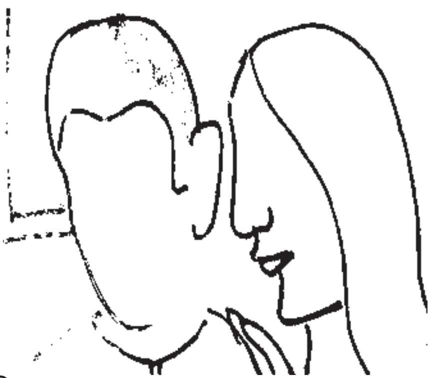

प्रेम की समाधी

सुरेश जैन, आई.ए.एस. (भोपाल)

स्व. श्री पन्नालाल जी जैन के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन, नीम वालों का 91 वर्ष की आयु में 27 जुलाई 2021 को प्रातः देहावसान हो गया। यह सुखद संयोग हैं कि उन्होंने एक दिन पूर्व ही स्थानीय जैन मंदिर में अजितनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित कराई और वे पूरे दिन मंदिर में रहे। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये है। हमारे साढू भाई तथा उनके बड़े पुत्र विनोद कुमार जैन, एस.डी.ओ, वन विभाग से सेवानिवृत्त हुये है। द्वितीय पुत्र श्री अजित कुमार जी सहजपुर में मेडीकल स्टोर चलाते है। तृतीय पुत्र श्री राजेश, सोपान संस्था के संचालक है और चौथे पुत्र श्री विपनेश मध्यप्रदेश सरकार में प्रोजेक्ट ऑफीसर के पद पर कार्यरत है। उनकी एक बेटी श्रीमती सरोज है जिनका विवाह पटेरा में एडवोकेट श्री देवेन्द्र बड़कुल के साथ हुआ है।

वे सागर संभाग के सभी जिलों में नीम वालों के रूप में विख्यात थे। उन्होने अपने ग्राम सहजपुर में मंदिर के सामने स्थित अपनी बहुमूल्य भूमि 200 बाई 50 फीट दान में देकर धर्मशाला का निर्माण कराया। वे अपने पूर्वजों के द्वारा निर्मित सुपार्श्वनाथ जैन मंदिर के जीवनभर अध्यक्ष रहे। अनेक अवसरों पर आवश्यकतानुसार मंदिर का जीर्णोद्धार कराते रहे।

पूरे जीवनभर प्रतिदिन अभिषेक, पूजन करने के बाद भोजन करने के नियम का पालन करते रहे। साधुओं की सेवा में सदैव आगे रहे। भोजन में उन्हें जो परोसा गया, वही मौन पूर्वक ग्रहण कर लेते थे। वे अपने परिवार के सदस्यों, संबंधियों और परिचितों का मुस्कुराते हुये स्वागत करते थे। घर में आये अतिथियों की सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखते थे। वे सबकी तकलीफों की पूरी-पूरी परवाह करते थे। ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति की दिल से सहायता करते थे। उनकी मदद के लिये सभी जतन करते थे। सहजता, सरलता और विन्रमता उनके व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरी थी।

स्व. प्रेमचन्द्र जी हमारे निमंत्रण पर ब्र. सुरेशचंद्र जी के साथ जैन तीर्थ नैनागिरि पधारे। नैनागिरि में रहकर उन्होंने प्रत्येक मंदिर के ध्यान पूर्वक दर्शन किये। विधान किया। नैनागिरि में चल रहे निर्माण कार्यों का रुचिपूर्वक निरीक्षण किया। नैनागिरि के विकास के संबंध में हमसे और हमारे मंत्री श्री सेठ दामोदरदास जी से चर्चा की। वे अपने संबंधियों के विवादों का सहजता और सरलता पूर्वक निराकरण करा देते थे। अतः पारिवारिक विवादों की पंचायतों में उन्हें सदैव श्रद्धापूर्वक आमंत्रित किया जाता था।

भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांतिलाभ हो। उन्हें सद्‌गति प्राप्त हो और उनके परिवार को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

उनके निधन पर सहजपुर में श्रद्धांजलि सभा और विधान का आयोजन किया गया। समीपस्थ ग्रामों से पधारे सहस्त्रों महानुभावों, संबंधियों और ग्रामीणों ने उनके चरणों में श्रद्धा के पुष्प समर्पित किये।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अक्टूबर 2021
चांद का नजारा

प्रथम-

जिनमंदिर की ओट में, चंदा खिलता जाये
मुखड़ा हो जिनराज का, सुंदर रूप बनायें
जिनवर की महिमा अतुल, कर दे मधु जल खारा
जिनचंदा का देखकर, जानों चांद नजारा

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

रात सुहानी कितनी लगती,
जब चंदा खिल जाता
पूनम की इस बेला में,
जिन मंदिर रूप सुहाता
नयनों में बस जाता, देखों चांद नजारा

श्रीमती स्मिता जैन, ललितपुर

तृतीय-

हवा बह रही ठंडी ठंडी,
लोरी सी कुछ गाती
पूनम की यह रात सुहानी,
आज सभी मन भांति
देश-देश में भटक-भटक कर,
देती सुखद पिटारा
सुख भर देती दुख हर लेती,
देखे चांद नजारा

श्रीमती इन्द्रा जैन, इंदौर

वर्ग पहेली क्र. 264
अक्टूबर 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमती आकांक्षा जैन, इंदौर (म.प्र.)
द्वितीय : अमीता जैन, शिवपुरी (म.प्र.)
तृतीय : रजनी जैन, दिल्ली

पथरीधन चूर्ण
पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–
1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

पुराण प्रेरणा

वधकारक कषाय

स्वान्तकाले निमित्तत्वं को वा कृष्णस्य यास्यति।
जातानां हि समस्तानां जीवानां नियता मृतिः ॥

यह द्वारिकापुरी कालान्तर में क्या अपने आप ही समुद्र में डूब जायेगी ? अथवा निमित्ततान्तर के सन्निधन में किसी अन्य के निमित्त से विनाश को प्राप्त होगी ? कृष्ण के अपने अंतकाल में निमित्त पने को कौन प्राप्त होगा ? क्योंकि उत्पन्न हुये समस्त जीवों का मरण निश्चित है। हे प्रभो ! मेरा चित्त कृष्ण के स्नेहरुपी महापाश से बँध हुआ है अतः संयम की प्राप्ति कितने समय बाद होगी ?

परस्यापकृतिं कुर्वन् कुर्यादेकत्र जन्मनि।
पापी परवधं स्वस्य जन्तुर्जन्मनि जन्मनि ॥

दूसरे का उपकार करने वाला पापी मनुष्य दूसरों का वध तो एक जन्म में कर पाता है पर उसके फलस् वरूप अपना वध जन्म-जन्म में करता है।

कषायवरागः प्राणी दृन्ता स्वस्य भवे भवे।
संसारवर्धनोडन्येषां भवेद्वा वधको न वा ॥

यह प्राणी दूसरों का वध कर सकें अथवा न कर सकें परंतु कषाय के वशीभूत हो अपना वध तो भव-भव में करता है। तथा अपने संसार को बढ़ाता है।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ ण् र् अ अ क् ण् ड् इ आ क् म
2. घ् आ अ व् अ आ ग् त् ई आ र् न् अ भ
3. अ र् आ अ ग् ई स् व् र् उ प् अ वि अ र् अ आ स् ग् व् द् य आ
4. च इ द् श् ध् इ अ व् इ न् अ य् सि
5. घ् ई स् त्र य् अ ल

परिणाम :

अक्टूबर 2021: (1) मुनि श्री नियम सागर जी (2) मुनि श्री वृषभ सागर जी (3) मुनि श्री अभिनंदन सागर जी (4) मुनि श्री प्रबोध सागर जी (5) मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी

केरियर

फुड टेक्नोलॉजी में अवसर

खाद्य प्रौद्योगिकी

मनुष्य का जीवन पूरी तरह से खाद्य और स्वास्थ्य पर निर्भर है, और इसलिये हमें स्वस्थ रखने में खाद्य प्रौद्योगिकी के महत्व को कभी भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

फूड़ प्रोसेसिंग इंडस्ट्री (भारत) गेहूँ और चावल उत्पादों जैसे बुनियादी खाद्य पदार्थो और उन्हें खाद्य रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रियाओं को शामिल करता है। जैसेः बेकरी, डेयरी उत्पाद फल और सब्जी उत्पादों जैसे प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के अलावा, सब कुछ जो प्रसंस्कृत और खाद्य जीवन को बढ़ाने और पैक करने के लिये संसाधित होता है।

शैक्षिक योग्यताः

-पीसीएम या पीसीबी (गणित अथवा जीव विज्ञान) के विद्यार्थी खाद्य प्रौद्योगिकी, खाद्य जीवन व होम साइंस में करियर के लिये आगे बढ़ सकते है।

- स्नातकोत्तर के लिये संबंधित विषय में स्नातक आवश्यक हैं।

वेतन भत्तेः

-शुरुआत रूपये ८,००० रूपये 15,000 प्रति माह से होती है। अनुभव के साथ वेतन भी तदानुसार बढ़ता जाता है।

रोजगार के अवसरः विभिन्न क्षेत्र इस प्रकार हैं :-

खाद्य प्रसंस्करण कंपनिया
खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला
खाद्य थोक व्यापारी
अस्पताल
खानपान प्रतिष्ठान
रिटेलर्स
टॉक्सिको लॉजिस्ट

विभिन्न संस्थानः दिल्ली यूनिवर्सिटी (BSC with food technology)
मणिपुर यूनिवर्सिटी
डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर यूनिवर्सिटी, औरंगाबाद (BSC With food & Nutrition)
चित्रकूट विश्वविद्यालय (B tech Food Engineering)

■ 1 सितम्बर

- सुरक्षा परिषद ने तालीबान को मान्यता दी भारत की अध्यक्षता में परिषद की बैठक हुई चीन रूस वोटिंग में अनुपस्थित रहे।

- म.प्र. में 17 माह बाद स्कूल खुले छठवीं से आठवी तक की कक्षायें लगी 15-20% उपस्थिति रही।

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि गाय भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है इसे राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना चाहिये।

■ 2 सितम्बर

- टी.वी. के बड़े सितारे सिद्धार्थ शुक्ल का दिल के दौरे से निधन हुआ वे महज 50 वर्ष के थे।

- पाकिस्तान में भारत के अलगाव वादी सैयद अली शाह गिलानी निधन पर एक दिन का शोक मनाया गया राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका।

- कानपुर विकरुकांड में लचर जांच के मामले में डी आई जी अनंतदेव सहित 13 अफसर दोषी पाये गये।

■ 3 सितम्बर

- तालीबान असली चेहरा सामने आया और कहा हम कश्मीर के मुसलमानों की आवाज बनेंगे ।

- पैरालंपिक में भारत के प्रवीण कुमार ने हाई जंप में रजन और अवनि लखेरा ने स्वर्ण पदक निशानेबाजी में और हरविंदर सिंह ने तीरंदाजी में रजत पदक जीता।

- अफगान के हेरात प्रांत में महिलाओं ने प्रदर्शन किया सरकार से महिला भागीदारी की मांग की।

■ 4 सितम्बर

- पैरालिंपिक में भारत को बैडमिन्टन में प्रमोद भगत गोल्ड मैडल दिलवाया मनीष नरवाल ने भी निशाने बाजी में स्वर्ण पदक जीता।

- हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम् प्रकाश चौटाला ने 10 परीक्षा पास की।

- तालीबान ने पंजशीर पर कब्जा करने का दावा किया।

■ 5 सितम्बर

-काबुलः अफगानिस्तान में सत्ता संघर्ष हुआ हक्कानी नेटवर्क और तालीबान के बीच गोलीबारी हुई मुल्ला वरदारी घायल हुये।

- मुख्यमंत्री (छत्तीसगढ़) भूपेश बघेल के पिता नंद कुमार की विवादित टिप्पणी पर केस दर्ज हुआ।

- भोपालः गांधी मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. एन.पी. मिश्र का निधन हुआ वह 91वें के थे।

■ **6 सितम्बर**

- पाकिस्तानी सेना की मदद से पंजशीर में तालीबानी घुसे । सेना ने हेलीकॉप्टर और ड्रोन बम वर्षा की।

- उ.प्र. पूर्व राज्यपाल अजीज कुरैशी पर राजद्रौह का मामला दर्ज हुआ।

- आर.एस.एस की तुलना तालीबान से करने पर जावेद अख्तर का विरोध करते हुये शिवसेना ने कहा संघ राष्ट्र निर्माण करने वाला संगठन है।

■ **7 सितम्बर**

- अफगानिस्तान में एक दूतावास के सामने प्रदर्शन हुआ पाकिस्तान मुर्दावाद के नारे लगे। भीड़ पर तालिबानी फायरिंग हुई। वाभियान की बुद्ध मूर्ति विध्वसंक हसन अखुद प्रधानमंत्री बने।

- करनालः लाठी राड लेकर हजारों किसान जुटे इंटरनेट सेवा बंद हुई।

- पांडुनी गोटमार मेले में 450 लोग घायल हुये।

- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के पिता नंदकुमार बघेल ब्राह्मणों को विदेशी कहने पर गिरफ्तार हुये।

■ **8 सितम्बर**

- उत्तराखंड की राज्यपाल बेबी रानी मौर्य ने इस्तीफा दिया।

- अफगानिस्तान की अंतरिम तालिबान सरकार को चीन ने मान्यता दी 310 लाख डालर की सहायता दी।

- अमेरिका के सी आइ ए चीफ और रूस के एन एस ए चीफ की एक साथ भारत में मेजबानी से चीन और पाकिस्तान में खलबली मची।

■ **9 सितम्बर**

- आई आई एम में मद्रास की सर्व श्रेष्ठ रेकिंग रही तथा इंदौर की छठवी रेंक और आई आई टी में 13वीं रैंक रही।

- जयपुरः राजस्थान के हाइवे पर एयर स्ट्रिप का परीक्षण सफल रहा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और नितिन गडकरी हरक्यूलिस में सवार थे।

- देहरादूनः उत्तराखंड के उत्तरा काशी स्थित 11000 फिट की ऊँचाई पर बना गरतांग गली मार्ग 59 वर्ष बाद पर्यटकों के लिये खुला।

■ **10 सितम्बर**

- तालीबान ने अफगानिस्तान पहले उपराष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह के बड़े भाई रोहुल्लाउ अजीज की हत्या कर दी।

- देवरी : पूर्व मंत्री परशुराम साहू का निधन हुआ वे 87 वर्ष के थे तथा देवरी म.प्र. से कई विधायक रहे।

- उ.प्र. के मुख्यमंत्री आदित्य नाथ योगी ने मथुरा-वृंदावन को तीर्थ घोषित करते हुये 10 किमी. के भीतर माँस शराब बिक्री पर रोक लगाई।

■ **11 सितम्बर**

- गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने अपने पद से त्याग पत्र दिया।

- दिल्लीः दिल्ली में मूसलाधार बारिश हुई 12 साल का रिकार्ड टूटा एयरपोर्ट में पानी भरा उड़ाने जयपुर डायवर्ट हुई।

- मुम्बईः निर्भया जैसे सामूहिक दुष्कर्म पीडित महिला की मौत हुई।

■ **12 सितम्बर**

- अरविंद केजरीबाल 3 बार राष्ट्रीय संयोजक निर्वाचित हुये।

- श्रीनगरः बादल फटने से बारमूला के कफरनार में 4 लोगों की मौत हुई।

- गुजरात के नये मुख्यमंत्री के लिये भूपेन्द्र पटेल का चयन हुआ।

■ **13 सितम्बर**

- पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के पोते इंदरजीत सिंह ने भाजपा की सदस्यता ली।

- मुरैनाः नगर की नंदनी अग्रवाल ने सी.ए. में पूर देश में प्रथम स्थान बनाया।

-काँग्रेस नेता पूर्व मंत्री आस्कर फर्नीडीज का निधन हुआ वे 80 वर्ष के थे।

■ **14 सितम्बर**

- दिल्ली पुलिस विशेष शाखा ने 6 आतंकियों को गिरफ्तार किया जो देश के कई बडे शहरों में धमाका करना चाहते थे इनके पास विस्फोटक था।

- जयपुरः नीट का पेपर लीक हुआ सीकर में साल्व नहीं हुआ तो हरियाणा भेजा 9 आरोपी गिरफ्तार।

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने अहम् फैसले में कहा कि आजीवन कारावास का अर्थ कठोर कारावास है न कि साधारण।

■ **15 सितम्बर**

- हक्कानी नेटवर्क के खलील रहमान हक्कानी से मुल्लाबरादर से झगड़े के बाद बरादर ने काबुल छोड़ा।

- अभिनेता सोनू सूद से परिसरों का सर्वे आयकर विभाग ने किया।

- बालेश्वर (उड़ीसा) रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के 6 कर्मचारी पाकिस्तान को गोपनीय सामग्री देने के मामले में गिरफ्तार किये गये।

■ **16 सितम्बर**

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेंट्रल विस्य पीर योजना के अंतर्गत रक्षा भवन का उद्घाटन किया।

- उत्तराखंड हाईकोर्ट ने चार धाम यात्रा फिर शुरु करने की अनुमति दी।

- चीन के लुझोऊ शहर में 6 तीव्रता से भूकंप आया 3 लोगों की मौत हुये 90 घायल हुये 70000 को सुरक्षित निकाला।

■ **17 सितम्बर**

- शेफाली जुनेजा अंतराष्ट्रीय उड्डयन संगठन विमनन सुरक्षा समिति की अध्यक्ष बनी।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर 2.23 करोड़ वैक्सीन टीके लगे।

- रूस में सीजन की पहली बर्फवारी हुई।

- न्यूजीलैंड टीम (क्रिकेट) ने पाकिस्तान का दौर सुरक्षा कारणों से रद्द किया।

■ **18 सितम्बर**

- पंजाब के मुख्यमंत्री केप्टन अमरिंदर सिंह ने इस्तीफा दिया। कार्यकाल के 6 माह शेष रहे।

- तालीबान ने महिला मामले मंत्रालय को बंद किया।

- भाजपा छोड़कर पूर्व केन्द्रिय मंत्री बाबुल सुप्रीयो तृणमूल काँग्रेस में शामिल हुये।

■ 19 सितम्बर

- पंजाब के नये मुख्यमंत्री पद हेतु दलित चरणसिंह चन्नी का निर्वाचन हुआ।

- रतलामः साढे 5 घंटे में 6.29 इंच बारिश हुई 4 घंटे दिल्ली-मुम्बई रेल रूट बंद रहा।

- फ्लोरिडीः आम नागरिक 4 व्यापारियों ने अंतरीक्ष की यात्रा करके सुरक्षित धरती पर उतरे।

■ 20 सितम्बर

- अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेन्द्र गिरि ने आत्महत्या कर ली उन्होंने आठ पेज का सुसाइड नोट छोड़ा। कथित वारिस आनंद गिरि पुलिस हिरासत में।

-आई.एस.आई को सेना की जानकारी देने वाला नकली कैप्टन जितेन्द्र सिंह बाडमेर मूल का कपड़ा व्यापारी बैंगलूरु से गिरफ्तार हुआ।

- रूस की दहली पर्म युनिवर्सिटि में छात्र की फायरिंग से 6 की मौत हुई।

■ 21 सितम्बर

- आल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष असुद्दीन ओबैसी के दिल्ली निवास पर तोड़ फोड़ हुई।

- नये वायुसेना प्रमुख के लिये बी. बार चौधरी के नाम की घोषणा हुई।

- नेपाल की देउबा सरकार ने भारत सहित 12 देशों की राजदूत को बर्खास्त किया।

■ 22 सितम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीन बार पाक के न नुकुर करने के पाक के हवाई मार्ग से गुजरे।

सुप्रीम कोर्ट ने श्री पद्मनाथ स्वामी मंदिर ट्रस्ट का 25 साल का ऑडिट करने का आदेश दिया।

- धर्मातंरण का देश व्यापी सिंडीकेट चलाने के आरोपी मौलाना कलीम सिद्दी की गिरफ्तार हुये।

■ 23 सितम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 5 प्रमुख ग्लोबल सीईओ के साथ मुलाकात की।

- सुप्रीम कोर्ट ने पेगेसस जासूसी मामले एक्स पर्ट कमेटी बनाने का आदेश जारी।

- महाराज हरिसिंह की जयंती मनाने जम्मू में शोभायात्रा निकली।

■ 24 सितम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन भारतीय समयानुसार रात 8.30 बजे मिले बाइडेन ने मोदी का स्वागत किया।

- यू.पी.एस.सी 2020 में बिहार के शुभम् टॉपर रहा म.प्र. की जागृति और यू.पी की अंकिता तीसरे नंबर रही।

- केरल हाईकोर्ट ने दुराचार के आरोप में मंजरी निवासी मधु पुजारी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

■ 25 सितम्बर

- भोपालः एम्स के डिप्टी डायरेक्टर धीरेन्द्र प्रताप सिंह को 1 लाख की घूस लेते सीबीआई ने रंगे हाथों पकड़ा।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने संबोधन में पाकिस्तान की धुलाई की चीन को विस्तारवादी बताकर प्रहार किया।

-हैरातः तालीबानी सजा शुरू हुई 4 आरोपियों की हत्या करके उनके शव चौराहों पर लटकाये।

■ 26 सितम्बर

- इंडोतिम्बबकत बार्डर पर पुलिस के अधिकारी कमाडेंट रतनसिंह सोनल व डिप्टी कमांडेट अनूप कुमार ने हिमालय की मानसूल चोटी पर तिरंगा फहराया।

- यूरोप के आइसलैंड में 63 सदस्यी सदन में 833 महिलायें निर्वाचित हुई।

- तीन महीने में 5 राज्यों के 19 शहरों के 100 एटीएस से रूपये निकालने वाले आरोपी बजरंग मनीष मेहबूब गिरफ्तार हुये।

■ 27 सितम्बर

- भवानीपुर में भाजपा नेता दिलीप घोष पर हमला हुआ 2 लोग घायल हुये।

- गुजरात विधानसभा अध्यक्ष नीमा बाई पहली बार बनी इतिहास में पहली बार महिला अध्यक्ष बनी।

- केन्द्रीय राज्यमंत्री डॉ. एन मुरुगन राज्य सभा के निर्विरोध सदस्य चुने।

■ 28 सितम्बर

- पंजाब के प्रदेश काँग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिद्धू प्रदेशाध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया तथा मंत्री रजिया सुल्ताना और परगट सिंह ने भी इस्तीफा दिया।

- श्रीनगरः भारतीय सेना ने उरी सेक्टर से पाक आतंकी अलीबाबर को जिंदा पकड़ा।

-तालिबान ने काबुल यूनिवर्सिटी में महिलाओं के प्रवेश पर रोक लगाई।

■ 29 सितम्बर

- जापान के पूर्व विदेश मंत्री फूमिओ किशिदा ने जापान के प्रधानमंत्री का चुनाव जीता।

- केन्द्रिय विश्वविद्यालयों में असिटेंट प्रोफेसर पद पर नियुक्ति के लिये पी.एच.डी की अनिवार्यत समाप्त की।

- तालिबान को संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित की अनुमति नहीं मिली पाक का प्रयास विफल हुये।

■ 30 सितम्बर

- फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी को 1 साल की नजरबंद की सजा सुनाई।

- कराची- 32 वर्षीय हिन्दू युवक को परिवार सहित धर्म परिवर्तन कराने का मामला सामने आयात।

-कर्नाटक हाईकोर्ट ने अहं फैसले में कहा नाबालिक सन्यासी बनने न तो धर्म में पाबन्दी है न संविधान में।

इसे भी जानिये

लेक्टोमीटर

लेक्टोमीटर एक ऐसा वैज्ञानिक उपकरण होता है जिसकी सहायता से हम दूध की शुद्धता का पता लगा सकते है। लेक्टोमीटर का आविष्कार लीवरपूल के वैज्ञानिक डिकास के द्वारा किया गया था। लेक्टोमीटर की सहायता से दूध में मिलाये गये पानी की मात्रा का पता लगा सकते है। यह एक कांच की नली नुमा उपकरण होता है जो एक सिरे पर पतला होता है तथा दूसरे सिरे पर मोटा रहता है। लेक्टोमीटर से दूध की शुद्धता का पता लगाते समय उसको दूध के सेंपल में डालते है तथा यह कुछ समय रीडिंग देकर हमें दूध की शुद्धता अथवा अशुद्धता की जानकारी दे देता है। सामान्यतः शुद्ध दूध की रीडिंग 32 आती है लेकिन यदि दूध में कुछ मिलावट होती है तो यह रीडिंग को कम या ज्यादा बताता है। अगर हम दूध से पानी की बात करे तो सबसे ज्यादा पानी गधीं के दूध में 91.5 प्रतिशत घोड़ी में 90.1 प्रतिशत मनुष्य में 87.4 प्रतिशत गाय में 87.2 प्रतिशत ऊटनी में 86.5 प्रतिशत तथा बकरी में 86.9 प्रतिशत पानी की मात्रा होती है। दूध की इसी तरलता का फायदा उठाकर कुछ मिलावट खोर अधिक मुनाफा कमाने के चक्कर में दूध में पानी मिलाकर दूध को अधिक दामों पर बेचते है। और ग्राहक के पैसो से गलत तरीके से मुनाफा कमाते है। इसी मिलावट का पता लगाने के लिये लेक्टोमीटर काम आता है।

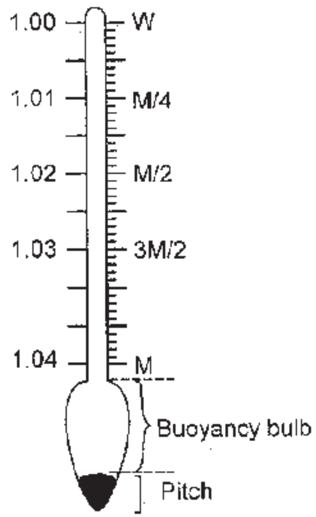

Lactometer

लेक्टोमीटर का कार्य सिद्धांतः लेक्टोमीटर दूध में पानी का तया दूध तथा पानी के घनत्व का पता लगाकार करता है। दूध में पानी मिलाने पर दूध के घनत्व में परिर्वतन आ जाता है और उसकी तरलता भी बदल जाती है यदि हम दूध के घनत्व का मापन कर ले तो दूध में मिलाये जाने वाले पानी की मात्रा भी आसानी से पता लगा सकते है लेक्टोमीटर आर्किमिडीज के सिद्धांत पर कार्य करता है।

संरचनाः लेक्टोमिटर की संरचना इस बात पर आधारित होती है कि द्रव में आशिंक रूप में डूबे हुये भाग का भार और संतुलित पिंड का भार उतने द्रव के भार बराबर होता है जो पिंड का डूबा हुआ भाग विस्थापित करता है।

दिशा बोध

दान

1. गरीबों को देना ही दान है, और किसी को देना उधार देने के समान है।
2. दान लेना बुरा है, चाहे उससे स्वर्ग ही क्यों न मिलता हो और दान देने वाले के लिए चाहे स्वर्ग का द्वार ही क्यों न बन्द हो जाये, फिर भी दान देना धर्म है।
3. ''हमारे पास नहीं है' - ऐसा कहे बिना दान देने वाला पुरुष ही केवल कुलीन होता है।
4. याचक के ओठों पर सन्तोष जनित हँसी की रेखा देखे बिना दानी का मन प्रसन्न नहीं होता।
5. आत्मजयी को सर्व विजयों में श्रेष्ठ जय है 'भूख को जीतना; पर उससे भी बढ़कर उस मनुष्य की विजय है, जो दूसरों की क्षुधा को शान्त करता है।
6. गरीबों के पेट की ज्वाला को शान्त करनेका यही एक मार्ग है कि उनके लिये श्रीमानों को अपने पास विशेष धनसंग्रह करके रखना चाहिए।
7. जो मनुष्य अपनी रोटी दूसरों के साथ बांटकर खाता है, उसको भूख की भयानक बीमारी कभी स्पर्श नहीं करती।
8. वे निष्ठुर एवं कृपण लोग हैं , जो धन संग्रह कर-कर के उसको निकम्मा करते हैं , उन्होंने कभी दूसरों को दान देने का आनन्द हीं नहीं लिया।
9. भिक्षान्न से भी बढ़कर अप्रिय उस कंजूस का भोजन है, जो अकेला बैठकर खाता है।
10. मृत्यु से बढ़कर और कोई कड़वी बात नहीं; परन्तु मृत्यु भी उस समय मीठी लगती है, जब किसी में दान देने की सामर्थ्य नहीं रहती।

आओ सीखे : जैन न्याय

शब्द नित्यवाद की समीक्षा

भारतीय दर्शन में शब्द पर बहुत विचार किया गया है। शब्द नित्य है या अनित्य। यह गंभीर ऊहापोह का विषय रहा है। मीमांसक दर्शन शब्द को नित्य मानता है। उस मत की शब्द संबंध मूल अवधारणा है कि यदि शब्द को अनित्य माना जायेगा तो जिस शब्द में संकेत ग्रहण किया है वह शब्द व्यवहार काल में नहीं रह सकेगा। ऐसा होने से शब्द अर्थ का प्रतिपादक नहीं होगा अब यदि शब्द को नित्य माना जायेगा तो जो शब्द संकेत ग्रहण काल में हैं वही व्यवहार काल में भी रहेगा अतः शब्द अर्थ का प्रतिपादन कर सकेगा।

मीमांसक अपनी मूल अवधारणा का समर्थन करते हुये निम्न तर्क देते हैं -

तर्क 1 - प्रमाण से शब्द की नित्यता सिद्ध होती है, उस प्रत्यभिज्ञान से शब्द की नित्यता सिद्ध होती है। वही यह 'ग' है। इस प्रकार प्रत्यभिज्ञान से शब्दों में नित्यता प्रतीत होती है। प्रत्यभिज्ञान न तो अज्ञान रूप है, न तो संशय रूप प्रत्यभिज्ञान है; क्योंकि प्रत्यभिज्ञान दो लायमान नहीं होता है।

प्रत्यभिज्ञान मिथ्याज्ञान रूप भी नहीं है जो ज्ञान बाधित होता है वही मिथ्याज्ञान होता है किन्तु प्रत्यभिज्ञान निर्बाध है।

तर्क 2 - यह शब्द प्रत्यक्ष ही है क्योंकि श्रो त्रेन्द्रिय से ही यह वही 'ग' है यह ज्ञान उत्पन्न होता है। यह ज्ञान स्मरण पूर्वक होने पर भी इन्द्रिय और अर्थ का संबंध होने पर भी होता है अतः यह प्रत्यक्ष ही है।

तर्क 3 - शब्द उच्चारण का जनक नहीं अभिव्यंजक है अतः शब्द नित्य है। अर्थात् उच्चारण के पूर्व विद्यमान शब्द ही व्यक्त होता है।

तर्क 4 - अनुमान प्रमाण से भी शब्द के नित्यता सिद्ध होती है क्योंकि शब्द श्रवणेन्द्रिय का विषय है जो-जो श्रवणेन्द्रिय का विषय होता है वह-वह नित्य होता है जैसे- शब्दत्व।

तर्क 5 - वाचक शब्द नित्य होता है क्योंकि वह वाच्य वाचक रूप संबंध बल से ज्ञान कराता है। जो संबंध बल से ज्ञान नहीं कराता वह अनित्य होता है।

तर्क 6 - अर्थापत्ति प्रमाण से शब्द के नित्यता सिद्ध होती है। शब्द नित्य है यदि वह अनित्य होता है तो अर्थ का बोध नहीं कराता, शब्दों के समानता सिद्ध नहीं होती। अतःअर्थापत्ति सेशब्द की नित्यता सिद्ध होने मेंकोई बाधा नहीं है।

मीमांसक विचारकों के शब्द नित्य सिद्ध करने वाले समस्त तर्कों को सुनने के बाद जैन दार्शनिक मीमांसक के तर्कों को मूल से ही अस्वीकार करते हैं। शब्द को अनित्य मानते हुये अपने तर्क देते हैं। वे तर्क इस प्रकार हैं -

तर्क 1 - यह 'वही गकार है' इस प्रत्यभिज्ञान के द्वारा शब्द का नित्य सिद्ध करना विचारपूर्वक कथन नहीं है। यह प्रत्यभिज्ञान सदृश्य मूलक है। अतः उससे गकार का एकत्व सिद्ध नहीं किया जा सकता है। नख कट जाने के बाद पुनः उत्पन्न हुआ यह वही पुराना नख है, नहीं कहा जा सकता है। नख में एकत्व सिद्ध नहीं होता है। शब्द के कारण तालु आदि का संयोग विभाग वगैरह का भी उत्तरोत्तर क्षय देखा जाता है। अतः शब्द भी प्रतिसमय अन्य-अन्य होता है। इसलिये शब्द एक नहीं है।

मीमांसक कह सकते हैं तालु आदि का संयोग और विभाग शब्द को व्यक्त करने वाली वायु को उत्पन्न करता है शब्द को वही इस मीमांसक के वाचक तर्क का उत्तर देते हुये जैनाचार्य कहते हैं तो गत्ती

तेरम और आग के संयोग से भी दीपक उत्पन्न नहीं होता है। किन्तु दीपक को व्यक्त करने वाली वायु उत्पन्न होती है।

शब्द की नित्यता प्रत्यभिज्ञान से सिद्ध नहीं होती है, क्योंकि शब्द को हम प्रत्यक्ष से उत्पन्न और नष्ट होते हुये देखते हैं। प्रत्येक प्राणी को इन्द्रिय व्यापार के बाद ही प्रतीति होती है, यह वही शब्द है, यह प्रत्यभिज्ञान सादृश्य मूलक होने से मिथ्या है। अतः वह शब्द नित्य सिद्ध नहीं हो सकता है।

उच्चारण की दृष्टि से शब्द क नित्य सिद्ध नहीं हो सकता है।

शब्द उच्चारण से पहले अनुपलम्भ क्यों होता है ?

1. क्या इन्द्रिय का अभाव होने से शब्द उच्चारण के पहले अनुपलम्भ होता है। यदि शब्द इन्द्रिय अभाव के कारण अनुपलम्भ माना जायेगा तो उच्चारण के बाद शब्द का ज्ञान नहीं होना चाहिये। संभवतः कहा जायेकि उच्चारण से पहले शब्द की ग्राहक श्रोत्र इन्द्रिय नहीं थी उच्चारण के समय ही शब्द के साथ इन्द्रिय उत्पन्न हो जाती है तो यह संभावना प्रतीति विरुद्ध ही है।

2. क्या शब्द के निकट होने से उच्चारण के पहले शब्द अनुपलब्ध रहता है ?

शब्द नित्य और व्यापक हो तो वह सर्वत्र ही पाया जायेगा। अतः यह संभावना भी असिद्ध है।

3. शब्द के आवृत्त होने से उच्चारण के पहले शब्द अनुपलब्ध होता है। यह विकल्प तर्क भी ठीक नहीं हैं, क्योंकि जब शब्द नित्य है और एक स्वभाव वाला है तो वह आवृत्त हो नहीं सकता है। दृश्य स्वभाव छोड़कर अदृश्य स्वभाव स्वीकार किये बिना कोई भी नहीं हो सकता है। ऐसा मानने पर कोई नित्य एक स्वभाव वाला नहीं रह सकता है।

4. व्यंजक व्यापार के पहले शब्द का अस्तित्व किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता है।

शब्दों के आवरण मानने पर आवरण की स्थिति दृश्य रूप होगी या अदृश्य रूप होगी, नित्य रूप होगी या अनित्य रूप होगी, व्यापक रूप होगी अथवा अव्यापक रूप होगी, एक रूप होगी या अनेकरूप होगी।

क्र.	शब्द के आवरण को	बाधा
1.	दृश्य रूप मानने पर	प्रत्यक्ष प्रमाण से प्रतीति का अभाव है यदि प्रत्यक्ष प्रतीति होती है तो विवाद ही नहीं होता।
2.	अदृश्य मानने पर	उसका अस्तित्व कैसे स्वीकार किया जा सकता है। इतरे तराश्रय दोष आता है।
3.	नित्य रूप मानने पर	शब्द की कभी उपलब्धि नहीं हो सकेगी।
4.	अनित्य रूप मानने पर	एक बार नष्ट होने पर पुनः उत्पन्न होने का कौन-सा कारण होगा।
5.	व्यापक रूप मानने पर	असंभवदोष क्योंकि आवरणरूप वायु अव्यापक है यदि वायु को व्यापक मान लेंगे तो शब्द व्यापक और व्यापक तो आवृत्त कौन-किसको करेगा ?
6.	अव्यापक रूप मानने पर	उपरोक्त दोष
7.	एक रूप मानने पर	एक शब्द की उपलब्धि होने पर सब शब्दों की उपलब्धि होगी।
8.	अनेक रूप मानने पर	आवरण भेद और व्यंजक रूप नहीं बनता क्योंकि शब्दों का एक देश और एक ही इन्द्रिय होती है तथा शब्द की व्यंजक ध्वनि किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं होती है।

अर्थापत्ति प्रमाण सेशब्द की नित्यता असिद्धि -

मीमांसक मानते हैं कि शब्द नित्य है वह उत्पन्न नहीं होता है, केवल संस्कार ही किया जाता है। यदि ध्वनियाँ न होती तो वह विशिष्ट संस्कार न होते।

जैनाचार्य मीमांसकों के संस्कार संबंधी धारणा को खंडित करते हुये स्पष्ट करते हैं।

स्पष्टीकरण -

क्र.	**शब्द संस्कार से आशय**	**बाधा**
1.	शब्द की उपलब्धि रूप मानने	ध्वनि अस्तित्व कैसे माना जा सकता है, क्योंकिशब्द की उपलब्धि तो शब्द और श्रोत्र के होने पर होती है।
2.	शब्द में किसी अतिशय का देखा जाना है तो शब्द से	शब्द कुछ भी नहीं रहेगा और अतिशय के रहने पर भी शब्द सुनाई नहीं देगा। अतिशय भिन्न
3.	शब्द से अतिशय अभिन्न है	अतिशय की तरह शब्द भी उत्पन्न हुआ ही मानना होगा और शब्द अनित्य ठहरेगा।
4.	ध्वनियाँ श्रोत्र देश में ही शब्द का संस्कार करती है अथवा सर्वत्र	यदि ध्वनियाँ श्रोत्र देश में शब्द का संस्कार करेगी तो शब्द अव्यापक होजायेगा और शब्द निरंशता का घात हो जायेगा।
5.	शब्द के स्वरूप की पुष्टि रुप संस्कार	नित्य शब्द का स्वभाव नहीं बदला जा सकता है।
6.	व्यंजकों की निकट रुप संस्कार	फिर तो सर्वत्र सर्वदा सब लोग शब्द सुन सकेंगे।
7.	आवरण का हट जाने रूप संस्कार	एक साथ सब शब्दों की उपलब्धि होन का प्रसंग।

इन्द्रिय संस्कार रूप अभिव्यक्ति की अविचारपूर्ण है क्योंकि श्रोत्र का एक बार संस्कार होने पर एक साथ समस्त शब्दों को ग्रहण करने का प्रसंग आता है।

उभयरूप संस्कार मानने पर शब्द और इन्द्रिय संस्कार में दिये गये सभी दोष आते हैं। शब्द तालु आदि के व्यापार से उत्पन्न होता है।

उच्चारण के पश्चात् गकार आदि का नाश प्रत्यक्ष से देखा जाता है। गकार आदि के नित्यपने का अनुमान अबाधित नहीं होता है। इस तरह से बिजली आदि के भी नित्यपना सिद्ध हो जायेगा। शब्द को नित्य मानना प्रतीति विरुद्ध है। मीमांसकों ने ध्वनि के उदात्त आदि धर्म श्रवण के विषय होने से नित्य माना है। यदि उदात्त आदि धर्म श्रवणेन्द्रिय के विषय नहीं है तो श्रोत्र के द्वारा शब्दगत धर्म रूप उनकी उपलब्धि नहीं होना चाहिये।

तर्क - विभिन्न देश और काल में जो गोशब्द आदि पाये जाते हैं वे सब एक ही गो के विषय है किन्तु यह तर्क ठीक नहीं क्योंकि लिपि रूप और गोशब्द बुद्धि से व्यभिचार आता है।

तर्क - जो गोशब्द कल था वही आज भी है यह तर्क भी ठीक नहीं है, क्योंकि कल के गोशब्द में आज के गोशब्द में भिन्नता प्रत्यक्ष सिद्ध है। अन्यथा कल के और आज के विद्युत प्रकाश को एक मानना पड़ेगा।

शब्द नित्य है अन्यथा उससे अर्थ बोध नहीं हो सकता है। यह भी तर्क गलत है क्योंकि धर्म आदि अनित्य सदृश्यता के कारण अनित्य धूम सेअग्नि का ज्ञान होता है।

निष्कर्ष - अतः शब्द अनित्य है क्योंकि वह कार्य रूप है।

जैन धर्म में दीक्षा डगर कठिन होती है

✻ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ✻

भौतिक जीवन के अलावा आत्मकल्याण करना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य हैं कारण यह मानव जीवन से ही आप मुक्त होकर निर्वाण या मोक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं।

धन, दौलत, आराम और परिवार, यानी कि एक तरह से देखा जाये तो कुल मिलाकर जिंदगी के सारे सुख। अगर किसी की जिंदगी में ये सब कुछ हैं, तो भला इससे अच्छी जिंदगी और किसकी हो सकती है?

लेकिन शायद ये सारे सुख एक इंसान के लिये तब बिल्कुल बेकार हो जाते हें, जब वो दीक्षा लेता है। दीक्षा यानि दुनिया की सारी मोह-माया त्याग कर अपना पूरा जीवन दिगम्बर बनकर भगवान की शरण में गुजार देना।

हालांकि, आपने अक्सर कहीं ना कहीं ये जरूर सुना होगा, कि किसी करोड़पति ने अपनी सारी संपत्ति को दान करके सन्यास ले लिया, या फिर किसी बच्चे ने अपनी पढ़ाई, दोस्त सब कुछ छोड़कर सन्यासी का जीवन ग्रहण कर लिया। और तो और आपने अक्सर ऐसे उदाहरण जैन समुदाय में ही सुने होंगे, लेकिन क्या कभी खाली बैठे आपने ये सोचा है कि ऐसा क्या खास है जैन समुदाय की इस दीक्षा में, जिसके चलते दुनिया की कोई माया या फिर किसी भी सुख का बंधन दीक्षा लेने वाले किसी इंसान को बांध नहीं पाता। जब आत्म कल्याण का बोध जाग जाता हैं तब यह क्षण भंगुर संसार नीरस लगने लगता हैं।

जैन समुदाय भारत समेत पूरी दुनिया में अल्पसंख्यकों की सूची में गिना जाता है। लेकिन इसके बावजूद भी दुनिया के सबसे ज्यादा अमीर लोग आपको जैन समुदायों के ही मिलेंगे, एक जानकारी के अनुसार जैन धर्म बेल्जियम की सबसे अमीर कम्युनिटी माना जाता है। इतना ही नहीं, दुनिया का करीब 60 प्रतिशत हीरे का बिजनेश जैन धर्म के लोग ही चलाते हैं, जहां एक तरह कुछ आंकडे ये बताते हैं कि, भारत में सबसे ज्यादा शिक्षित लोग जैन समुदाय में ही पायें जाते हैं तो वही दूसरे तरफ कई आंकडों के अनुसार सबसे ज्यादा सन्यासी युवा और बच्चे भी इसी समुदाय के होते हैं।

वैसे तो जैन धर्म की दीक्षा को समझने के लिये सबसे ज्यादा जरूरी है इसकी मूल भावना को समझना, और इसको समझने के लिये सबसे पहले हम आपको बताते हैं कि, आखिर क्या है जैन धर्म का मतलब।

5 सिद्धांतों पर आधारित जैन धर्म- जैन वो होते हैं, जो जिनके अनुयायी हों और शब्द का अर्थ होता हे जिन्होंने अपने मन, वाणी और अपनी काया को जीत लिया हो। उन्हें कहा जाता है जिन। और एक जिन अनुयायी की पहचान ही होती हैं, वस्त्र-हीन तन, शुद्ध शकाहारी भोजन ओर मन से साफ और निर्मल वाणी। जैन धर्म में बहुत नियम सिद्धांत होने के कारण जैन दर्शन बहुत वृहद और सम्पन्न हैं।

जैन धर्म 5 सिद्धांतों के आधार पर चल रहा है। जिनमें पहला आधार हैं अहिंसा। ये हिंसा के बिल्कुल खिलाफ हैं, इसके अनुसार हम किसी भी इंसान को जाने-अनजाने किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकते है। लड़ाई- झगड़ा या फिर किसी के लिये नफरत की भावना रखना

इसके आधारों में शामिल नहीं है।

दूसरा सिद्धांत है सच और सच का सीधा सा मतलब है कि सही और गलत में से हमेशा सही को चुनना।

तीसरा सिद्धांत है अचौर्य, यानि की, अपने शरीर और मन को मैं ना मानना।

चौथा सिद्धांत ब्रह्मचर्य की राह पर चलना सिखाता है। तीनों सिद्धांतों यानि की अहिंसा, सत्य और अचौर्य से मिलकर बना है।

पांचवे और आखिरी सिद्धांत की, जिसका सीधा सा मतलब है किसी भी वस्तु, व्यक्ति या फिर विचार का संचय ना करना यानि अपरिग्रह, इन पांचों सिद्धांतों को अपनाने के बाद ही महावीर को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

वैसे तो जैन धर्म भी बाकी धर्मों की तरह यही संदेश देता है कि, न तो किसी के बारे में सोचे, और ना ही किसी का बुरा करें, मगर इस धर्म में सनातन धर्म की तरह चुपचाप दीक्षा नहीं ली जाती हैं, बल्कि जैन धर्म में सभी रिश्तेदारों और समाज को बुलाकर एक समारोह का आयोजन किया जाता है। जिसमें लड़के साधु और लड़कियां साध्वी बन जाती हैं। ये समारोह बिल्कुल शादी के समारोह जैसा ही होता हैं, जहां पर दीक्षा लेने वाला लड़का हो या लड़की दोनों को हल्दी और मेंहदी लगाई जाती हैं, और फिर शादी की ही तरह पूरा मंडप सजाया जाता है, लड़कियों को दुल्हन की तरह तो लड़कों को नये और सबसे अच्छे कपड़े पहनाकर तैयार किया जाता है। फिर घर से लेकर समारोह स्थल तक बैंड-बाजों के साथ नाच-गाकर बारात निकाली जाती है, और बस यहीं आखिरी बार घर वालें बेटी या बेटा को आखिरी बार विदा कर देते हैं।

समारोह स्थल पर जैन अनुयायी और मुनि मौजूद होते हैं। जहां एक आसन पर दीक्षा लेने वाले इंसान को बैठाया जाता है, ओर बस वहाँ वो एक-एक करके अपने पूरे श्रृंगार को उतार देता हैं, जहां एक तरफ इस परंपरा के चलते पुरुष वस्त्र त्याग देते हैं, तो वहीं महिलायें हाथ की बनी हुई सफेद सूती साड़ी लपेट लेती है। जिसके बाद गुरुओं से दीक्षा ली जाती है और फिर अपने घर-परिवार को कभी मुड़कर नहीं देखा जाता। लगभग दो वर्ष प्रशिक्षण के बाद योग्य पाये जाने पर माता पिता तथा गुरुजी/द्वारा जैन साधु/साध्वी बनने की आज्ञा दी जाती है। फिर वह प्रत्याशी निर्धारित रीति रिवाजों के अनुसार स्थानीय जैन समाज के समक्ष जैन मुनि बनाया जाकर उसी समूह में शामिल किया जाता है, वस्त्र परिग्रह है। जैन मुनि को शरीर के प्रति मोह नहीं होने से शरीर की देखभाल करने का भाव नहीं आता। और सहज ही वस्त्र आदि परिग्रह का त्याग हो जाता है। जैन धर्म में मुनि वस्त्र रहित ही होते है। जैन साधु अपरिग्रह को मानते हैं।

इस दीक्षा का सबसे मुश्किल और जरूरी पड़ाव केश लोचन होता है। केश लोचन यानि की बिना किसी कैंची या रेजर की मदद से खुद अपने सिर के बालों को नोंच कर उखाड़ देना। और ये पूरी प्रक्रिया सबसे ज्यादा दर्द देने वाली होती है। इतना ही नहीं कई बार तो सिर में जख्म तक हो जाते हैं। लेकिन इसके बावजूद भी बाल उखाड़ने का क्रम जारी रहता है। और दीक्षा के बाद सभी मुनि और साध्वी अधिकतम् हर चार माह में केश लोचन करते हैं । और तो और पुरुष अपनी दाढ़ी-मूंछों के बाल भी इसी तरह उखाड़कर निकाल देते हैं। केश लोचन के पहले साधु-साध्वी शरीर को राख से रगड़ते हैं, फिर गुच्छों में शरीर के बालों का लोचन करते हैं। आचार्य श्री ने कहा कि दिगंबर साधु की पहचान मोर पंख की पिच्छी है। पिच्छी मोर द्वारा छोड़े गये पंखों से निर्मित है।

दिगंबर साधु इसलिये मोर पंख का उपयोग करता हैं, क्योंकि उसमें पांच गुण हैं, मृदु, कोमल, निष्पृह, अहिंसक और बाधा से रहित। इसी से दिगंबर मुनि प्राणियों की रक्षा करते हैं जो संयम का उपकरण है।

दीक्षा ग्रहण करने के बाद तो शुरुआत होती है असली चुनौतियों की। जैन धर्म में दीक्षा लेने के बाद कई तरह के ठोस नियमों को पालन करना पड़ता है, 24 घंटे में आहार लेना, पड़गाहन, विधि से नवधा भक्ति पूर्वक आहार लेना और तो और अगर आहार में चींटी बाल या फिर कोई अपवित्र पदार्थ आ जाये तो उसी वक्त साधु आहार छोड़कर बिना पानी पिये ही चले जाते हैं।

सन्यासी बनना जितना आसान केवल देखने भर से लगता है उतना ही ज्यादा हकीकत में मुश्किल होता है। जहां हम चार कदम की दूरी भी बिना किसी वाहन के तय नहीं कर पाते वहीं जैन साधु मीलों का रास्ता बिना पैरों में किसी चप्पल के पैदल तय कर लेते हैं। तो वहीं ना तो इनका कोई घर होता है, ना की कोई ठिकाना, इन्हें कहीं भी ज्यादा दिनों तक रूकने की भी अनुमति नहीं होती है।

ज्यादा संख्या में बच्चों को दीक्षा लेना। इस धर्म में ज्यादातर दीक्षा लेने के लिये बच्चे सामने आते हैं और वो भी ऐसे बच्चे जिनमें ना तो सही गलत की समझ होती है, और ना ही सन्यास को ढंग से समझ पाने की। यह चलन श्वेताम्बर संप्रदाय में होता है, पर दिगम्बर संप्रदाय में पहले ब्रह्मचारी व्रत धारण करके आश्रम या संघ में रहना पड़ता है इस दौरान अध्ययन, नियमों का पालन सिखाया जाता हैं और गुरु द्वारा परीक्षित होने पर भी दीक्षित किया जाता हैं वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त मुनि और वैराग्य पथ पर चल रहे हैं किसी भी धर्म में मोक्ष हासिल करने के लिये लोग संत साधु या सन्यास की राह चुनते हैं, इस मार्ग में किसी को कोई बलात या हठात दीक्षा नहीं दिला सकता। जब तक की माँ बाप से बिना अनुमति दीक्षा नहीं दी जाती है।

शिथिलाचार का यहाँ कोई स्थान नहीं है, इसके लिये गुरु और कभी कभी समाज भी इसे स्वीकार नहीं करने देती इस मार्ग पर चलने वाले मुनि, साध्वियाँ बिना किसी राग द्वेष या मोह से प्रभावित नहीं होते और अपने आत्मकल्याण में अग्रसर होकर समाधिमरण या जागृत, सचेत अवस्था में जीवन पर्यन्त अंतिम क्षण तक आत्मलीन रहते हैं, इन्हें पंच परमेष्ठियों में समावेश किया गया है।

असिधारा पर चलने जैसा मार्ग हैं और यह वीरों या क्षत्रियों का धर्म हैं कायरों का कोई स्थान नहीं है।

24 अक्टूबर 2021 को पिच्छी परिवर्तन

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	स्थान	पिच्छी प्राप्तकर्ता
01	निर्यापक मुनि नियमसागरजी	तिरेहट्टी होई कर्नाटक	
02.	मुनि श्री वृषभसागर जी महाराज	तिरेहट्टी होई कर्नाटक	
03.	मुनि श्री अभिनंदनसागर जी	तिरेहट्टी होई कर्नाटक	
04.	मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज	खानियाधाना	श्रीमती इंन्द्रा सुदर्शन जैन खिरकिट वाले
05.	एलक श्री क्षीरसागर जी महाराज	खानियाधाना	श्रीमती लक्ष्मी अजित जैन पिपरौद वाले
06.	मुनि श्री विशदसागर जी महाराज	इटारसी	श्रीमती सपना मनीष जैन इटारसी
07.	मुनि श्री निराकुल सागरजी महाराज	इटारसी	श्रीमती कल्पना दीपक जैन पटवा परिवार

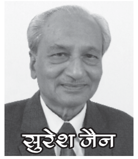
सुरेश जैन

क्रमांक-9 वरिष्ठ नागरिक

हर पल की सावधानी

जीने की कला तथा बुढ़ापे की सावधानी- जीने की कला से वंचित बुजुर्ग व्यक्ति जीवन के उस समग्र अनुभव से वंचित रह जाता है जिसके अभाव में जीना, न जीना बराबर हो जाता है। बुढ़ापे का जीवन जीने की कला में निहित है। जिस किसी भी तरह, अनगिनत तौर-तरीकों से जीते रहने का नाम जीवन नहीं है। दरसल जो बुजुर्ग जीने की कला जानते हैं, केवल वही यथार्थ में जीते हैं। जीवन का क्या अर्थ हैं ? क्या है हमारे होने का अभिप्राय ? हम क्या होना और क्या पाना चाहते हैं ? इन सवालों को ठीक-ठीक उत्तरों में ही जिंदगी का रहस्य समाया है। यदि जीवन में गंतव्य का बांध न हो, तो भला गति सही कैसे हो सकती है, और यदि कही पहुंचना ही न हो, तो संतुष्टि कैसे पाई जा सकती है।

जो बुजुर्ग जीवन जीने की कला से वंचित है, समझना चाहिये कि उनके जीवन में कोई दिशा नहीं है। उनके समस्त अनुभव व्यर्थ रह जाते हैं। उनसे कभी भी उस ऊर्जा का जन्म नहीं हो पाता, जो कि ज्ञान बनकर प्रकट होती है। जीने की कला से वंचित व्यक्ति जीवन के उस समग्र अनुभव से सदा के लिये वंचित रह जाता है, जिसके अभाव में जीना और न जीना बराबर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन उस वृक्ष की भांति है जिसमें न तो कभी फूल लग सकते हैं और न फल। ऐसा व्यक्ति कभी भी आनंद की अनुभूति नहीं कर सकता। आनंद की अनुभूति जीवन को कलात्मक ढंग से जीने, उसे समग्रता में अनुभव करने पर होती है। जीवन में यदि आनंद पाना है, तो जीवन को फूलों की माला बनाना होगा। जीवन के समस्त अनुभवों को एक लक्ष्य के धागे में कलात्मक रीति से गूंथना होगा। जो जीने की कला को नहीं जानते, वह जिंदगी की सार्थकता से वंचित रह जाते हैं।

सुकरात युनान के जनप्रिय दार्शनिक थे। वह वक्ता भी अच्छे थे। सारे शहर का चक्कर लगाना, लोगों से तरह-तरह की बातें करना और सुनना उनका नित्य का काम था। एक दिन जब वह शहर में घूम रहे थे, उन्हें एक युवक मिला। युवक ने उन्हें नमस्कार किया और पूछा आप मेरे घर पर पधार कर मुझे कृतज्ञ करेंगे। युवक सुकरात को अपने घर ले गया। खूब आदर सत्कार के साथ उन्हें कुर्सी पर बिठाया और सामने एक चारपाई डाल कर उसे अपने वृद्ध पिता को लाकर बिठा दिया।

अपनी आदत के अनुसार, सुकरात ने उस वृद्ध से बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की अनेक बातें पूछ डाली। सब कुछ सुनकर संतोष व्यक्त करते हुये सुकरात ने कहा, तुम्हारा आज तक का जीवन तो बहुत अच्छा ही कहा जायेंगा। अब जरा यह बताओ कि तुम्हारा बुढ़ापा कैसे गुजरा कैसे गुजर

रहा है। मेरी रूचि उसी में है।

बूढ़े व्यक्ति ने कहा, अपनी सारी जिंदगी में खून-पसीना एक करके जो धन सम्पत्ति और कीर्ति कमाई थी, वह पुत्र को दे डाली है। अब तो लड़का जहां बैठाता है, वहीं बैठता हूँ जो खिलाता है, सो खा लेता हूँ। और उसके बच्चों से मन बहलाता हूँ। उसके काम में कोई बाधक नहीं बनता, वह कहीं कोई भूल भी कर बैठे तो भी बोलता नहीं हूँ। हाँ, अगर लड़का कोई सलाह मांगने आता हैं, तो जरूर अपनी जिंदगी के सारे अनुभवों का निचोड़ उसे दे डालने में कोई कोताही नहीं बरतता। फिर वह मेरी सलाह के अनुरूप चलता है या नहीं, यह मैं कभी नहीं देखता और पुनः भूल करने पर उसे उलाहना भी नहीं देता, लेकिन यदि फिर सलाह मांगने आये तो जो मैं पहले कह चुका था, वहीं फिर कहता हूँ। इस तरह में अलमस्त हूँ।

उस वृद्ध पिता की बातें सुनकर तत्त्वज्ञानी सुकरात को बहुत आनंद आया और उसने वृद्ध का हाथ थाम कर कहा बुढ़ापे में किस तरह जीना चाहिये यह जीने की कला तुम्हें सचमुच मालूम है। इसके बाद उस वृद्ध पिता ने फिर कहा कि ताली सदैव दोनों हाथों से बजती है। पुत्र ने भी अपने बूढ़े पिता को कभी भार नहीं माना अपितु अपना भाग्य माना है। वह कहता है बूढ़ा पेड़ फल तो नहीं देता पर छाया तो देता है। इस प्रकार हमारी हँसी खुशी से गुजर रही है। हर पल सावधान रहता हूँ। किसी भी प्रकार की परिवार में दखल-अंदाजी बँद कर दी है तथा हाय यह मेरा है- ऐसा कहना बिल्कुल छोड़ दिया है।

कविता

प्यार की मूरत माँ

असीमित प्यार की मूरत, मेरी माँ ही तो होती है
दर्द गम के पलों में भी, मुझे माँ देवी सी दिखती है
कभी जीजा सी माँ बनकर, तरासे हीरा संताने
एक मेरे ही तो खातिर, हजारों मन्नते माने
एक शिल्पी सी माँ बनकर, मूर्ति सुन्दर सी गढ़ती है।
हुनर देती जख्म लेती, सन्तानें केन्द्र माँ की है
साथ हर पल निभाती है, ये जिंदगी देन माँ की है
और हम भूल जाते हैं, माँ ही सब पाप धोती है
माँ के आँचल क्या जादू, सभी गम दूर होते है
माँ के चरणों में बैठो तो, सभी मद चूर होते हैं
जो खुशियों से भरी हर दम, नहीं माँ ईश्वर होती है।

कहानी

बदली भाषा

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

सावन का महीना था रिम-झिम वारिश हो रही थी चारों तरफ हरियाली छाई थी सूखे बाजार में भी धीरे-धीरे रौनक बढ़ रही थी रानी अपनी लान में चहल कदमी कर रही थी बार-बार पानी की रिमझिम गिरती फुहार देख कर निरन्तर आनन्दित हो रही थी रीना अपनी नन्हीं एकलौती बेटी के जागने की प्रतिक्षा कर रही थी अभी रीना की बेटी भाषा मात्र 6 वर्ष की है भाषा पर रीना को बहुत लाड़ उमड़ता है जब तक रीना भाषा को दिन में चार बार दुलार नहीं कर लेती तब तक उसे चैन नहीं पड़ती यद्यपि उसके पति देव सचिन सदैव टोकते रहते कि बच्चों को प्यार भीतर से करो दिखावे से नहीं प्यार और प्रेम का अधिक प्रदर्शन करने से बच्चे जिद्दी और चिढ़ू बन जाते हैं परन्तु रीना अपनी आदत से मजबूर थी वह भाषा के प्रति अत्याधिक आकर्षित रहती थी। माँ की ममता को सचिन सही दिशा देने का प्रयास करता था परन्तु दिशा शून्य ममता भावना शून्य ममता लक्ष्य विहीन ममता बच्चों को सही मागदर्शन नहीं कर सकती हैं परन्तु माँ की ममता जो हृदय से उत्पन्न होती है उसे रोकपाना भी तो कठिन काम है क्योंकि ममता तो ममता होती है यद्यपि रीना उच्च शिक्षा प्राप्त व्यवहार कुशल एक सदग्रहणी के रूप में कर्त्तव्य निष्ठ महिला है फिर भी ममता के आवेग में पुस्तकों की पढ़ाई धरी की धरी रह जाती है रीना व्यवहार कुशल महिला होने के बाद भी भाषा के सामने घुटने ही टेक देती न जाने भाषा में ऐसा क्या है कि उसके लाड़ और दुलार में रीना पागल हो जाती यद्यपि भाषा की बदलती चेष्टाओं से रीना भी कुछ असहज सी होने लगी क्योंकि भाषा में दिन प्रतिदिन कठोरता आती जा रही है। इस बात को लेकर रीना खूब चिंतित रहने लगी।

जब रीना आसमान के उमड़ते घुमड़ते बादलों को देख रही थी तभी अखबार वाले ने ऊपर अखबार फेंक दिया रीना को अखबार पढ़ने का प्रारंभ से ही बहुत शौक रहा है रीना ने कई बार अखबार में अपनी

रेसिपी भेजने का प्रयास किया किन्तु संयोग की बात है कि उसकी एक बार भी रेसिपी नहीं छपी इस पर सचिन सदैव ताने मारता रहता था। लिखो तो कुछ ऐसा लिखो कि जो किसी के पढ़ने लायक हो तो रीना भी कहती कभी न कभी तो मेरी लिखी हुई रेसिपी छपेगी भला प्रयास करने में क्या बिगड़ता है वह आज अखबार को पलटकर देख रही थी कि उसी समय उसके हाथ मधुरिमा लग गई। मधुरिमा पढ़ने में रीना को सदैव में रूचि रही है आज उसने एक हेडिंग पढ़ा जिसमें लिखा था हर घर में बन रहा है एक नया मैदान इस लेख पर रीना की दृष्टि स्थिर हो गई लगातार इस लेख को रीना पढ़ती ही जा रही थी जिसमें रीना ने पढ़ा कि।

कोरोना काल में जब लोग अकेले पढ़ रहे थे तब परिवारों में ऑनलाईन पढ़ाई और वीड़ियों गेम का ग्लेमर खूब बढ़ गया था हर कोई अनायासी वीडियो गेम से जुड़ रहा था वीड़ियो गेम शौक की अपेक्षा व्यसन का रूप धारण कर रहा था बच्चे मैदान की अपेक्षा मोबाइल या टीवी से चिपक चुके थे किक्रेट वैडमिंटन फुटबॉल छुपा-छुपी आदि खेल सभी बंद हो चुके थे, मोबाईल खेल में बच्चे आपाद कंठ डूब चुके हैं हालात यह है किं बड़े बच्चे बूढ़े व महिलायें सभी मोबाइल गेम में मोबाईल पर ही चिपक गये हैं लूडो, चेस, कैरम जैसे खेल सब मोबाईल पर ही खेलने लगे हैं जिसका परिणाम अच्छा नहीं हो सकता है। मोबाईल गेम की अंधी दौड़ में शामिल होकर बच्चे सेहत और समय दोनों नष्ट कर रहे हैं कई बार तो उनकी जान के लिये खतरा भी यह गेमिंग बन जाते हैं आगे रीना ने पढ़ा।

मोबाईल के स्मार्ट होने के साथ-साथ वीड़ियो गेम भी अपना दायरा बढ़ा रही है कम्प्यूटर पर ऑनलाईन वीडियो गेम प्ले स्टेशन और वीडियो कंशोल जैसे तमाम जरिये गेम खेलने के हैं रीना ने आगे लेख को पढ़ना जारी रखा और उसने पढ़ा असली मैदान के खेलों से विपरीत मोबाईल का खेल शरीर पर दुष्प्रभाव डालता है और यह खेल मानसिक रूप से भी कमजोर बनाता है वीडियो गेम का खिलाड़ी असली जिन्दगी से बहुत दूर चला जाता है। ऐसे में यह वीड़ियों गेम व्यसन बन जाता है। इस व्यसन से व्यक्ति तभी दूर हो सकता है जब व्यक्ति उससे स्वयं दूर होना चाहे अन्यथा नहीं।

रीना ने इस लेख के पहले पैराग्राफ को पढ़कर सोचना प्रारंभ किया कि मैंने अपनी बेटी भाषा को स्वयं ही तो वीडियो गेम से लगाया है अपने काम निर्वाद निपटाने के लिये भाषा को मैने ही तो वीडियो गेम सिखाया है अब भाषा वीडियो गेम से मोबाइल पर इतनी जुड़ चुकी है कि पढ़ाई लिखाई तो दूर अब तो वह एक कोने में बैठकर मोबाइल पर ही अंगुलिया चलाया करती है यदि उससे मैं मोबाईल छुड़ाने की कोशिश भी करती हूँ तो वह बिफर जाती है देर रात तक जागती रहती है और गेम में हारने पर वह परेशान हो जाती है अकारण गुस्सा करने लगती है जब तक उसे जीत हासिल न हो जाये तब तक वह खेलती ही रहती है और धीरे-धीरे सचमुच में भाषा की लत वीडियो गेम बन गई है।

जब वह रीना अखबार पढ़ रही थी

तभी उसके पति सचिन ने आकर रीना से कहा क्या बात है आज तो तुम सुबह-सुबह से अखबार में चिपक गई वैसे तो तुम्हारे अखबार पढ़ने का टाईम दोपहर में था पर आज क्या बात हैं कौन सी ऐसी विशेष बात अखबार में मिल गई जो तुम मुझे नाश्ता कराना ही भूल गई तब रीना ने सचिन से कुछ नहीं बोला सिर्फ इतना कहा सॉरी मैं अभी हाल नाश्ता लाती हूँ और रीना किचन में चली गई सचिन ने सोचा कि अखबार में ऐसा क्या है जो रीना आज सुबह ही अखबार पढ़ने में व्यस्त हो गई सचिन ने भी अखबार पढ़ा और मधुरिमा का प्रथम पृष्ठ देखा उसमें लिखा था ऑनलाइन और वीडियो गेम एक नशे की तरह हैं जिसके न मिलने पर व्यक्ति छटपटाता है और नियंत्रण खो बैठता है जीतने का जुनून और ऑनलाइन खेल का अच्छा खिलाड़ी बनने की चाहत बच्चों को असल दुनिया से दूर कर रही है और इसका सीधा असर पड़ रहा है मस्तिष्क और जीवन पर इस खतरनाक मैदान को समझियें क्योंकि पिछले महीनों में बड़े भी इसकी लत में उलझे हैं।

रीना नाश्ता की प्लेट टेबल पर रखकर कब चली गई सचिन को मालूम भी नहीं चला और रीना वापिस खाली प्लेट लेने आ गई रीना ने देखा अभी तो साहब वही मधुरिमा पढ़ रहे हैं और मैने पढ़ी थी रीना सचिन के बगल में सोफे प र बैठ गई और सचिन के कान में से कहा नाश्ता कर लो ऑफिस जल्दी जाना है शेष लंच में फिर पढ़ लेना। सचिन ने कहा बस हो गया मैने पूरा पढ़ लिया लेख बहुत गजब का है और आज से मैं संकल्प लेता हूँ की आधा घण्टे से ज्यादा वीडियो गेम नहीं खेलूँगा। क्योंकि सचमुच में रीना कुछ वीडियो गेम तो फ्री होते हैं पर कुछ में प्रीमियम फीचर होते हैं मैंने बेहतर खेलने के लिये ऑनलाइन जुड़े रहने के लिये और ऑनलाइन गेमर्स को हराने के लिये स्टेज पाने के लिये ताकत और हीरो को अनलॉक करने के लिये साठ हजार रूपये की रकम खो चुका हूँ। आज तक रीना मैने तुमसे यह बात छुपाकर रखी थी पर मैंने आज भी यह नहीं सोचा था। कि यह बात तुम्हें बता दूँ पर यह लेख पढ़कर मन में यह बात अचानक आ गई कि मैं भी तो 60 हजार की मोटी रकम खो चुका हूँ और रीना को धोखा दे रहा हूं। ऐसा करना मुझे आत्म ग्लानि का कारण बन गया और अपराध बोध भी हो गया।

रीना ने बोला हिना रंग लाती है पत्थर से पिसने के बाद आदमी बदलता है ठोकर खाने के बाद आप बदल गये मुझे 60 हजार जाने का कोई गम नहीं आज का मंगल प्रभात मुझे वरदान सिद्ध हो गया क्योंकि मैने आपको अपने हाथ से सिर दबाते हुये देखा है आपके चेहरे पर मैंने थकावट देखी है आपकी रात भर मैने करवट बदलते देखा है मैं यह समझती थी कि कोई ऑफिस का टेंशन है जो आप मुझे नहीं बताना चाहते थे क्योंकि आप ऑनलाइन ऑफिस का काम कर रहे थे।

सचिन बड़े गम्भीर स्वर में बोला रीना ये अच्छा रहा कि मुझे कोई बड़ी बीमारी नहीं हो पाई क्योंकि इस लेख के अनुसार डायबिटिज ब्लडप्रेशर और सेन्सीटिबटी,

डिसआर्डर होने का खतरा रहता है लत छूट भी जाती तो भी मेरी जिन्दगी चिंताजनक बन जाती है।

रीना ने कहा आप तो बदल गये पर मुझे भाषा को बदलने की जरूरत है क्योंकि जब भी मैं भाषा से मोबाइल लेती हूँ तो वह बुरी तरह से बिफर जाती है और मैं देख रही हूँ कि भाषा बहुत चिढ़चिढ़ी हो चुकी है अब इस 6 वर्ष की बच्ची को असल जिन्दगी से जोड़ना मेरा बहुत बड़ा कर्त्तव्य है।

सचिन ने कहा रीना ये तो तुम्हारी कुदरती जिम्मेदारी है तुम भाषा की माँ हो माँ ही बच्चों की सच्ची सहेली होती है और माँ। अगर बच्चों को समय देने लगे तो बच्चे अपने आप मोबाइल से दूर हो जायेंगे।

रीना ने कहा पर भाषा इतनी बोलती है और ऊदम करती है कि वह मुझे काम ही नहीं करने देती है। भगवान कसम आप तो ऑफिस चले जाते हो ओर वह तो बिल्कुल आजाद हो जाती है वह मुझसे तो बिल्कुल भी नहीं डरती है और आपके सामने तो भीगी बिल्ली बन जाती है।

रीना की बात सुनकर सचिन ने अखबार के एक पैराग्राफ पर उंगली रखकर के कहा इसे पढ़ो तुम इसमें सबकुछ लिखा है कि अपने बच्चों की मोबाइल की आदत कैसे छुडाई जा सकती है।

रीना ने बड़े अफसोस के साथ कहा सॉरी यह पैराग्राफ तो मैं पढ़ ही नही पाई चलो आप ही बता दो इस पैराग्राफ में क्या लिखा है।

सचिन ने अखबार अपने हाथ में लेते हुये कहा। इसमें लिखा है कि- यह लत बहुत नुकसान देय हैं इस बात का एहसास होना ही इस लत से मुक्ति दिलाने का पहला कदम है इसमें दूसरा सुझाव दिया गया है माता पिता उनके साथ समय बितायें उनके साथ खेलें और उनकी बातों को समझे तो धीरे-धीरे बच्चे गेम खेलने की आदत से मुक्ति पा जायेंगे। सचिन ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुये कहा कि माता पिता खुद भी मोबाइल फोन पर ज्यादा समय न बितायें क्योंकि बच्चे अभिभावकों से गेम खेलना सीखते हैं बच्चों की पढ़ाई के लिये अलग से मोबाईल दें जिसमें अतिरिक्त ऐट्स न हो बच्चे जब मोबाइल चलाने लगते हैं तो अभिभावकों को गर्व की बात लगती है लेकिन आगे जाकर यह बात परेशानी का सबक बन जाती है।

रीना ने अखबार की सब तों बहुत गौर से सुनी और पढ़ी इसके बाद रीना ने अपनी भाषा पर प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रयोग किया धीरे-धीरे भाषा भी समझ गयी और धीरे-धीरे वह इतनी समझदार हो गई कि उसने वीडियोगेम खेलना बहुत कम दिया अब भाषा अपने मुहल्ले के बच्चों के साथ छुपा-छुपी खेलने लगी धीरे-धीरे भाषा का सिर दर्द होना भी समाप्त हो गया यहाँ तक कि जो भाषा अभी तक भोजन करने में परेशान करती थी अब वह खुद मांगकर खाने लगी धीरे-धीरे भाषा की सेहत में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया अब वह बिफरती भी नहीं थी और माँ के काम में सहयोग करने लगी। एक दिन रीना ने गर्व से कहा-साहब बदल गई भाषा।

हमारे गौरव
राजकुमारी हरियाल देवी

राजकुमारी हरियब्बरसि- अपरनाम हरियाल देवी विष्णुवर्धन होयसल की सुपुत्री थी, और उसके ज्येष्ठ पुत्र त्रिभवनमल्लकुमार बल्लालदेव की छोटी बहनों में सबसे बड़ी थी। राजकुमार अपनी इस धर्मात्मा बहन से बहुत स्नेह करता था। राजकुमारी का विवाह सिंह नामक एक वीर सामन्त के साथ हुआ था और उसके गुरु देशी पुरतकणच्छ के माघनन्दी के शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तिदेव थे, जिनकी वह गृहस्थ शिष्या थी। वह गुरु भी अपनी विद्वत्ता और प्रभाव के लिये जगत्- विख्यात थे। हन्तूरू नायक स्थान के एक ध्वस्त जिनालय में प्राप्त 1130 ई. के शिलालेख से ज्ञात होता है कि उस काल में वह नगर कोंडगिनाडु के मलेवडि प्रान्त में स्थित था, और कोडगिनाडु का तत्कालीन शासक उपर्युक्त कुमार बल्लाल देव था। राजकुमारी ने अपने गुरु की प्रेरणा और भाई के सहयोग से, स्वद्रव्य से युक्त हन्तियूर नगर में एक अत्यन्त विशाल एवं मनोरम जिनालय बनवाया, जो रत्न-खचित तथा सुन्दर मणि मयी कलशों से युक्त शिखरों वाला उत्तुंग चैत्यालय था।

उक्त जिनालय में भगवान की नित्य पूजा के लिये साधुओं के आहारदान और असहाय वृद्धा स्त्रियों को शीत आदि से रक्षा हेतु आवास एवं भोजन आदि के लिये समस्त राजकरों से मुक्त कराकर बहुत सी भूमि पाई। बल्लालदेव द्वारा स्वगुरु गण्डविमुक्त सिद्धान्ति देव को पादप्रक्षालन पूर्वक राजकुमारी ने समर्पित करायी थी। इस दान शासन को मल्लिनाथ नाम के लेखक ने रचा था। और मणिभोज के पुत्र वेश्य भुजंग विरूद्धधारी शिल्पी वलकोज ने उसे उत्कीर्ण किया था।

लेख में राजकुमारी हरियल देवी की तुलना सीता, सरस्वती, सुसीमा, रूक्मिणी आदि प्राचीन महिलारत्नों के साथ की गई है और उसे पतिपरायण, चतुर्विधदान, तत्पर, विदुषि गुणवान, भगवान-अहत् - परमेश्वर के चरण नख-मयूख से जिसका ललाट एवं पलक-युग्म सुशोभित होते रहते थे और सम्यक्तव चूड़ामणि लिखा है। उपर्युक्त दान में राजकुमारी के पिता महाराज विष्णुवर्धन की सहमति थी।

कविता
कुटिया में

रचयिताः ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी

लोक गीत तर्ज

अरे भैया छुपे रहो कुटिया में , नई तो कोरोना धर दे हैं लुटिया में।
जाको कुछ नई पता चालत है ,रूप भयंकर छुप के धरत है।
आवे ने जो रे नजरिया में ,घाट ने धूमा रे बाट ने घूमो
नदिया किनारे सड़क ने घूमो। अरे मस्ती करो ने बगिया में
कोरोना की नैय्या कोई दवाई, लाखों ने देखो जान गवाई।
मोदी संदेशो धरो हियां में।

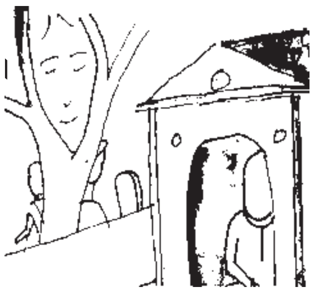

आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्धार

ब्र. अशोक भैया, लिधौरा टीकमगढ़

विद्यासागर विश्ववंद्यश्रमणं भक्तया सदा संस्तवे,
सर्वोच्चं यमिनं विनम्यपरमं, सर्वार्थसिद्धि प्रदम्।
ज्ञान-ध्यान-तपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयम्
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरम्॥

ज्ञान-ध्यान-तप में लीन, विश्व के आश्रयभूत, सत्य-शिव-सुन्दर स्वरूप विशाल हृदयी सर्व-अर्थ-रूप सिद्धि प्रदाता, सर्वश्रेष्ठ यमी विश्वबंध, मूर्तिमान श्रमण श्री विद्यासागर जी महाराज का हमेशा भक्तिपूर्वक संस्तव करता हूँ, नमोस्तु करता हूँ।

आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के पचासवें स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव पर आयोजित संगोष्ठी में **आचार्य श्री विद्यासागर जी और तीर्थोद्धार** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करूँ उससे पहले मान सरोवर के राजहंस तीर्थस्वरूप, सन्तशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में नमन करता हूँ सर्वप्रथम तीर्थ के विषय में अपना मन्तव्य स्पष्ट करना चाहूँगा।

तीर्थ शब्द का उदगम् और मान्यता- तीर्थ शब्द संस्कृत की तृ प्लवन तरणयोः धातु से थक् प्रत्यय होकर बना है, इसका अर्थ संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार मार्ग, सड़क, रास्ता या नदी में उतरने का स्थान (घाट) माना गया है, अर्थात् ऐसा दिव्य पवित्र स्थान जहाँ पर डूबकर या डुबकी लगवाकर पार उतरने या उतारने का काम किया जाता है, तीर्थ कहलाता है इसीलिये जहाँ लोग तैरते हैं या तारे जाते है, जहाँ से भवसमुद्र से पार होते हैं या किये जाते हैं वह स्थान विशेष तीर्थ कहलाता है, अतः तीर्थ तरण स्थल के साथ-साथ तारणस्थल (पार उतारने वाले) स्थान के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाले सभी धर्मों में तीर्थों की मान्यता है, वेदव्यास ने महाभारत के वन पर्व 82/96 में कहा है, **तीर्थाभिगमनं पुण्य यशैरविदिशिष्यते** अर्थात् तीर्थ यात्रा पुण्यकार्य है। यह यज्ञों से भी बढ़कर है स्वन्दपुराण के काशीखण्ड में तीर्थ को व्यापक स्वरूप प्रदान किया गया है- **दान तीर्थ दमस्तीर्थ संतोषं तीर्थमुच्यते।**
ब्रह्मचर्य परं तीर्थं तीर्थं च प्रिय वादिता॥

दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है ब्रह्मचर्य परम तीर्थ हैं और प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है। (स्कन्द पुराण काशीखण्ड 6/31)

यही कारण है कि हर सम्प्रदाय के अपने तीर्थ हैं, जो उनके किसी महापुरुष अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के स्मारक के रूप में जाने जाते हैं और प्रत्येक धर्म के धर्मानुयायी तीर्थयात्रा वन्दना के लिये बड़ी तन्मयता, श्रद्धा, भक्ति भाव से जाते हैं तथा आत्मशांति की प्राप्ति के लिये तत्पर रहते हैं इसी वजह से तीर्थस्थान शांति, कल्याण व पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के परम धाम माने जाते है।

जिनागम में तीर्थ की अवधारणा- मुक्त जीवों के चरण कमलों से स्पष्ट ऊर्जयन्त, शत्रुञ्जय, लाटदेश, पावागिरि आदि तीर्थ हैं। वे तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों के स्थान हैं। ये जितने भी तीर्थ इस पृथ्वी पर वर्त्त रहे हैं वे सब कर्मक्षय का कारण होने से वन्दनीय हैं।

मुक्तमुनिपादस्पृष्टं तीर्थ ऊर्जयन्त-शत्रुन्ज्जय लाटदेश पावागिरि तीर्थंकर पञ्चकल्याणस्थानानि यानि तीर्थानि वर्तन्ते तानि कर्मक्षय कारणानि वन्दनीयानि। (बोध पाहुड टीका 27/93/7)

जैन परम्परा के प्राचीन ग्रंथो में तीर्थ शब्द के पर्याय के रूप में क्षेत्र मंगल पारिभाषित का प्रयोग भी होता है, जिसका अर्थ है जिस क्षेत्र में जाने से अहंकार, दंभ, मोह, ममत्व बुद्धि का गलन होता है समाप्ति क्षरण होता है वह स्थान विशेष क्षेत्र यंगल कहलाता है। षट्खण्डागम में गुण परिणत आसन क्षेत्र अर्थात् जहाँ पर अनेक विभूतियों के द्वारा योगासन, वीरासन, आदि अनेक आसनों के माध्यम से अनेक प्रकार के योगाभ्यास व जितेन्द्रियता आदि गुण प्राप्त किये गये हैं , ऐसे क्षेत्र विशेष परिनिष्क्रमण क्षेत्र, केवलज्ञानोत्पत्ति क्षेत्र, और निर्वाण क्षेत्र आदि को क्षेत्र मंगल कहते हैं , इनके उदाहरण ऊर्जयन्त, गिरनार, चंपा, पावा आदि नगर क्षेत्र हैं -

तत्क्षेत्र मंगलगुणपरिणतासनपरिनिष्क्रमण-केवल-ज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाण क्षेत्रादिः । तस्योदाहरणम् -ऊर्जयन्त-चंपा-पावानगरादिः

समाधिशतक ग्रंथ में भी संसार समुद्र से तरनतारण कराने वाले, पार उतारने वाले को तीर्थ कहा गया है-

संसारोत्तरणहेतुभूतत्त्वात् तीर्थम्। (समाधिशतक टीका 2/222/24)

श्रुत और धर्मकथा को भी तीर्थ की उपमा दी गई है-

सुदधम्मो एत्थ पुण तित्थं- श्रुत धर्म तीर्थ कहा जाता है। (मूल आराधना 5/57)

आचार्य जिनसेन ने भी आदिपुराण में लिखा है-

चेष्टितं जिन नाथानां तस्योक्तिः तीर्थसंकथा।।

जो इस भव-सागर से पार करे, वही तीर्थ है, ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र देव का चरित्र ही हो सकता है तथा उस चरित्र के कथन को ही तीर्थ संकथा कहा जाता है।

बात इतनी ही नहीं, आचार्य जिनसेन ने तो धवलाकार की मान्यता की आगे बढ़ाते हुये मुक्ति के उपायभूत सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्र को ही तीर्थ के रूप में प्रस्तुत किया है, क्योंकि वे ही तीनों मिलकर मोक्षमार्ग बनते हैं व मुक्ति के साक्षात् साधन के रूप में प्रस्तुत होते हैं-

यथा- मुक्त्युपायो भवेत्तीर्थम् (आदिपुराण 2/39 भाग-1)

धवलाकार कहते हैं कि धर्म का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक् चारित्र हैं चूँकि इनसे संसार सागर से तरते हैं, इसलिये इन्हें तीर्थ कहा है, धवलाकार के ही शब्दों में-

धम्मोणाम सम्मद्दंसण-णा चरित्ताणि/ एदेहिं संसारसायरं तरंति त्ति । एदाणि तित्थं (ध. 8/3, 42/9, 2/7)

तीर्थ सर्वोदयी और सभी का कल्याण करने वाला है यह उद्घोषणा आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने युक्तयनुशासन ग्रंथ में की है- **सर्वोदय तीर्थमिदं तवैव**

हे प्रभु आपका यह सर्वोदय तीर्थ सबका कल्याण करने वाला है।

इनके अतिरिक्त कुछ स्थलों की मान्यता किसी मंदिर या मूर्ति में चमत्कार के कारण भी हो गई हैं जो न निर्वाण क्षेत्र हैं और न अन्य कल्याणक क्षेत्र ही, किन्तु जनश्रुति में आश्चर्य कारक कार्यो के कारण ऐसे क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों के रूप में जाने जाते हैं।

जैन दर्शन में तीर्थो की इस अवधारणा रूप चर्चा से दो स्वरूप हमारे सामने उभरकर आते हैं- 1. विचार तीर्थ का 2. स्थावर तीर्थ का

विचार तीर्थ वह है जो हमारी भावशुद्धि कराकर सीधे मोक्ष तक ले जाता है, इसीलिये जैन परम्परा में रत्नत्रय धर्म को भी तीर्थ की उपमा जैनचार्यो ने दी है, और इस धर्म तीर्थ प्रवर्त्तन करने वाले तीर्थ कर भगवन्त होते हैं आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र आदि ग्रंथों में अनेक स्थलों पर इसका स्पष्ट उल्लेख किया है।

निर्दोष धर्मतीर्थ का प्रवर्त्तन करने वाले धर्मनाथ भगवान को गणधर देव ने सार्थक नाम वाला कहा है। धर्मतीर्थमनद्यं प्रवर्त्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान् (स्वयंभूस्तोत्र श्री धर्मनाथ भगवान श्लोक-1)

मल्लिनाथ भगवान की स्तुति करते हुये कहा है- मल्लिजिनेन्द्र का जो अपना तीर्थ था, श्रुत या शासन था वह भी संसार समुद्र से भयभीत प्राणियों को पार उतरने के लिये अग्रश्रेष्ठ मार्ग था, इन्हीं कारणों से मैं उनकी शरण को प्राप्त होता हूँ। तीर्थमपि स्वंजनन समुद्र त्रासित सत्त्वोत्तरण पथोऽग्रम ।। (स्वयंभूस्तोत्र-मल्लिनाथ भगवान श्लोक-4) अतः भाव विशुद्धि दायक मोक्षमार्ग प्रदायक, कर्मक्षय कारक, रत्नत्रय धर्मरूप विचार-तीर्थ को जंगम और गतिमान तीर्थ की उपमा भी दी जा सकती है।

इससे इतर तीर्थंकरों के कल्याण स्थलों, सिद्ध भूमियों अतिशय युक्त स्थलों, श्रुतरूप धर्मतीर्थ और समीचीन कथारूप वचन स्थावर तीर्थ के रूप में स्वीकार किये जा सकते हैं। इसका सरल इस प्रकार से प्रतिपादित कर सकते हैं- 1. ये तीर्थस्थल स्वयं पवित्र होते हैं 2. और जो इनके संपर्क में तीर्थ आता है, उसे पवित्र कर देते हैं।

छोटे बाबा (आचार्य श्री) बड़े बाबा के प्रति समर्पण भाव- श्रमण संस्कृति के उन्नायक युगदृष्टा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बीसवीं सदी के प्रभावशाली आचार्य हैं । 10 अक्टूबर 1946 की शरद पूर्णिमा को सदलगा बेलगाँव कर्नाटक में जन्में विद्याधर ने मात्र 22 वर्ष की उम्र में आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज से राजस्थान के अजमेर नगर में मुनि दीक्षा प्राप्त कर चार वर्ष की अल्प अवधि में 22 नवम्बर 1962 को अपने गुरुवर द्वारा प्रदत्त आचार्य पद से अलंकृत हो 1 जून 1973 को गुरुवर ज्ञानसागर जी महाराज की समाधि सल्लेखना के बाद नसीराबाद राजस्थान से ग्राम नगर और तीर्थ क्षेत्रों पर समाज में हित-मित-प्रिय उपदेशों से आचरण बोध जागृत करते हुये विहार कर रहे हैं। आपके इस प्रवास से जर्जदित उपेक्षित तीर्थो का उद्धार तो हुआ ही संघ की अभिवृद्धि भी हुई।

आचार्य भगवन् ने सन् 1976 में बड़े बाबा के पहली बार दर्शन किये ओर बड़े बाबा के हो गये, एक टक बड़े बाबा को निहारते हुये बड़े बाबा को अपने मन मन्दिर का देवता बना लिया और एक मनः संकल्प सम्भवतः कर लिया कि बड़े बाबा के इस मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं, वरन इस तीर्थ का ही उद्धार हो जाये और बड़े बाबा मन्दिर में अपना आसन पा जायें । इस संकल्प पूर्ति के लिये आचार्य भगवन् ने कुण्डलपुर में सन् 1976,1977,1989,1992 और 1995 में जबलपुर दमोह में आये भूकम्प के झटे से बड़े बाबा मन्दिर में जगह-जगह दरारें आ गई और आचार्य श्री मन बड़े बाबा को जल्दी से जल्दी जीर्ण-शीर्ण ध्वसं होते हुये पुराने मन्दिर से निर्माणाधीन नये मन्दिर की वेदिका पर विराजमान करने के लिये सजग हो गया परन्तु श्रेयांसि वहुविध्नानि की युक्ति चरितार्थ हुई और अपने ही लोगों के द्वारा आये व्यवधान से कार्य की गति मन्द हो गई, चिन्ता होना स्वाभाविक है, किन्तु यह भी स्मरण में रहना चाहिये कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के समय भी रावण जैसे विघ्नकर्ता थे, किंतु इससे श्रीराम की श्रेष्ठता बढ़ती गई और प्रमाणित होती गई। शायद इसी तरह जब-जब कुंडलपुर के बड़े बाबा और छोटे बाबा के कार्य क्षेत्र में रोड़े अटकाने के तुच्छ प्रयास किये गये बड़े बाबा की प्रभुता और छोटे बाबा की कीर्ति बढ़ती ही गई। इतनी बढ़ी कि विश्व के मानचित्र में कुंडलपुर तीर्थ क्षेत्र शब्द महत्त्वपूर्ण स्थान पर अंकित हो गया। इसी बीच सन् 2001 में बड़े बाबा का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ, जिसमें सात दिन में 35 लाख लोगों ने कुंडलपुर पहुँचकर नये मंदिर को अपना समर्थन दिया। और 2003 से 2004 तक नये मंदिर का काय तीव्रगति से जारी रहा।

आचार्य भगवन् के 30 वर्षों का संकल्प उस समय पूरा हुआ जब बुन्देलखण्ड के बड़े बाबा और सम्पूर्णभारत वर्ष के प्रत्येक श्रद्धालु की अनंत आस्था के केन्द्र बिन्दु श्री आदिनाथ भगवान (बड़े

बाबा) को प्राचीन जीर्ण-शीर्ण मन्दिर से की विशाल भव्य वेदिका पर विराज मान किया। 17 जनवरी 2006 मंगलवार को बड़े बाबा को नये सिंहासन पर विराजमान करने की यह अदभुत घटना इन्सानों का कार्य कतई नहीं हो सकता, कुछ दैविक शक्तियों ने इस कार्य को अंजाम दिया होगा। यह पवित्र कार्य कैसे सम्पन्न हुआ, यह रहस्य सिर्फ स्वयं बड़े बाबा या छोटे बाबा परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ही जानते है।

किन्तु आचार्य भगवन की 30 वर्ष के मनः आठ संकल्पपूर्ति और उस समय के दृश्य से अभिभूत हृदय की उदात्त भावनाओं का प्रवाह आँखों में आई अश्रुधार से सहज ही लगाया जा सकता है। जिस घटनाद्वय के साक्षी हजारों लोग बने। बड़े बाबा के विराजमान होने के बाद 18 जनवरी 2016 को अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा था जैस सतयुग में हनुमान ने छाती चीरकर भगवान श्री राम को प्रकट किया था, वैसे ही जैन समाज ने कुंडलपुर के बड़े बाबा की भक्ति कर सिद्ध कर दिया है कि बड़े बाबा उनके दिल में बसते हैं।

बड़े बाबा मन्दिर का जीर्णोद्धार- पन्ना के राजा छत्रसाल के आर्थिक सहयोग से सन् 1957 में ब्रह्मचारी नेमीसागर के द्वारा किया गया ऐसे अनेक लोगों के द्वारा अनेक बार जीर्णो द्धार कर बड़े बाबा को संरक्षित किया गया। परन्तु आचार्य भगवन की दिव्य दृष्टि ने यह जान लिया था कि बड़े बाबा कि अतिशयकारी प्रतिमा को बचाने के लिये तथा उसके संरक्षण का पाषाण निर्मित्त नवीन जिनालय में विराजमान करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है तब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जीर्णोद्धार जो कि अल्पकालिक संरक्षण की प्रक्रिया का विचार न कर तीर्थोद्धार -दीर्घावलि के लिये स्थायी प्राचीन नागर शैली में निर्मित्त विशाल गर्भगृह, दो मंजिला विशाल गुणमंडप, श्रृंगार चौकी विशाल परिक्रमा, सिंहद्वार, मानस्तंभ और रियेक्टर पैमान पर आठ मैग्नीट्यूड गति के भूकम्प को सह सकने वाली तकनीक से इस भूकम्पनिरोधी मन्दिर के निर्माण का विचार किया, और वह विचार 17 जनवरी 2006 को बड़े बाबा के विराजमान के साथ गतिमान हुआ और मंदिर निर्माण की प्रक्रिया सतत जारी है।

निर्माण कार्य को देखकर बड़े बुद्धि जीवी, विद्वान, वास्तुकाव्य यह कहने लगे कि 6वीं 7वीं सदी के बड़े बाबा की प्रतिमा का संरक्षण तो इस निर्माणाधीन महाप्रसाद से ही होगा।

आचार्य भगवन् की इस दूरदर्शिता के कारण सही अर्थो में वे तीर्थ जीर्णोद्धारक के साथ-साथ तीर्थोद्धारक के रूप में स्थापित हो गये। आचार्य भगवन् ने मात्र कुण्डलपुर ही नहीं, अपितु सैकड़ों स्थानों को तीर्थ स्वरूप प्रदानकर उस स्थावर तीर्थ का तो उद्धार (संरक्षण) किया ही वहाँ बसने वाली समाज के भव्य जीवों के उद्धार (कल्याण) का पथ प्रशस्त किया है। अतः वे अनन्तशः अनन्त काल के लिये वन्दनीय है।

आचार्य श्री द्वारा स्थापित अन्य तीर्थ- आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज ने शास्त्र वर्णित किंतु तीर्थ चिन्ह रहित सिद्धोदय (नेमावर) और सर्वोदय (अमरकंटक) जैसे स्थानों पर उत्तुंग-भव्य-रमणीय पाषाण निर्मित विशाल जिनालयों तथा अवट धातु और पाषाण निर्मित जिनबिम्बों की स्थापना कर इन्हें तीर्थ स्वरूपता प्रदान की। साथ ही यह स्थान जन विहीन न हों इस भावना से इन तीर्थो पर सतत संयम साधना, स्वाध्याय, ध्यान, तप, जाप पूजा-पाठ जैसे कर्मक्षय के साधनों के साथ आत्मकल्याण कारक ब्रह्मचर्याश्रमों की स्थापना का मंगल आशीष प्रदान किया साथ ही जनसेवा के कार्य हथकरघा और विकलांग सेवा केन्द्रों की स्थापना जैसे महत्त्वपूर्ण उपक्रमों को शुभाशीष प्रदान किया।

इसके अलावा बीनाबारहा, रामटेक, पिसनहारी मढ़िया जबलपुर, तीर्थक्षेत्र चन्द्रगिरि डोंगरगढ़, भगवान शीतलनाथ की चार कल्याणक से पावन भूमि भद्दलगिरि विदिशा स्थित शीतलधाम, पनागर, बहोरीबन्द, बाँधाजी, कुण्डलगिरि (कोनी), रहली (पटनागंज), खजुराहो, सिद्धक्षेत्र नैनागिरि,

मुक्तागिरि, तारंगा, पुण्योदय तीर्थ क्षेत्र-हांसी (हरियाणा), जैसे अनेकतीर्थ है। इसके साथ-साथ अल्प श्रावक संख्या वाली समाज सिलवानी और टड़ा केसली जैसे स्थानों पर पाषाणनिर्मित्त विशाल गगनचुम्बी जिनालयों की स्थापना कर आने वाली शताधिक पीढ़ियों में आगत भव्यात्माओं के जीवन-उद्धार जीवन-कल्याण का महानतम कार्य प्रशस्त किया है।

इसके अलावा आचार्य भगवान् ने लगभग 58 पंचकल्याणकों में सान्निध्यता प्रदान कर सहस्राधिक जिनबिम्बों को परमात्म स्वरूप देकर भव्य जीवों को श्रावक धर्म पूजा और दान सौभाग्य देकर आत्मविशुद्धि पुण्य संचय और कर्मक्षय का सुअवसर प्रदान किया।

सर्वोदयी तीर्थ-आचार्य श्री विद्यासागर जी- आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज ने विचार तीर्थ के माध्यम से अनेक जनोद्धारक कार्य सम्पन्न किये हैं। जिसमें वर्तमान में 130 मुनि, 172 आर्यिकायें, 57 ऐलक,99क्षुल्लक के रूप में कुल 461 दीक्षायें प्रदानकर रत्नत्रय धर्मरूप विचार तीर्थ की स्थापना कर आत्मोद्धार का पथ प्रशस्त किया विदित इतिहास में ऐसा एकभी प्रसंग प्राप्त नहीं होता जिसमें किन्हीं आचार्य भगवन् के मंगल आशीष की छाँव तले इतनी बड़ी संख्या में बालब्रह्मचारी शिष्य समुदाय मुनि आर्यिका + ऐलक+ क्षुल्लक+ ब्रह्मचारी भाई, ब्रह्मचारिणी विदुषी बहिनें घर में रहकर व्यवसाय नौकरी के साथ-साथ संयम साधना करने वाले हजारों भव्यात्मा रत्नत्रय धर्म धारण करके या करने की भावना रखते हुये धर्म प्रभावना और आत्म कल्याणक कारक साधनों में संलिप्त है।

आचार्य भगवन् ने नैतिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा बनाने वाला हिन्दी, संस्कृत, काव्य साहित्य का सृजनकर आपने माँ भारती के भंडार को समृद्ध किया है।

चिन्तन साधना से प्रसूत मूकमाटी महाकाव्य सा अमृत फल पाकर साहित्य जगत स्वयं धन्य है, मूकमाटी महाकाव्य का लेखन कार्य 25 अप्रैल 1984 बुधवार जबलपुर में प्रारम्भ हुआ। और 11 फरवरी 1987 बुधवार को ही नैनागिरि में पूर्ण हुआ मूकमाटी का अनुवाद मराठी, बंगला, अंग्रेजी, कन्नड़, गुजराती आदि भाषाओं में हो चुका है।

मूकमाटी के ऊपर भारत और विदेश के 283 संस्कृत-हिन्दी जैन-जैनेत्तर विद्वानों ने अपने समीक्षात्मक विचार लिखे है जो कि लगभग 1000 समीक्षायें पी.एच.डी. शोध प्रबंध सहित मूकमाटी मीमांसक भाग-1,2,3 में भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है।

मूकमाटी महाकाव्य भारत के अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल है।

मूकमाटी महाकाव्य में आचार्य श्री जी ने धार्मिक, साहित्यक, सामाजिक, राजनैतिक, नारी के कर्त्तव्य आदि विषयों पर काव्यात्मक शैली में लिखा है। इसमें पात्र बनाया है। मूकमाटी को कंकर, पत्थर आदि को एवं पद्दलित चेतना, आरक्षण, पूंजीवाद, आतंकवाद, शोषण, वर्गभेद, समाजवाद, आर्थिक, विषमता, यशोलिप्सा, भ्रष्टाचार, आदि समकालीन अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं विद्रूपताओं के प्रति शंखनाद करके **सुदधममो एत्थ पुण तित्थं** की युक्ति को चरितार्थ कर श्रुत रूप धर्मतीर्थ की स्थापना कर सम्पूर्ण मानव मन की विकृत अवधारणा दूर कर सम्यक् मार्ग प्रदाता तीर्थोद्धारक भगवान के रूप में साहित्याकार में ध्रुव नक्षत्र के रूप में अव्यवस्थित है। इस प्रकार कदम ओर कलम का फासला जिन्होंने लगभग खत्म कर दिया है। जिह्वा और जीवन में जिनके ऐक्य स्थापित हो चुका है, ऐसी विश्व की विरल विभूक्ति विराग मूर्ति आगम घर आचार्य श्री में अनुकम्पा और अनुशासन की जीवंतता है।

सर्वोदयी भावना से अनुप्राणित आचार्य श्री जिनशासन की अहिंसा को सेवा और करूणा से

जोड़ कर लोक चेतनावाही बन रहे हैं। मानवता को मसीहा आचार्य श्री सचमुच ही इस युग के अद्वितीय धर्मप्रभावक, धर्मतीर्थोद्धारक है । साहित्य, साधना, संघ, संस्कृति, और समाज के सवंर्धन में बहुआयामी दिशा निर्देश आशीष और योगदान देकर आज आचार्य श्री जन-जन के गुरु बने हुये हैं ।

आचार्य भगवन् के मंगल आशीष से सम्पूर्ण भारत वर्ष में ''**सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव**'' की भावना को साकर करते हुये जनकल्याणकारी स्वास्थ्य शिक्षा अर्थकारी और आत्मकल्याणार्थ अनेक प्रकल्प चल रहे हैं -जिनमें से मुख्य रूप से

1. ब्राह्मी विद्या आश्रम जबलपुर-सागर जिसमें अनेक विदुषी बहिनों ने शिक्षा संस्कार ग्रहणकर गुरुवर के पावन कर कमलों से दीक्षा ले रत्नत्रयरूप धर्मतीर्थ को धारण कर आत्मोद्धार का पथ प्रशस्त किया कर रही है।

2. भाग्योदय- मानव सेवा का चिकित्सा संस्थान आरोग्य तीर्थ भाग्योदय सागर जहाँ सर्वसुविधायुक्त वार्ड नर्सिंग, कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज डी.एम.एल.टी कॉलेज, एम.आर.आई व सीटी स्कैन, कैथलैव आदि की सुविधा युक्त।

3. हथकरघा- विकास, स्वरोजगार, शुद्धिता, भारतीय वस्त्रों को बढ़ावा देने हेतु दर्श के 35 स्थानों में 1000 से अधिक संयमाभिमुख भाई-बहनों को प्रशिक्षण दिया गया है। जा रहा है।

4. प्रतिभास्थली- ज्ञान-संस्कारों से ओतप्रोत प्रतिभास्थली में बी.एड.व स्नातकोत्तर उपाधि, उच्च शिक्षा सम्पन्न, बाल ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा जबलपुर रामटेक, डोंगरगढ़, इंदौर, ललितपुर इन तीन स्थानों पर लगभग 1800 बालिकाओं को अध्यापन के साथ-साथ खेल, नृत्य, सिलाई, कम्प्यूटर, हथकरघा आदि की शिक्षा दी जाती है।

5. दयोदय (गौशाला)- जीवदया, करूणा का अप्रतिम उदाहरण है दयोदय नाम से संचालित 130 गौशालाओं में एक लाख से ऊपर पशुधन शरण व संरक्षण को पा रही है।

6. शांतिधारा दुग्ध योजना- बीना बारहा (सागर) में 500 देशी गिर गायो का पालन कर व्रतियों के योग्य शुद्ध दूध व घी की उपलब्धता में सराहनीय योगदान देना।

7. प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर- दिल्ली में स्थापित इन संस्थानों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर नीति-न्याय पूर्वक शासकीय कार्यो में सहभागिता देना।

8. पूरी मैत्री, जबलपुर- अशुद्ध डिब्बा बंद खाद्य सामग्री से लोगों को बचाकर मर्यादित सामग्री से और छने हुये जल से निर्मित खाद्य सामग्री को समाज जनता को उपलब्ध कराने की महत्वपूर्ण जबाब दे रही है।

9. निःशुल्क स्वास्थ्य केन्द्र- अतिशय क्षेत्र बहोरीबन्द कटनी मे श्री शांतिनाथ विद्यासागर आरोग्य केन्द्र की स्थापना जिसमें लाखों गरीब मरीज निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ ले चुके है । ले रहे है।

10. पाठशाला- मध्यप्रदेश व अन्य प्रान्तों में लगभग 350 जैन पाठशालाऐं में लगभग 25000 बालक/बालिकाओं को धार्मिक ज्ञान, जैन कुलाचार, जैन संस्कार और जिन पूजन प्रशिक्षण, आचार्य भगवन के मंगल आशीष से प्रदान किये जा रहे है।

जब राजा श्रेयांश दान देने से दानी तीर्थंकर हो सकते है, तब आचार्य श्री तीर्थ उद्धार करने से तीर्थ उद्धारक क्यों नहीं हो सकते।

इन्हीं आत्मकल्याण जनकल्याण, देश-समाज और तीर्थों, संरक्षण जैसी उदात्त भावनाओं के कारण आचार्य भगवन् विचार तीर्थ और स्थावर तीर्थ के संगम स्थल के प्रतिमान के रूप में नजर आते हैं, तभी तो मन बरबस बोल उठता है।

गर आचार्य श्री विद्यासागर जी, संयम का रूप नहिं धरते,वे अपनी काया से जग का, कायाकल्प नहिं करते।

तो मानवता मान नहीं पाती, ये जीवित मंत्र नहीं होते और भारत-गारत बन जाता, जो ऐसे संत नहीं होते।

तभी तो मानव मन गुरुवर को चुनौती देते हैं-ओ शरदपूनम के चंदा गुरुवर, तुमको अपना मानें, मेरे मन की बगिया में, इक बार खिले तो जानें।

इन श्रद्धा देवता के श्री चरणों में जो स्वयं विचार तीर्थ, जंगम तीर्थ, गतिमान तीर्थ है मेरा कोटिशः प्रणाम

साधु नहीं ये चलते-फिरते, तीरथ समान हैं ,गुरु विद्यासागर जी को मेरा शत् शत् प्रणाम हैं।

अंतिम निवेदन- तीर्थों का विकास, समृद्धि व पुनरुद्धार हमारी वैयाक्तिक, सामाजिक व पारमार्थिक जरूरत है पर उनका विकास करते समय इस बात का निरन्तर ध्यान रखना चाहिये कि हमारे तीर्थ केवल स्थावर क्षेत्र ही न रहें, बल्कि उनमें स्थापित मंदिर व उनमें स्थापित जिनबिम्ब व उनका चमत्कार ज्ञान-विज्ञान विचारों और कलाओं के केन्द्र के रूप में भी हो रहे है। औरों के विचार शुद्धि, भावशुद्धि के परम केन्द्र रहे है। हम आज जिन तीर्थों का विकास कर रहे है, उनमें स्थावर रूप को तो पोषण लगभग हो रहा है (जैसे पिच्छी/कमण्डलु/जहाज, तीनलोक, कमला, पर्वत के आकार के जिनालय) लेकिन उनमें ज्ञान-विज्ञान, विद्याओं, कलाओं व विचार केन्द्र का पोषण लगभग नगव्य है, लेकिन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वारा निर्मापित स्थावर तीर्थ में पुरातन संस्कृति शैली, नागर शैली, और ज्ञान-विज्ञान-विद्या कौशल का समावेश देखा जा सकता है।

जबकि विचार तीर्थ में तो साक्षात् ज्ञान-विज्ञान-विचार-आचार-शुद्धि आप देख ही रहे हैं। उसी के फलस्वरूप आज आचार्य भगवन चारित्र की वसुधा पर एक कीर्तिस्तम्भ की भाँति अचल अडिग स्थित है।

पर एक वेदना है आचार्य भगवन के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव पर हम मात्र संस्मरण सुनाते रह जायें या उनका गुणगान करते करते यह संयम वर्ष समापन हो उसके पूर्व विचार तीर्थ/रत्नत्रय तीर्थ पर जो आरोप आक्षेप आ रहे है पत्र/फेसबुक/वाट्सअप आदि माध्यमों से उनकी शुद्धिकरण का स्मरण खोजना होगा। जैसे स्थावर तीर्थो पर सभी देवों की बढ़ती प्रवृत्ति घातक है वैसे ही विचार तीर्थ पर बढ़ती शिथिलायें भी भविष्य के शोधकत्ताओं के लिये घर तक प्रमाण के रूप आचार्य भगवान के तीर्थकर्त्ता के रूप में प्रश्न चिन्ह लगा सकती हैं निश्चित आचार्य भगवन हमारे आराध्य श्रद्धा के देवता है, और हमें ही इस बारे में विचार करना होगा ताकि हमारे आराध्य युगों -युगों तक निष्कलंक आराध्य के रूप में दुनियाँमानस पटल पर अंकित रह सकें।

तुम स्वयं तीर्थ से पावन हो - आचार्य भगवन के स्फुट संस्मरण या लेखों से हम नहीं अपितु सम्पूर्ण संघ मुनि आर्यिका ब्रह्मचारी तथा अन्य संघों से भी आलेख एकत्रित कर महाकाव्य स्वर्णिम संयम स्मरणिका के 5 भाग हजार पृष्ठीय के रूप में ।

अभी तक पढ़े गये सभी लेख आचार्य भगवन के तीर्थोद्धय इस संज्ञा को सार्थक करने वाले बीज का ही विस्तार हैं।

इस आलेख के लिखने में धवल ग्रंन्थराज, आदिपुराण, मूलाराधना, अष्टपाहुड के रचयिता महान आचार्यो के प्रति तथा दिगम्बर जैन मुनि- मुनि श्री समता सागर जी, कुण्डलपुर का सच, श्रमण परम्परा के महाश्रमण, जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश, स्कन्दपुराण महाभारत और प्रो. वृषभदास के एक लेख के सहयोग के लिये कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

गर्भाशय भ्रंश कारण व नियंत्रण उपाय अपनाकर स्वस्थ्य रहें

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

गर्भाशय का अपनी जगह से खिसक कर योनि के बाहरी हिस्से तक पहुँच जाना गर्भाशय भ्रंश या प्रोलेप्स ऑफ यूट्रस कहलाता है। यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है जिससे महिलाओं को अनेक समस्याओं को भोगना पड़ सकता है।

महिलाओं में पेल्विक भाग में मूत्राशय, गर्भाशय और मलाशय अंग होती है गर्भाशय फैशिया मसल्स और लिंगामेन्ट द्वारा अपनी जगह पर लटका रहता है। यह स्थिर नही होता क्योंकि गर्भावस्था और शिशु की वृद्धि के लिये इसका आकार घटता बढ़ता रहता है। यदि कारणवश ये फेशिया मसल्य और लिंगामेंट कट फट या खिंच जाते हैं और पेल्विक भाग की मासपेशियों कमजोर हो जाती है। जिससे गर्भाशय योनि में खिसक जाये व कभी-कभी मूत्राशय व मलाशय भी योनि में खिसक जाते हैं। गर्भाशय के योनि के नीचे आ जाये जिसे गर्भाशय भ्रंश कहते हैं ।

गर्भाशय एक हिलने-जुलने वाला अंग है, यह शरीर के सामने से मूत्राशय और पीछे से मलाशय इस दोनों के बीच स्थित रहता है। गर्भाशय की स्थित उक्त दोनों अंगों के बीच के स्थान अनुसार अदान बदल सकती हैं जिसमें निम्न चार प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो सकती है। 1. गर्भाशय का आगे की ओर आ जाना जिसे ऐंटोफ्लेक्सन कहते हैं। 2. पीछे की ओर झुक जाना जिसे रेट्रोफ्लेक्सन कहते हैं। 3. आगे को बहुत अधिक जाना जिसे एन्टेवर्सन 4. पीछे को बहुत अधिक झुक जाना रेट्रोवर्सन कहते हैं।

1. गर्भाशय का आगे की ओर आ जाना- यह प्रायः अविवाहितों बच्चियों में होता है जिसमें ऋतु धर्म में कष्ट होता है, जो शुरु होने से पहले होता है। स्त्राव कम होता है, पेशाब बार-बार जाना क्योंकि मूत्राशय पर दबाव पड़ता है व गर्भाशय का मुख दब जाने से स्त्राव कम होता है एवं गर्भधारण में तकलीफ पैदा करता है।

2. पीछे की ओर झुक जाना- यह प्रायः अधिक बच्चों को जन्म देने वाली स्त्रियों, वृद्ध अवस्था एवं सामान्य प्रसव में शिशु जन्म कराने का भी कारण होता है जिससे गर्भाशय के पीछे झुकने से मलाशय पर दबाव पड़ता है । मूत्राशय में मूत्र भर जाने से मलाशय पर अधिक दबाव पड़ता है। जिससे कमर में दर्द होता है, प्रजनन भागों में ऐसा दबाव महसूस होता है मानो भीतर के अंग बाहर निकल पड़ेगे। वियरिंग डाउन सेन्ससम अंगों में दर्द, थकान बनी रहना, शरीर में शक्ति अनुभव नही होती, किसी चीज को उठा नहीं सकता, देर तक खड़े नही हो पाना, चलना तो मुश्किल हो जाता है व मूत्राशय व मलाशय में बैचेनी होना, ऋतु स्त्राव होते समय दर्द, प्रायः श्वेत प्रदर की शिकायत। इस रोग में भी गर्भ-धारण असम्भव हो जाता

है। रोग महिला डर के मारे जांघ पर रखकर बैठती है कहीं भीतर के अंग बाहर निकल पड़ेगे। लेटने से गर्भाशय पुनः स्थान पर आ जाताहै जिससे आराम लगता है।

3-4. गर्भाशय का आगे या पीछे बहुत अधिक झुक जाना- भारी वजन उठाना, बहुत देर तक उकडू बैठकर काम करना, हमेशा कब्ज रहना, पाखाना होते समय तक देर तक कूंथना जोर जगाना, बबासीर होना, ज्यादा कसे कपड़े पहनना, उछल-कूद करना, जुलाव हमेशा लेते रहना अविवाहिताओं महिलाओं के साथ ही विवाहित महिलाओं में अधिक विषय भोग, प्रसव के बाद आराम न करते हुये कार्य करने लगना आदि।

इस रोग के कारण बच्चेदानी में रसोली, ज्यादा ब्लीडिंग के कारण एनीमिया अल्सर या घाव होना, गर्भ गिरना, शारीरिक संबंध के दौरान दर्द, पेट के निचले हिस्से से दर्द व ज्यादा दबाबा महसूस होना आदि परेशानियाँ हो सकती है ।

मेनोपाज के बाद इस्ट्रोजन हार्मोन की असंतुलन से मांसपेशियाँ कमजोर हो जाती है, पेल्विस पर लगातार दबाव पड़ना जिसका प्रमुख कारण लम्बे समय तक खांसी चलना, मोटापा, कब्ज, गलत्याग करते समय अधिक जोर लगाना, आवश्यक मोपक तत्त्वों की कमी, मानसिक तनाव कोई गम्भीर रोग से शरीर में कमजोरी आना, दुर्घटना से चोट व झटका लगाना भी कारण है।

भोजन में जैविक पत्तीदार सब्जियाँ, विटामिन सी युक्त फलों का सेवन करना, उच्च फाइब्रर युक्त भोजन व चीजों का खाना, नट्स वजन मेन्टेन रखना, तनाव से बचना, योगासन प्रतिदिन 45 मिनिट तक सैर करना लाभदायक होता है।

पहली व दूसरी अवस्था में समय पर चिकित्सा करने से आराम मिल जाता है। तीसरी व चौथी अवस्था में जब गर्भाशय प्रयास करने के बाद भी अपनी स्थिति में न पहुँच पाने पर ही सर्जरी ही विकल्प होता है।

सभी चिक्तिसा पद्धति में इलाज संभव है। होम्योपैथी पद्धति में भी प्रभावी रूप से नियंत्रण हो जाता है। जिसकी प्रमुख औपधियों सीपिया, लिलियम, फ्रेक्सिनस, अर्निका, कैलकेरिया कार्ष, सेबाइना, पोडोफाइलम, हेलोनियास, नक्सबोमिका, कैल्केरिया फ्लोरिका, साइलिशिया आदि

महिलायें प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति काफी हद तक उपेक्षित अपनाती है, लापरवाह और बेखबर रहती है जिसका मुख्य कारण शर्मेदिंगी, अशिक्षा व पारिवारिक जिम्मेदारी कारण हो सकता है। तीस वर्ष की उम्र के बाद महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहकर अपने व्यस्तंभ समय में से कुछ पल अपने लिये निकाले। पूरे परिवार को संभालने वाली महिला को समझना चाहिये कि वह जितना फिट व खुश रहेगी जिससे घर के सदस्य भी खुश व स्वस्थ्य रहेंगे।

हास्य तरंग

1. पंडित जी घर से पैदल मंदिर जा रहे थे कि उनके ऊपर पानी जैसे छीटें गिरे तो एक दम गुस्सा में बोले लोगों को समझ में नहीं आता है कि कौन रास्ते से निकल रहा है, पानी गिरा देते हैं। छत के ऊपर खड़ी मोदी जी की बहू बोली, पंडित जी आप मुझ पर झूठे आरोप लगा रहे हो, मैं तो टोनू बच्चे को पेशाब करा रही थी।

2. सेठी जी आपने पड़ोसी मगनलाल का दरबाजा जोर-जोर से पीटते हुये कहा- मेरे खातिर अपने तबले पर अभ्यास करना बंद कर दो, नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा। मगनलाल ने उत्तर दिशा मेरे हाथ में फ्रेक्चर होने से एक सप्ताह से अभ्यास करना बंद कर दिया है।

3. चोर-चोरी करने के बाद चोरी के माल की कीमत निकाल कर आपस में बांटना चाहते थे। दूसरे चोर ने कहा रात्रि बहुत हो गई सुबह बांट लेगे व ज्यादा मेहनत भी नहीं करना पड़ेगी, क्योंकि सुबह समाचार पेपर में भी आ जायेगा कि कितने माल की चोरी हुई है।

4. दुकानदार (नौकर से) समझाते हुये कहता है ग्राहक जो भी कहते उसे सही मान लेना चाहिये, उससे बहस नहीं करना चाहिये, तुम्हें पहले भी समझाया था कि ग्राहक भगवान का रूप होता है। वैसे तुम्हारे साथ वह झगड़ा क्यों कर रहा था ? नौकर वह कह रहा था तुम्हारा मालिक कंजूस व चोर है।

5. बहु तू मेरी बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से क्यों निकाल देती हो। सास आग बबूला होकर बोली, बहु ने कहा मां जी आप भी तो मेरी बातें दोनों कानों से सुनकर मुँह से निकाल देती हो।

जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ पृथ्वीराज की आँखें

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल केन्द्र पर एक खिलाड़ी आँख बन्द कर हाथ में दंड लेकर खड़ा होगा। शिक्षक के निर्देश पर कोई भी खिलाड़ी ब दो-तीन बार कोई शब्द जोर से बोलेगा। जय जिनेन्द्र... आदि। अ शब्द ध्वनि के आधार पर अपनी दिशा निर्धारित कर उस ओर दंड फेकेगा। अपने स्थान पर रहकर ही उसे पकड़ेगा।

✲ मत चुको चौहान

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- 1. शिक्षक परिधि पर खड़े स्वयं सेवकों को अंक देगा। मंडल के बीच में से एक ईंट रखी होगी। शिक्षक जिस अंक को बुलायेंगा। वह दोनों आँखें बन्द कर आयेगा तथा ईंट पर दंड या मुक्का मारेगा असफल होने वाले खिलाड़ी अपने स्थान पर बैठते रहेंगे। सबसे अधिक बार सफल होने वाला खिलाड़ी विजयी होगा।

✲ भारत

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- स्वयंसेवक मंडलाकर खड़े होंगे। प्रत्येक क्रमशः लम्बी सांस भरकर जियो और जीने दो बोलते हुये मंडल को दौड़कर एक चक्कर लगायेगा जिसकी साँस बीच में टूट जायेगी। वह अपने स्थान पर बैठ जायेगा। इस प्रकार मंडल का आकार बढ़ाते रहे। जब 3-4 खिलाड़ी शेष रहे तो परिक्रमा के बाद उसी सांस में अधिकतम दण्ड या बैठक लगाने वाला विजयी होगा।

बाल कहानी

कालू की सूझ

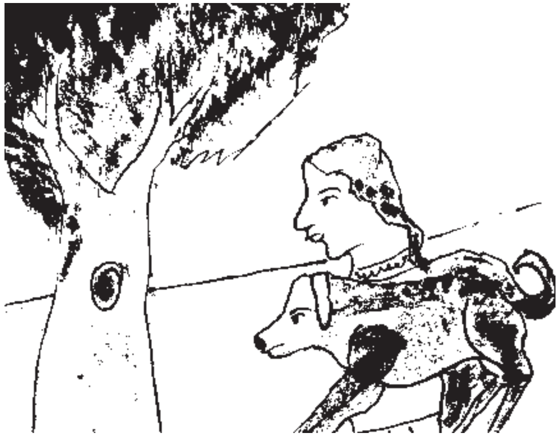

सूर्य बादलों में से बाहर निकलने के लिये कस भर रहा था। जैसे तैसे वह बाहर निकला परन्तु एक काली बदली ने उसे फिर ढँक दिया। प्रियंका अपनी माँ के साथ डलिया लेकर महुआ बीनने जंगल की ओर चल पड़ी। प्रियंका का कालू कुत्ता बहुत प्रिय था प्रियंका ने उसे पाल रखा था बचपन से ही प्रियंका अपनी बची हुई रोटी कालू की जरूर खिलाती थी। कालू प्रियंका को देखते ही उसके पीछे पूँछ हिलाता हुआ चल पड़ता था। लोग प्रियंका को चिढाया करते थे कि प्रियंका तेरा दोस्त आ गया प्रियंका के सहेली भी उसे चिढ़ाने से चूकती नहीं थी।

आज भी प्रियंका के भगाने के बाद भी महुआ के झाड़ के नीचे कालू आकर बैठ गया। प्रियंका और उसकी माँ महुआ बीनकर अपनी डलिया में डालने महुआ बीनते बीनते दोनों एक पंगडेडी से जंगल में पहुँच गई। थोडी देर बाद तीन भालू गुरराते हुये प्रियंका पर झपटे। प्रियंका ने भगाने की कोशिश की परन्तु एक भालू ने उसको पैर पकड़ लिया और वह गिर गई फिर नहीं उठ पाई प्रियंका रोने चिल्लाने लगी उसकी माँ ने जब प्रियंका को भालूओं के आक्रमण से घिरा हुआ देखा तो उसने पत्थरों से भालूओं को भगाने की कोशिश की परन्तु वह सफल नहीं हो पाई।

कहीं कालू भी दौड़ता हुये महुआ के झाड़ के नीचे आकर विशेष आवाज में भौंकना शुरु किया कालू की आवाज सुन कर गाँव के सभी कुत्ते भौंकते हुये कालू के पास आ गये फिर क्या था तीन भालू सिर पर पैर रखकर जंगल की ओर भाग गये। प्रियंका को उसकी माँ ने उठाया तुरंत गाँव एक सूझ का दाँस्ता सुनाया। सबने एक स्वर में कालू मात्र कुत्ता नहीं प्रियंका का सही मायने में रक्षक है।

संस्कार गीत

गुलामी के चिन्ह मिटा दें

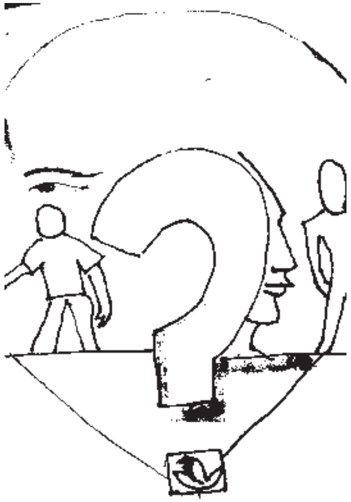

चौदह सितम्बर हिन्दी दिवस का सुन्दर अनुपम पर्व है
शुरु करो हिन्दी हस्ताक्षर इसमें निजता गर्व है॥

1.

स्वाभिमान अरु सत्य अहिंसा देशी भाषा में दिखता
अहंकार अरु दम्भ प्रदर्शन भाषा विदेशी में मिलता
सहज सुबोध सरल भाषा यह अपनाता जन सर्व है

2.

भारत की संस्कृति का जिसमें दिखता सुन्दर दृश्य है
मानवता का मान है हिन्दी निज भाषा में भविष्य है
भारत हर भाषा देखो छूती अंतर मर्म है

3.

अब संकल्प हमारा होगा हो हस्ताक्षर हिन्दी में
भावी पीढ़ी बोध जगायें अब शिक्षा हो हिन्दी में
गुलामी के चिन्ह मिटादें यही हमारा धर्म हैं।

बाल कविता

सुन्दर भारत देश

विद्यासागर का संदेश
नहीं इंडिया भारत देश
यही स्वर्ग का कोना है
कण कण इसका सोना है
भरत का भारत देश हमारा
सुन्दर भारत जग से न्यारा
जन्म भूमि सब तीर्थंकर
कर्म भूमि यह अभयंकर
राम वीर की यह भूमि
बुद्ध कन्हैया की भूमि
धर्म कर्म शांति संदेश
सबसे सुन्दर भारत देश

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

विजयनगर गुजरात- गणिनी आर्यिका सुभुषणमति माताजी के करकमलों से बाल ब्र. भारती दीदी क्षुल्लिका दक्षभारती को 8 अक्टूबर 2021 को आर्यिका दीक्षा श्री दिगम्बर जैन मंदिर विजयनगर गुजरात में दी गई। जिनका नाम क्रमशः आर्यिका आर्षभारती माताजी एवं आर्यिका दक्षभारती माताजी रखा गया।

पालघर महाराष्ट्र- आचार्य श्री पुलकसागर महाराज जी के करकमलों से बाल ब्र. प्रदीप भैया भीलवाड़ा, ब्र. सुभाष सेठ बरगी जबलपुर, ब्र. विजय बरगी जबलपुर को दीक्षायें 15 अक्टूबर 2021 को जिनशरणम तीर्थ पालघर महाराष्ट्र में दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि पुलकितसागर जी, मुनि प्रमुदितसागर जी, एलक प्रशमितसागर जी नाम रखा गया।

अंधेश्वर पार्श्वनाथ- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज के करकमलों से 15 अक्टूबर 2021 को ऐलक सुतत्त्वसागर, क्षुल्लक सम्पूज्यसागर, क्षुल्लक संपर्कसागर, क्षुल्लक समविज्ञसागर, क्षुल्लक सुप्रतिष्ठ सागर, क्षुल्लिका काव्यश्री, ब्र. श्वेता दीदी पारसोला राजस्थान, ब्र. मोना दीदी आडोल महाराष्ट्र, ब्र. प्रज्ञा दीदी मुंबई महाराष्ट्र, ब्र. सलोनी घाटोल राजस्थान, ब्र. कांता दीदी साकरोद राजस्थान, क्षुल्लक संकल्पसागर, ब्र. सुरेन्द्र भैया नीमच, ब्र. माणिक भैया बांसवाडा, ब्र. शांतिलाल जी भासुर राजस्थान, ब्र. धनपाल जी रिछा राजस्थान, ब्र. मंजू दीदी जयपुर, ब्र. विमला दीदी चावन राजस्थान, ब्र. राजकुमारी दीदी नीमच को दीक्षायें दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री अस्तित्वसागरजी, मुनि श्री सम्पूज्य सागर, मुनिश्री संपर्कसागरजी, मुनि श्री संविज्ञसागर जी, मुनि श्री सुप्रतिष्ठसागरजी, आर्यिकाश्री संयतमति जी, आर्यिका संगीतमति जी, आर्यिका संपूर्णमति जी, आर्यिका संपन्नमतिजी, आर्यिका संबलमतिजी, आर्यिका संप्रेक्षमति जी, एलक श्री संकल्पसागरजी, क्षुल्लक सम्वर्थसागरजी, क्षुल्लक संपर्कसागरजी, क्षुल्लक संतुष्ट सागर जी, क्षुल्लक संतोष सागर जी, क्षुल्लिका सम्मानमति जी, क्षुल्लिका संवरमति जी, क्षुल्लिका समरक्षमति माता जी रखा गया।

तारंगा- आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के करकमलों से 22 अगस्त 2021 को शांतिबाई जी बिजावर को क्षुल्लिका दीक्षा विद्यासागर तपोवन तारंगा में दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिका लघुनंदनी माताजी रखा गया।

नलवाड़ी आसाम- आर्यिक गरिमामती माता के करकमलों से श्रीमति सुलोचना देवी पांडया को आर्यिका दीक्षा 18 अक्टूबर 2021 को दी गई। जिनका नाम आर्यिका दियांशुमति जी रखा गया।

जयपुर-गणिनी आर्यिका विज्ञाश्री माता जी के करकमलों से 15 अक्टूबर 2021 को श्यामनगर जयपुर में ब्र. मधु दीदी मालपुरा को आर्यिका दीक्षा दी गई। जिनका नाम आर्यिका ज्ञेयकमति माताजी रखा गया।

अहिंसा स्थली दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्य सागर महाराज के करकमलों से 15 अक्टूबर 2021 को पश्चिम बिहार दिल्ली की नमोकांता जी को क्षुल्लिका दीक्षा दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका शुभनिर्जरा मति माताजी रखा गया।

चिचोली- मुनि श्री उपशांत सागर महाराज जी के करकमलों से चिचोली बैतूल म.प्र. में 18 अक्टूबर 2021 को प्रकाशचंद जी सावलमेडा म.प्र. को क्षुल्लक दीक्षा दी गई। जिनका नाम उपकार सागर जी रखा गया।

तारंगा- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज जी के करकमलों से 16 अक्टूबर 2021 को श्री विद्यासागर तपोवन तारंगा गुजरात में क्षुल्लक चर्यानंदी जी एवं अम्बालाल जी भिंडर राजस्थान को दीक्षायें दी गई। जिनका नाम क्रमशः एलक चर्यानंद जी, क्षुल्लक विजयानंद जी रखा गया।

पांडूचेरी- गणिनी आर्यिका सुयोगमति माताजी के करकमलों से पांडूचेरी में 8 अक्टूबर 2021 को क्षुल्लिका स्थिरमति माताजी एवं पदमा जैन चैन्नई को दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका सुस्थिरमति माताजी, क्षुल्लिका सुपदमामति माताजी रखा गया।

आगामी दीक्षायें

दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्यसागर महाराज जी के करकमलों से 6 नवम्बर 2021 को श्री दिगम्बर जैन अहिंसा स्थली महरौली दिल्ली में बाल. ब्र. देशना दीदी, ब्र. सतीश जी को क्रमशः आर्यिका एवं क्षुल्लक दीक्षा दी जावेगी।

सम्मेद शिखरजी- मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलो से 3 दिसम्बर दोप. 12.30 पर श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मधुवन मध्यलोक शिखर जी में ब्र. शकुन्तला बाई जी शिलापघाट असम श्रीमती बबली बाई जी मुंबई को दीक्षा दी जावेगी।

समाधिमरण

महरोनी (उ.प्र.)- आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री संभवमति माताजी का समाधिमरण 8 अक्टूबर 2021 को रात्रि 8.48 बजे महरोनी (उ.प्र.) में हुआ।

कोथली (कर्नाटक)- आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री दुर्लभमति माताजी का समाधिमरण 10 अक्टूबर 2021को कोथली कर्नाटक में हुआ।

गोटेगांव-आर्यिका श्री गुरुमति माताजी ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री प्रशांत सागर महाराज जी की गृहस्थ अवस्था की माँ दस प्रतिमाधारी श्रेयमति माताजी का समाधिमरण 8 अक्टूबर 2021 को गोटेगांव (म.प्र.) में हुआ।

दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या क्षुल्लिका शुभनिर्जरामति माताजी का समाधिमरण 18 अक्टूबर 2021 को अहिंसा स्थली महरौली दिल्ली में हुआ।

चेन्नई- आचार्य श्री सुविधीसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सुनम्रसागर महाराज का समाधिमरण 11 अक्टूबर 2021 को सांय 5.05 मिनट पर चेन्नई में हुआ।

आगामी पंचकल्याणक

शहपुरा जबलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 10 से 16 नवम्बर 2021 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

इंदौर-आचार्य श्री विमदसागर महाराज जी ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुखलिया का पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव दिनांक 21 से 27 नवम्बर 2021 को प्रतिष्ठाचार्य पं. सनत विनोद कुमार रजवास के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

सम्मेदशिखरजी- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 08 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2021 तक अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा द्वारा बनाया गया बुंदेलखंड भवन सम्मेद शिखर जी मधुवन में पंचकल्याणक ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के निर्देशन में तथा पं. सनत कुमार विनोद कुमार के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा। जिसमें सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमती रजनी इंजी नवल गौडरे मुंबई, माता पिता- श्रीमती सुनीता बसंत जैन सागर, राजासोम- श्रीमती करूणा महेन्द्र जैन रजवांस वाले इंदौर को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नैनागिरि- आचार्य श्री उदारसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 20 से 25 नवम्बर 2021 श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पं. सनत कुमार विनोद रजवास के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

सम्मेद शिखर जी- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 14 से 19 नवम्बर 2021 तक मध्यलोक में क्षुल्लिका भक्तिभूषणमति माताजी, क्षुल्लिका पूजाभूषणमति माताजी के निर्देशन में पंचकल्याणक संपन्न होगा।

सम्मेद शिखर जी- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 25 नवम्बर से 01 दिसम्बर 2021 तक बीसपंथी कोठी सम्मेद शिखर जी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-2021

जैन गौरव – श्री हुकुमचंद सांवला द्वारा लिखित पुस्तक से

01. भगवान महावीर स्वामी के मातामाह नाना का नाम क्या था ?
02. महाराजा चेट किस गणतंत्र आत्मक संघ के अध्यक्ष थे ?
03. भगवान महावीर स्वामी की नानी का नाम क्या था ?
04. महाराजा चेटक के बज्जी संघ में कितने राजा उपाधि धारी थे ?
05. वह कौन सा राजा था जिसने भगवान महावीर स्वामी की देहाकार स्वर्णमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई हो ?
06. महाराज उद्यायन के उस पुत्र का नाम क्या था जिसने मुनि दीक्षा ली हो ?
07. महाराजा बिम्बसार का दूसरा नाम कौन सा था ?
08. महाराजा चेटक किस नगरी का राजा थे ?
09. महाराजा श्रेणिक किस वंश के राजा थे ?
10. महाराजा बिम्बसार ने भगवान महावीर स्वामी से कितने प्रश्न किये थे ?
11. महाराजा श्रेणिक की वह कौन सी रानी है जो महाराजा चेट की पुत्री थी ?
12. भगवान महावीर स्वामी की मौसी का नाम क्या था जो राजा श्रेणिक की महारानी हो ?
13. चिलाती पुत्र ने किससे दीक्षा ली थी ?
14. चन्द्रगुप्त के राजनैतिक गुरु का नाम क्या था ?
15. मंत्री चाणक्य का मूल नाम कौन सा था ?
16. चन्द्रगुप्त मौर्य ने किससे दीक्षा ली ?
17. चन्द्रगुप्त मौर्य ने किस राज्यवंश का उच्छेद किया था ?
18. धनानन्द की किस पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ था ?
19. शैल्युकस की किस पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ था ?
20. चन्द्रगुप्त मौर्य की समाधि किस तीर्थ पर हुई ?
21. बिन्दुसार चन्द्रगुप्त की किस रानी का पुत्र था ?
22. बिन्दुसार ने किस तीर्थ पर जैन मंदिरों का निर्माण कराया ?
23. जैन गौरव ग्रंथ का प्रकाशन कहाँ से हुआ ?
24. बिन्दुसार कब सिंहासन आरूढ़ हुआ ?
25. मौर्य सम्राट बिन्दुसार की मृत्यु कब हुई ?
26. सम्राट अशोक का वह कौन सा पुत्र था जो जैन धर्म का अनुयायी था ?
27. कुनाल की करूण कहानी कौन से जैन आचार्यो ने लिखी है ?
28. सम्राट संप्रति मोर्य कब सिंहासन आरूढ़ हुआ ?
29. शाली सुखमोर्य किसका पुत्र था ?
30. मौर्यवंश का अंतिम राजा कौन हुआ ?
31. दशरथ मोर्य की हत्या किसने की थी ?
32. कलिंग देश में किस तीर्थंकर का समवशरण आया था ?

33. अठारहवें तीर्थं की पारणा कहाँ हुई ?
34. महामेघ वाहन खारबेल का जन्म कब हुआ ?
35. महामेघ वाहन खारबेल ने किस नदी के किनारे महाविजय प्रसाद का निर्माण कराया ?
36. महामेघ वाहन खारबेल ने यूनानी किस नरेश को भारत के बाहर खदेड़ा था ?
37. वीर विक्रमादित्य का दूसरा नाम क्या था ?
38. दद्दिग और माधव ने कौन से राजवंश की स्थापना की ?
39. मयूर पिच्छिका को किसने अपना राज्य चिन्ह बनाया था ?
40. छोटे भाई माधव ने कितने वर्ष राज्य किया ?
41. तृतीय माधव ने किसके साथ विवाह किया ?
42. महाराजा माधव तृतीय का उत्तराधिकारी कौन हुआ ?
43. अवनीत गंग के पुत्र का नाम क्या था ?
44. दुर्विनीत ने किस कथा ग्रंथ का संस्कृत अनुवाद किया ?
45. मुस्कर गंग ने किस धर्म को गंगवाड़ी का राज्य धर्म बनाया था ?
46. शिवमार प्रथम नरेश के जैन गुरु कौन थे ?
47. शिवमार नरेश का राज्यकाल कब से कब तक रहा ?
48. शिवमार प्रथम के पुत्र का नाम क्या था ?
49. शिवमार प्रथम के पोते का नाम क्या था जिसने राजगद्दी संभाली हो ?
50. श्री पुरुष मुत्तरस का काल क्या है ?
51. शिवमार द्वितीय किसका पुत्र था ?
52. गंगवंशीय नरेश शिवमार द्वितीय कितनी बार राज्य च्युत हुआ ?
53. गंगवंशी शिवमार द्वितीय कितने वर्ष राष्ट्र कूटों के बंदी गृह में रहा ?
54. राचमल्ल सत्यवाक्य का राज्यकाल कब से कब तक रहा ?
55. ऐरेय गंग के पुत्र का क्या नाम था ?
56. राचमल्ल सप्तवाक्य द्वितीय ने सर्वनन्दि देव को किस इलाके के बारह ग्राम प्रदान किये थे ?
57. गंगवंश का अंतिम राजा कौन हुआ ?
58. कदम्ब वंश किस धर्म का अनुयायी था ?
59. काकुस्थ वर्मन के भाई का क्या नाम था ?
60. मृगेश वर्मन किसका पुत्र था ?
61. काकुस्थ वर्मन के पुत्र का क्या नाम था ?
62. रवि वर्मन कदम्ब की माँ का नाम क्या था ?
63. रवि वर्मन कदम्ब के पिता का नाम क्या था ?
64. रवि वर्मन कदम्ब का राज्यकाल कब से कब तक था ?
65. रविवर्मन के चाचा का नाम क्या था ?
66. रविवर्मन के कांची के किस नरेश को परास्त किया था ?
67. रविवर्मन के पुत्र का नाम क्या था ?
68. कदम्ब वंश का अंतिम शासक कौन हुआ ?

69. वातापी के चालुक्य सम्राट पुलकेशी के छोटे भाई का नाम क्या था ?
70. चालुक्यों ने आंध्रप्रदेश में कितने वर्ष राज्य किया ?
71. कुब्ज विष्णुवर्धन के राज्यकाल में कौन से जैन आयुर्वेदाचार्य हुये ?
72. कुब्ज विष्णुवर्धन चालुक्य के राज्यकाल में कौन सा आयुर्वेद ग्रंथ रचा गया ?
73. अंगराज नरेश द्वितीय की पत्नी का क्या नाम था ?
74. महाराजा विमलादित्य चालुक्य कब हुआ ?
75. गोविन्द तृतीय जगत्तुंग के कार्यकाल में कौन से जैनाचार्य हुये हैं ?
76. आचार्य जिनसेन के गुरु कौन थे ?
77. अमोघवर्ष प्रथम के धर्मगुरु और राजगुरु कौन थे ?
78. आचार्य जिनसेन ने जयधवला में कितने हजार श्लोक लिखें ?
79. सम्राट अमोघवर्ष प्रथम के पिता का नाम क्या था ?
80. आचार्य जिनसेन ने कोन से पुराण ग्रंथ की रचना की ?
81. आत्मानुशासन ग्रंथ के रचयिता कौन से आचार्य हुये हैं ?
82. सम्राट कृष्ण द्वितीय शुभतुंग के विद्यागुरु कौन थे ?
83. इन्द्र तृतीय के पौत्र का क्या नाम था ?
84. कोलतुंग चोल ने अपने राज्य में किस पदार्थ का आयात बन्द कराया था ?
85. विष्णुवर्धन कौन से वंश का राजा था ?
86. विष्णुवर्धन होयसल की पट्टमहादेवी का क्या नाम था जिसने समाधि ली हो ?
87. राजा शांतिवर्म के पिता का नाम क्या था ?
88. राजा राजेन्द्रचोल के गुरु कौन थे ?
89. राजा भोज देव परमार किसका पुत्र था ?
90. राजाभोज देव के राज्यकाल में न्याय का कौन सा ग्रंथ लिखा गया ?
91. राजाभोज देव परमार के जैन सेनापति का क्या नाम था ?
92. महारानी मृगावती ने किससे दीक्षा ली थी ?
93. महाराज उदायन की पट्टरानी का क्या नाम था ?
94. चामुण्डराय सेनापति ने कौन से भगवान की मूर्ति का निर्माण कराया था ?
95. वह कौन सा सेनापति जो दोनों हाथों से तलवार चलाता था ?
96. वह कौन सा सेनापति था जो युद्ध के बाद सामायिक करता था ?
97. क्रांतिकारी अमर शहीद लाला हुकुमचंद का जन्म कब हुआ ?
98. अमर शहीद साबूलाल जैन का जन्म कहां हुआ ?
99. वह कौन से एलक जी हैं जो अमर शहीद साबूलाल जी के रिश्तेदार थे एवं मुहल्ले में रहते थे ?
100. अमर शहीद उदयचंद जैन का जन्म कहां हुआ ?

इन प्रश्नों के उत्तर आप प्लेन कागज पर लिखकर दिनांक हर माह 29 तारीख तक डाक द्वारा अथवा व्हाट्सअप नम्बर 6232967108 पर भेज सकते है। यह प्रश्न प्रत्येक माह 100-100 रहेंगें जिसका समापन दिसम्बर माह में किया जायेंगा।

जिसमें प्रथम पुरुस्कार 1 लाख रुपये, द्वितीय पुरुस्कार 51000/- रुपये, तृतीय पुरुस्कार 31000/- रुपये तथा सभी को सांत्वना पुरुस्कार दिया जावेगा। अतः आप भी उत्तर भरकर ज्ञानार्जक कर पुण्य लाभ लें।

वर्ग पहेली 265

1	2		■	3	4		■	5
6		■	7			■	8	
■	■	9			■	■	10	
11	12		■	■	13		■	
14		■	15	16		■	17	■
18		■	■	19		20	■	■
	■	21	22	■	23		■	24
25	26	■	27	28	■	29	30	
■	31				■	32		

बाये से दाये

1. फ्रांस में बना एक युद्ध विमान जो भारत ने खरीदा -3
3. वोमेटिंग उल्टी -3
6. मंजिल, पटल -2
7. चमकदार, तेज पदार्थ -3
8. अर्जुन -2
9. श्रावण महीना (वह माह जिसमें रक्षाबंधन आता हो) -3
10. गरीब, भिखारी -2
11. अमर, सुर, स्वर्ग के निवासी -3
13. महावीर का एक नाम, बहादुर साहसी -2
14. पर्याप्त -2
15. लगातार -3
17. कौन संस्कृत में -7
18. दिवस, वासर, वार -2
19. विष्णु का एक अवतार -3
21. ज्योति, मशाल -2
23. यदि, अगर -2
25. रचना, विस्तार, चमत्कार -2
27. शरीर, काया, -2
29. कमी -3
31. दया करूणा -4
32. लिक्विड बहता हुआ द्रव -3

ऊपर से नीचे

1. निशा, रजनी, रात्रि -2
2. असफल -2
3. देश, राष्ट्र, मुल्क -3
4. चित्त अत: करण -2
5. जैनों के ईश भगवान धर्मतीर्थ के कर्ता -4
7. शब्द, ध्वनि, नाद -2
8. किनारा, तट -2
9. सुख -2
11. कार्तिक की एकादशी को होने वाली दिवाली -5
12. वस्त्र, कपड़ा -3
13. राग, द्वेष से रहित भाव -4
16. उस समय, उस काल में -2
20. चेष्टा, (उर्दू) -4
22. शोक, (उर्दू) -3
24. सीधा, कुटिलता रहित -3
28. झुकने का भाव, नमन मुद्रा का भाव -2
30. तालाब -2

वर्ग पहेली 264 का हल

1 स	2 द	ल	3 गा	■	4 दी	5 पा	व	6 ली
7 म	शा	■	8 ज	9 न	प	द	■	ख
य	■	10 श	र	म	■	11 प	12 र	■
13 सा	14 दा	■	■	15 न	16 शा	■	17 ख	18 ग
19 ग	म	20 ला	■	■	व	■	21 वा	ज
र	■	भ	■	■	22 क	23 म	ला	■
■	24 सू	■	25 उ	र	■	26 क	■	27 गौ
28 स	र	दा	र	■	29 श	र	30 ब	त
31 ह	ज	■	32 ग	रि	मा	■	33 क	म

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

बूँद बूँद में नीर भरा है

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-इसे संभालकर रखें दिसम्बर माह में एक साथ चिपकाकर भेजना रहेंगे

कूपन नं-9

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/10/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/11/2021